UNIVERSAL LIBRARY

OU_180492

UNIVERSAL LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

OUP—707—25-4-81—10,000.

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H81·6 G66S

Accession No. P.G. H6392

Author गोपाल

Title शिखर-वंशोत्पत्ति-पीढ़ीवार्तिक

This book should be returned on or before the date last marked below

1928.

बालाबक्ष राजपूत चारण पुस्तक माला—३

कविया गोपाल कृत

शिखर-वंशोत्पत्ति-पीढ़ी-वार्त्तिक।

संपादक

पुरोहित हरिनारायण बी. ए. विद्याभूषण

प्रकाशक

काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा

सं० १९८५

मूल्य ॥)

गणपति कृष्ण गुर्जर द्वारा,
श्री लक्ष्मीनारायण प्रेस, बनारस में मुद्रित।

भूमिका

"शिखरवंशोत्पत्ति-पीढी वार्त्तिक" ग्रंथ सीकर का छंदोबद्ध इतिहास है। इसके रचयिता चारणवंश-भूषण चंडीबालगोत्र के कवियाः गोपाल थे। सीकर* का बड़ा ठिकाणा जयपुर राज्य का एक बहुमूल्य और अति-सम्मानित विभाग शेखावाटी प्रांत के अंतर्गत है। यह ठिकाँणा जयपुर के कछवाहा-क्षत्रियों के शेखावत शाखा में, खेतडी की नांई, बहुत बड़ा माना जाता है, और इसके शासक सरदार सदा से राजभक्ति और वीरता आदि गुणों के लिये विख्यात रहे हैं। यह ग्रंथ संवत् १९२६ विक्रमी में निर्माण हुआ था।

*—'सीकर' का कस्बा जयपुर से ३६ कोस वायुकोण में है, और झुंझणूं से २४ कोस नैऋत में है। मर्दुमशुमारी के अनुसार रियासत जयपुर में यह अव्वल नंबर की आबादी के कस्बों में है। ठिकाणे की आमदनी १० लाख से अधिक है, आबादी पौने दो लाख के करीब है। इस ठिकाणे का इलाका 'सीकरवाटी' वा 'राव की धरती' कहाता है। इसमें फतहपुर, रामगढ़, लछमनगढ़ आदि कस्बे बहुत नामी हैं जहाँ के कायमखानी मुसलमान पहले के नवाब थे, और जिनके सेठ साहूकार भारतवर्ष में अति प्रख्यात मारवाड़ी सेठ हैं। अधिकतर मुल्क रेतीला है, पहाड़ हर्ष, रघुनाथगढ़ आदि हैं। अब 'शेखावाटी लाइन' पर सीकर का स्टेशन है। नगर सुहावना और आदमी मालदार और दीदारू हैं। रावराजा जी के भवन देखने योग्य हैं। जयपुर को सीकर से ४,२००) रु० कर दिया जाता है। इसका प्रांतीय संबंध निज़ामत शेखावाटी से है। ठिकाणे को कुछ अखतियार भी हैं।

ग्रंथ-कर्त्ता सीकर के "उदयपुरा"—अपरनाम "चोखा का बास"—*ग्राम के वासी थे। यह गाँव सीकर से पाँच कोस दक्षिण की तरफ, 'हर्ष' के ऐतिहासिक पहाड़ से एक कोस और 'जँणिमाता' के स्थान से दो कोस है, तथा 'दाँता' का कसबा इससे दक्षिण की ओर, और 'खूड़' का कसबा पश्चिम की तरफ़ है। ये दोनों कसबे भी शेखावतों ही के ठिकाँणें हैं, और यह चारणकुल भी अधिकतर शेखावतों का शुभ-चिंतक है। कविया गोपाल के पिता का नाम 'खुमान' था, और दादा का नाम 'ज्ञान' था। ज्ञान के चार पुत्रों—१ जालूदान, २ खुमान, ३ रामनाथ, ४ शिवनाथ—में से 'खुमान' दूसरा था। "कृष्ण-विलास" (खंडेले के इतिहास) में कवि ने अपनी वंशावली इस प्रकार दी है—

"कविजन कवियो दिव्यकुल चारण चंडोवाल।
अलू भक्त के वंश में कहत नाम गोपाल॥ १॥
अलू १ नंद नरपाल २ भय, नरू नंद मघवान ३।
मेघराज के सुत भये गिरधर ४ नाम सुजान॥ २॥
गिरधर सुत माहू ५ भये, माहू सुत हरिराम ६।
पुत्र भये हरिराम के विजयराम ७ गुण धाम॥ ३॥

---

* उदैपुरा पहिले चोखा का बास कहाता था इसे एक चोखाजाट ने आबाद किया था। वोह विभाग पास ही है और उदैपुरा—खंगेले के राजा उदयसिंह जी के नाम पर है जो बीजराज चारण (पीढ़ी सातवी बंद ३) को राजा उदयसिंह जी खंडेलेवालों ने दिया था 'जो सवाई जयसिंह जी के समय में हुए थे'। ४०० की आबादी, अधिक वैश्य हैं। ग्रंथ में भी—"चारण दोय चोरवर का बासा का बताया। हिंदू महादान खेत खाटू कामि आया"। (बंद १००७)।

विजयराम के पुत्र फिर दौलतराम ८ बखान ।
सुत भये दौलतराम के ताको नाम जु ज्ञान ९ ॥ ४ ॥
पुत्र भये फिर ज्ञान के जालूदान १०।१, खुमान १०।२ ।
रामनाथ १०।३, स्योनाथ १०।४, ये चार बंधु सम जान ॥५॥
हम भे पुत्र खुमान के नाम गुपाल ११ कहाय ।
बरण्यूं ग्रंथ नवीन यह नृप की आज्ञा पाय" ॥ ६ ॥

यह "आलू" जी परम भगवद्भक्त चारण हुए हैं। चारणों में अनेक भक्त हुए हैं, जिनमें १४-१५ भक्त तो परम विख्यात हैं। यथा—

"ईश, अलू, करमाणँद, आणंद, सूरदास पुनि संता ।
माँडण, जीवा, केसव, माधव, नरहरदास अनंता" ॥

(परसराम चारणकृत 'भगतमाला')

इसमें के भक्तवर चारण 'ईश्वरदास जी' की कथा चारणों ही में नहीं मारवाड़, कच्छ और गुजरात में अति प्रसिद्ध है । ईश्वरदास जी महाकवि भी हुए हैं। इनके रचे 'हरिरस', 'देवी देवायण', 'हालांझालाँ का कुंडलिया' आदि दस ग्रंथ और हज़ारों गीत बताते हैं। इस ही प्रकार आलू जी भी महाकवि हुए हैं। इनके रचे नीति और धर्म के गीत और छंद बड़े मारके के हैं। बारहट भक्त शिरोमणि 'नरहरिदास जी' का "अवतार चरित" ग्रंथ चारण-साहित्य का एक अत्युज्वल रत्न है, और साहित्य गुग के नाते भाषा की प्रशस्त रचनाओं में गण्यमान है। इस ही प्रकार अन्य चारण-भक्तों की रचनाएँ और वाणियाँ कही जाती हैं।

उपरोक्त अलू जी (वा आलू जी) से ग्रंथकर्त्ता कविया गोपाल तक ग्यारह पीढ़ियाँ होती हैं। वे यों हैं—(१) अलू भक्त, (२) नरपाल,

वा नरू, (३) मेघराज, (४) गिरधर, (५) माडू, (६) हरिराज, (७) **विजैराज** (वा बीजराज), (८) दौलतराम, (९) ज्ञान, (१०) **खुमान**, (११) कविया **गोपाल** (ग्रंथकर्त्ता)। खुमान के तीन भाई जालूदान, रामनाथ और शिवनाथ थे, जैसा कि ऊपर कहा गया है।

चारणों को **चंडीवाल** भी कहते हैं। "चंडीवाल" कविया चारणों के वंशज उदैपुरया आदि में रहते हैं। ये शेखावतों की दी हुई जीविका खाते हैं। **बीजराज** (वा विजैराज) वोह है जिसको खंडेले के उदयसिंह जी ने यह उदैपुरया गाँव दिया था। फिर यह गाँव सीकर के नीचे आ गया, तब से सीकर के इलाके में हैं।

अपने गाँव का निर्देश कविया गोपाल ने स्वरचित "लावारासा" के अंत में इस प्रकार किया है—

"**दांतोपुर** दक्खिन दिसा सीकर उत्तर कोन।
कूहर पच्छिम जानिये **पूर्व जींण को** भोन ॥१॥*
ताके मध्य उदैपुरो बसत **सुकविको** ग्राम।
उन्नत पर्वत **हर्ष**† को तहँ भैरव को धाम ॥२॥

---

* दाँता, खूड आदि सीकर के इलाके के करीब और खानदान के नजदीकी शेखावतो के ठिकाने हैं। खाटू की लड़ाई में ये लोग शामिल थे, यथा = "दाँते खूड बखतावर अमानीसिंह आया। दोनूं वीर जम की जमाती सी लखाया"। (शिखर वं० देवीसिंह प्रसंग, छंद १८३)।

† हर्ष—'हर्षनाथ' भैरव जिस पहाड़ी के पास है वह भी हर्ष का ही डूँगर कहाती है और सीकर से ३॥ कोस दक्षिण ओर पूर्व को झुकती है। यह मंदिर कोई ९०० वर्ष पुराना है। पहाड़ी की उँचाई समुद्र की सतह से ३ हजार फुट है।

कविजन कवियो दिव्य कुल चारन चंडीबाल।
अलू भक्त के वंश में अह मम नाम गुपाल ॥३॥

कविया गोपाल के रचे ये ग्रंथ जाने गए हैं—(१) शिखरवंशोत्पत्तिपीढी-वार्त्तिक। (२) लावारासा (अथवा "कूरमयश प्रकाश म्लेच्छ विध्वंस कलहकेलिवर्णन)"। (३) कृष्णविलास और बहुत से डिंगल के गीत और पिंगल के छंद कवित्त आदि भी इनके रचे हैं जो कहीं कहीं इनके वंशजों और अन्यत्र ठिकांणों में वा चारणों के यहाँ हैं। पिंगल रचना का नमूना तो इसी ग्रंथ के अंत में है।

ग्रंथकर्त्ता का जन्म संवत् मिती ज्ञात नहीं हो सकी है। परंतु मरण काल, उनके वंशजों से इस प्रकार, ज्ञात हुआ है कि कविया गोपाल भाद्रपद 'वदि चतुर्थी' संवत् १९४२ में १५ दिन बीमार रहकर अपने गाँव उदैपुरया में '७० वर्ष के होकर' परलोकवासी हुए थे। * इससे जन्म संवत् १८७२ अनुमान होता है।

पहाड़ी पर बहुत सी पत्थर की पुरानी मूर्त्तियाँ मिलती हैं। पूर्व काल में गौड़ों आदि का इधर राज्य रहा है। कोई कोई यहाँ किला होना भी कहते हैं।

* स्वर्गवासी कविया के संबंधी और संतति—कविया गोपाल की माता 'जांगावत' खांप के चारणों की बेटी थी। कविया की स्त्री 'सानू' गोत के चारणों की बेटी थी। और विशेष बात जानने योग्य यह है कि कविया के भोजे पालखत बारैठ बालावक्ष जी इणूतिया वाले हैं जो इस "बालाबक्ष-राजपूत-चारण-पुस्तक-माला" के संस्थापक हैं। कविया गोपाल का एक पुत्र रामधन तो किशनपुरा इलाका जोधपुर में पालावतों के ब्याहा था। दूसरा पुत्र लालजी नूनड़ इलाका जोधपुर के चैलजी रतनू चारण की पुत्री को ब्याहा था। कविया को एक पुत्री छत्तूबाई भैरजी खिड़िया गोत के चारण, गाँव खड़वाड़ा ३० जोधपुर के वासी, से ब्याही थी और दूसरी लड़की पारू

शिखरवंशोत्पत्ति के अंत में (अर्थात् प्रशंसा के आलंकारिक भाष छंदों के अंत में) इस ग्रंथ का रचना काल विक्रमी संवत् १९२६, मिर्त चैत बदी ७ रविवार लिखा है, यथा—

"उन्नोसै छब्बीस कै कृष्ण पष्य मधुमास।
भानवार की सप्तमी प्राची भानप्रकास ॥ १ ॥ ४६ ॥
सिखरोत्पत्ति पीढी सबै दानवीर जुत जाँनि।
कविचारण गोपाल कृत पूरन ग्रंथ प्रमाँनि" ॥ २ ॥ ४७ ॥

और इस ग्रंथ की रचना का कारण ग्रंथ समाप्ति में यह लिखा है—

"पालट साब भादर स्हैर सीकर फेरि आया।
पीढ्यां का प्रवांडा ग्रंथ भाषा का मंगाया ॥ १ ॥
बोल्यों साब भादर येक फेरख्यो भी बणावो।
पीढ्यां का प्रवांडां बारताई सी सुणावो ॥ २ ॥
चारण जाति कविया कूम मोपा ने कहाई।
बेगा ग्रंथ पीढनां का बणावो बारताई ॥ ३ ॥
बादू घाटिआंका दोय मोरासा मिलाया।
छंदो भंग छंदां का प्रबंधां रीति गाया ॥ ४ ॥
सेषां बंस पीढ्यां का प्रवाडां को बणायो।
माधोसिंह जी ने मुकनसिंह ने सुणायो" ॥५॥

यह ग्रंथ उक्त संवत् में पूर्ण हुआ जिसको आज (सं० १९८५ वि॰

बाई भोपजी खिडिया चारण ढाणी कृपाराम बाली इलाका सीकरवाले के साथ ब्याही थी। अब गोपाल जी के वंशजों में उदैयसा में उनका पौत्र दुर्गादान है और दुर्गादान के दो पुत्र किशोरदान और शंभुदान हैं।

में) ६० वर्ष हो गए। जयपुर के सुप्रसिद्ध लोकवत्सल महाराजाधिराज श्रीसवाई रामसिंह जी ने सीकर के रावराजा श्रीमाधवसिंह जी बहादुर की मातमी की रस्म संवत् १९२६ में की थी। उसके हो चुकने के उपरांत रावराजा जी सीकर को आ गए। फिर करनल पाउलट साहिब दौरा करते हुए सीकर भी आये तब सीकर के इतिहास की जानकारी के लिये कई किताबें सुनीं, तब ही सरल भाषा गद्य में एक पुस्तक रचने की आज्ञा दी। इसकी रचना के लिये यह कविया गोपाल नियत हुए। इन्होंने अनेक अन्य ग्रंथों, गीतों, रूपकों, आख्यायिकाओं, ख्यातों वा सीकर के बकाया आदि से इस ग्रंथ की शीघ्रतापूर्वक रचना की और उस ही संवत् १९२६ में इसको समाप्त भी करके रा० रा० माधोसिंह जी और उनके मुसाहिब खवासीणे मुकंदसिंह जी को सुनाया। फिर इसकी एक नकल कराके पाउलट साहिब के पास भेजी गई।

कविया गोपालदान २४-२५ साल से सीकर में रहने लगे थे और सीकर में राजकीय पुरुषों से अपनी काव्य शक्ति और इतिहासज्ञता का खासा परिचय दे चुके थे। यही कारण है कि इस अनुपम ग्रंथ की रचना के लिये यही चुने गए थे। पाउलट साहिब का अभिप्राय सरल गद्य में ग्रंथ बनजाने का था। तो यह ग्रंथ वार्त्तिक ही छंद में रचा गया है और भाषा अत्यंत सरल है। छंद के संबंध में स्वयम् ग्रंथकर्त्ता ने लिखा है कि—

"बादूघाटि आंकां दोय मोरा सा मिलाया।
छंदोभंग छंदां का प्रबंधा रीति गाया॥"

अर्थात् इसकी रचना यथार्थ छंदों के नियम से नहीं हुई है, अपितु न्यूनाधिक अक्षरों से तुकबंदी करके 'बातराई' (वार्तिक वा वार्ता) में

बनाई गई है। छंद श्रवण होते समय—यह वार्त्तिक अपभ्रंश छंद—यथार्थ ही छंद प्रतीत होता है। परंतु सर्वत्र विशेष छंद के लक्षण से घटित है ऐसा प्रमाणित नहीं होता है। "बादू घाटि" से तात्पर्य न्यूनाधिक वर्ण वा मात्रा है। और "मोरासा" से मोहरा, मेल वा तुक सदृश शब्द से अभिप्राय है। और "छंदोभंग" से मतलब डिंगल वा पिंगल के यथार्थ नामांकित किसी छंद के अनुसार नियम का न रहना वा छंद की त्रुटि है। "छंदां का प्रबंधा रीति" से छंद शुद्ध न होने पर भी छंदों का सा ढंग, लय वा ध्वनि प्रतीति करनेवाली रचना में ग्रंथ बनाया गया। "गाया" अर्थात् चारणों के काव्यों के ढंग पर गीत रूप में वर्णित हुआ। यह अभिप्राय है।

कवि मंछ कृत "रघुनाथ-रूपक" में "वयणसगाई" के प्रसंग में "मोहरामेल" को भी तीन प्रकार का कहा है, जैसे "वयणसगाई" और "अखरोट" को तीन प्रकार का बताया है। यथा—

"वर्ण-मित्र दाखैं त्रिबिध, त्रिय अखरोट जिलंत।
भणैं मंछ तिणभात सूं मोहरा त्रिविध मिलंत॥"

ये तीन प्रकार के "मोहरा" (अनुप्रास, तुक और यमक) ये हैं—१ अधिक मोहरा, २ सम मोहरा और ३ न्यून मोहरा। परंतु इस ग्रंथ में तुकांत वा न्यून मोहरा से ही प्रयोजन है। न तो इसमें "वयण-सगाई" का निर्वाह हो सका है, न "अखरोट" ही आता रहा है, केवल दो पदों में तुक वा न्यून मोहरा, मिला देना पड़ा है। प्रत्येक छंद (वा विकृत छंद) में दो पाद ही दिखाई दे रहे हैं जिनके तुकांत सर्वत्र पाए जाते हैं। इस वार्त्ता छंद वा गीत का लक्षण तो निकल सका है, परंतु नाम इसका खोज

ने पर भी प्राप्त नहीं हुआ। "रघुनाथ रूपक" के ७२ डिंगल छंदों में से, वा "रूपदीप पिंगल" की ५२ चालों में से, कोई भी छंद इससे टक्कर नहीं खाता है। "छंदः प्रभाकरादि", "प्राकृत पिंगल सूत्र" और "रण-पिंगल" तक में कोई छंद मिलता हुआ नहीं मिल सका है। संभव है कि कोई नाम अवश्य मिल जाय। फिर आगे (उक्त 'रघुनाथ रूपक' में) "दवावैत" और उसके दो भेद—१ पदबंध (अथवा शुद्धबंध) और गदबंध (गद्य बंध)—कहे हैं, यथा—

"तवै मंछ कवि ह्वै तिके दवावैत बिध होय।
एक सुद्ध बंध होत है एक गद्द बंध होय॥"

इसकी टीका के पादटिप्पण में (वृंद कवि के प्रपौत्र) कवि जियालालजी ने लिखा है—"दवावैत दो प्रकार की। एक सुधबंध अर्थात् पद बंध जिसमें अनुप्रास मिलावै। दुसरी गद्द बंध (गद्य बंध) इसमें अनुप्रास नहीं मिलावे। इन दोनों में मात्रा वर्ण की गिनती नहीं। केवल अक्षर मीठे होवे पद छोटे बड़े होवे।" इन दोनों भेदों के जो उदाहरण उक्त ग्रंथ में दिए हैं उनसे इस शिखरवंशोत्पत्ति के वार्त्ता छंद वा गीत का कोई मेल नहीं, कोई चाहे तो बलात् दवावैत के अंतर्गत इसे ला सकता है। आगे चलकर "वचनिका" के दो भेद—१ पद बंध और २ गद बंध—दिए हैं। इनसे भी यथार्थ मेल तो नहीं हो सकता है, परंतु कुछ दूर का मेल हो सकता है।

अब मात्रा और वर्ण के हिसाब से इस ग्रंथ के वार्त्ता छंद का पता लगाने की चेष्टा करने से यह फल होता है कि प्रथम इसका एक स्थायी रूप प्रमाणित कर लेना पड़ता है (जैसे रामायन मानस में रूप चौपाई

वा पादाकुलक छंद अन्य भेदों के साथ)। यथा—

"रारा रार रारा रार, रारा रार रारा।" अथवा

"राधाकृष्ण राधाकृष्ण, राधाकृष्ण राधा।" अथवा

"सीताराम सीताराम, सीताराम सीता।" तथा ग्रंथ में से

"सारा गोड़बंसी छो बिचारो बात देखो।

म्हारे पूठि पाछै भी तपै छै राव सेखो।" (शेखा प्रसंग-छंद ७६)।

अथवा

"बादू घाटि आँकाँ दोय मोरा सा मिलाया।

छंदो भंग छंदां का प्रबंधाँ रीति गाया।" (छंद १२१२)

इसकी मात्रा गिनने से २५ होती हैं। इसे द्विपदा छंद मानें तो समवृत्त है। और चतुष्पदी छंद मानें तो अर्द्धसम वृत्त है, तब १४ + ११ की यति से इसके पद बनते हैं। और वर्ण गणना से द्विपदा छंद मानने से—(म, य, र, त, ऽऽ) रूप होता है और समवृत्त, और वर्ण गणना से चतुष्पदा छंद मानें तो—(म, य, ग) + (य, र, ग) अथवा (म, य, ग, ल) + (म, य), वा इनका मिश्रण, ऐसा रूप यति से होता है और अर्द्ध समवृत्त। और १४ वर्ण के प्रस्तार में २१८५ वां छंद मिलता है—परंतु नाम का पता नहीं मिलता कि इसको क्या कहना चाहिए।

परंतु इस विछेद और लक्षण करण के होने पर भी इस स्थायी छंद को नाम नहीं प्राप्त होता और न नाम का कहीं पता ही लगता है। कवि ने भी त्वरा रहने और छंद के नाम का पता न लग सकने से ही तथा अन्यत्र छंदों में न्यूनाधिक मात्रा होने से इसको छंदोभंग छंद वा वार्त्ता नाम देकर पीछा छुड़ाया, ऐसा प्रतीत होता है। उपरोक्त स्थायी रूप के अनेका-

नेक छंद आने पर भी स्थान स्थान में विकृत होकर यह छंद अन्य रूप का बनता है, जिसके लिये अन्य नामों की आवश्यकता होनी चाहिए। यथा–

"आगे अजमेरि बछराज गौड़ होता।"

= २१ मात्रा। १४ वर्ण। (छंद ६७)

"अक्कल का देईदास बणिया उदार।" = २१ मात्रा। १४ वर्ण।

(छंद १६३)

"सारी बात जोगा रामसलाका कामदार"। = २४ मात्रा। १५ वर्ण।

(छंद १६३)

"कागद गोपाल कां अमरसर धेज दीनूं। = २३ मात्रा। १६ वर्ण।

(छंद ३२९)

"ऊपर गोपालवंस को राव कीनूं"। = २३ मात्रा १४ वर्ण।

(छंद ३२९)

"पोता लाडपांन जी को वणवारी गांम"। = २३ मात्रा। १४ वर्ण।

(छंद ४९८)

"जोरा वरसिंघ जी का चौकड़ी ठिकाणें"। = २३ मात्रा। १४ वर्ण।

(छंद ६७१)

"एता व्है दिल्ली की फ़ोज ने बिरोली"। = २२ मात्रा। १२ वर्ण।

(छंद १००९)

मुरतज्जाखाँन के जगाई जीव होली"। = २३ मात्रा। १४ वर्ण।

(छंद १००९)

"मुकनूँ श्रीलछा के तो भलाँ ही पूत जायो" = २४ मात्रा। १५ वर्ण।

(छंद ११७५)।

इस प्रकार कमी बेशी पाई जाती है। कहीं मात्रा के हिसाब से कहीं वर्णों के हिसाब से, जिससे छंद स्थिर नहीं मिलता है। इस कारण से भी इस चाल को केवल "छंदोभंग छंद" कहकर ही काम निकाला है, ऐसा हमको निश्चय होता है। वास्तव में जो स्थायी रूप ऊपर दिया है और विच्छेद से उसका लक्षण भी प्राप्त है वह प्रधान रहकर अन्य विकृत छंद, गौण, वा अनुगत छंद हो सकते हैं। इस प्रकार छंदोभंग की कुछ भी बात नहीं रहती है और ग्रंथ यथार्थ छंदोवद्ध है। हाँ 'डिंगल' के क़ायदे (वैणसगाई, मोहरा, अखरोट आदि) का प्रचुर अभाव है। तो इसके लिये यह कहा जायगा कि भाषा डिंगल-प्रधान नहीं है तो उन नियमों की प्रधानता भी आपेक्षित नहीं।

यह छंद की बात हुई। इस प्रकार के "झड़" वा "सराड़ा" छंदों में ख्यातें, लड़ाइयां, वृत्तांत आदि को रावभाट चारण वड़वे जागे आदि गाया करते हैं। आलाऊदल इस ही संप्रदाय का है। हम्मीरासा, और कई एक रासे इस जाति के समझे जावें। खैर, कुछ हो। कविया गोपाल ने इस चालमें सीकर का इतिहास राव राजा माधवसिंह जी के समय में, संवत् १९२६ तक का संक्षिप्त हाल, जो उसको ज्ञात हो सका, लिखा है। इतिहास की दृष्टि से यह ग्रंथ इस भाषा में बड़े काम का है। जसरापुर इ० खेतड़ी (राज्य जयपुर) के पंडित झाबरमलजी ने "सीकर का इतिहास" अधिकतर इस ही ग्रंथ के आधार पर लिखा है। कविया गोपाल ने किन किन ग्रंथोंसे सार खींचा था इसका पता लगाना एक पृथक् खोज का कार्य्य है। इसमें संदेह नहीं कि सुविज्ञ पाउलट साहब ने जब इतिहास चाहा तो उनके सामने पुस्तकें और इतिहास के जाननेवाले पुरुष पेश

किए होंगे। चारणों की डिंगल भाषा की रचनाएँ सुबोध न होंगी और उसकी ऐंच पेंच भरी अत्युक्तियाँ अनावश्यक समझी गई होंगी। तब ही उन्होंने सरल गद्य भाषा में पृथक ग्रंथ रचना के लिये आज्ञा दी। ग्रंथ-कर्त्ता ने कई जगह अन्य कवियों के गीत और दोहे आदि उद्धृत किए हैं इससे मूल स्रोतों का कुछ पता चल सकता है। यथा—

(१) छंद ४६० के आगे। (२) छंद ५४६ के आगे। (३) छंद ७०१ के आगे। (४) छंद ७५५ के आगे। (५) छंद ७९७ के आगे। (६) छंद ८९८ के आगे। (७) छंद ९८६ के आगे। (८) छंद १०६१ के आगे। (९) छंद ११०३ के आगे। (१०) छंद ११२२ के आगे। (११) छंद ११२८ के आगे इत्यादि।

ऐसे स्थल वे प्रतीत होते हैं जहाँ अन्य चारण कवियों के गीत, रूपक आदि से छंद लिए हैं तथा उनही से इतिहास की आख्यायिकाएँ भी। सीकर के ठिकाणें में इसका संग्रह अवश्य है और वहाँ के बाकीनवीसों के पास भी इतिहास है तथा वहाँ के बड़े आदमियों के यहाँ भी अंश विद्यमान हैं। राजाज्ञा से सब कुछ प्राप्त हो सकता है। समझ लिया जाय कि कविया गोपाल ने भी बटोर बटोर कर बड़े परिश्रम से यह ग्रंथ बनाया है।

ग्रंथ में कई जगह निराधार बातें भी हैं। यथा महाराज चंद्रसेण जी का विचलित होना। प्रतिद्वंद्वी का देश बहिष्कार ही इसका स्वतः खंडन है। कहीं कहीं वीरता की अतिशयोक्तियाँ भी हैं। परंतु ये बातें चारणों में स्वाभाविक हैं और हमको प्रथम ही सोच समझ लेना चाहिए कि कवि सीकर का इतिहास सीकर की सामग्री से सीकर में लिखता है। एक युद्ध और विजय ही क्या, प्रायः काम नीति के सर्वांगों के प्रयोग—साम, दाम दंड, भेद आदि—से हुआ करते हैं। अकेली वीरता कितना काम कर

सकती है ? चतुराई, दक्षता और अवसर का भाग शक्ति में मिलने से बड़े बड़े काम सहज में हो जाते हैं। सब ही इतिहास इस सिद्धांत को प्रकाशित करते हैं । इसका योग इस इतिहास में भी लगाए बिना स्पष्टीकरण कठिन होगा।

सर्वतोभावेन यह "शिखर-वंशोत्पत्ति-पीढी वार्तिक" ग्रंथ रजवाड़ी भाषा (ढुंढाहडी और शेखावाटी भाषा मिश्रित) का एक सुंदर सुबोध मूल्यवान ऐतिहासिक प्रबंध है। इस प्रकार के ग्रंथों के प्रकाशन से राजपूतों के इतिहास-संग्रह में तथा हिंदी साहित्य-भांडार की पूर्त्ति में बड़ी सहायता मिलती है। जब कभी कविया गोपाल के अन्य ग्रंथ—"लावारासा", "कृष्ण विलास" आदि—प्रकाशन में आवेंगे तब उक्त कवि की कृतियों का अधिक विकाश होगा और राजपूतों की वीरता, शक्ति और उनके साहस और युद्ध-कौशल का ज्ञान-विस्तार होगा। इस माला में इस प्रकार के ऐतिहासिक ग्रंथों के प्रकाशन से 'बार्डिक लिटरेचर' (Bardic Literature) के प्रस्तार के साथ ही इसकी कीर्त्ति का विस्तार भी होगा।

इस भूमिका की सामग्री-संग्रह में बारहट बालावक्ष जी हणोंतिया वालों (इस माला के आदि संस्थापक), अयाचक कविराजा श्री मुरारीदानजी जयपुर वालों, कवि के वंशजों, पं० दुर्गासहायजी बी० ए० एल० एल० बी० सबजज शेखावाटी और ठिकाणे सीकर, और लाला श्रीनारायण जी आदि तथा चौबे सूर्य नारायणजी 'दिवाकर' कवि एवम् कवि के ग्रंथों से सहायता मिली तदर्थ धन्यवाद है।

जयपुर।
भाद्रपद शु० १५
सं० १९८५ वि०

पु० हरिनारायण।

भूमिका का परिशिष्ट भाग ।

भूमिका लिखे जाने के अनन्तर हमको कवि के वंशजों से पं० दुर्गासहायजी बी० ए०, एल० एल० बी० सब-जज शेखाटी के द्वारा और ठा० बाघ सिंह जी द्वारा तथा बारहट बालाबक्ष जी हणूँतियावालों और अयाचक कविया मुरारीदानजी से कई एक विशेष बातें प्राप्त हुई । उनमें कुछेक तो भूमिका में यथास्थान लगा दी गई हैं, शेष को यहाँ लिखते हैं—

(१) कविया गोपाल का जन्म-काल तो ठीक मिला नहीं, परंतु वे ७० वर्षकी उमर में मरे थे अतः १६७२ का संवत् उनका जन्म का संवत् अनुमान से आता है, क्योंकि अवसान उनका संवत् १९४२ विक्रमी, मिती भादो बदी १४ का उनके वंशजों से जाना गया है ।

(२) उहैपुरना और चोखा का वास भिन्न भिन्न नहीं हैं, एक ही गाँव के नाम हैं । कवि के मोतीदान वंशज से जाना गया कि यहाँ एक चोखा जाट बड़ा दातार था जिसने गरीबों को रोटीराबड़ी दी थी और वह मुखिया और धनाढ्य था, इससे इसे 'चोखा का वास' भी कहने लग गये थे ।

(३) 'चंडीवाल' कोई पृथक् गोत नहीं है । यह शब्द चंडीवाल = चंडी + बाळ है, जिसका अर्थ **चंडी** (**देवी**, करणी चारणों की इष्ट कुल-देवी) का **बाल पुत्र** होता है । चारण लोग अपने आपको करणी के पुत्र कहते हैं, सोही **चंडीवाल** शब्द से प्रगट होता है ।

(४) "पूरब जिनको भोन" यह शुद्ध पाठ "पूरब जींण को भोन"

है (पूर्व की तरफ जीण माता का मंदिर है) और "बसत सुकवियो ग्राम" का शुद्ध पाठ "बसत सुकवि को ग्राम" है (जो ऊपर ठीक कर दिया गया है)।

(५) कवि के ग्रन्थों में "कृष्णविलास" है, सो खंडेले के राजा किसन सिंह जी (कृष्णसिंह जी) के वास्ते, उनके प्रधान पुरोहित श्री बल्लभ जी के आदेश से बनाया था। 'केसरीसिंहरासा' (खंडेले का अन्य ग्रन्थ) किसी अन्य कवि ने बनाया है। यह बात बारहट बालाबक्ष जी हणूँतिया वालों ने कही।

(६) कविया गोपाल के विद्या-गुरु उनके काका (चचा) कवि रामनाथजी थे। अतिरिक्त क० गोपाल ने तिजारे (इ० अलवर) में रह कर वहाँ प्रसिद्ध विद्या-प्रेमी रईस बलवंत सिंह जी से काव्य पढ़ा था। बलवंत सिंह जी अलवर के राव राजा बख़तावर सिंह जी की ख़वास (पासवान) 'मूँसी' के बेटे थे।

(७) कविया गोपाल की माता ग्राम 'चारण वास' के जवानजी जागावत की बेटी थी। चारणवास कसबा सींगोद (इ० खंडेला) के पास है। गोपाल जी की बहिन 'चाँद बाई' थी जो बारहट बालाबक्ष जी पालावत हणूंतिया वालों की माता थी। चाँद बाई के एक छोटा पुत्र और भी हुआ था परंतु बालक दो वर्ष का होकर ही मर गया था। कविया गोपाल के एक भाई गिरधारी था।

(८) 'शिखर-बंशोत्पत्ति' लिखने में चारण 'मुकुंदजी' और चारण कवि 'नंदजी' सांडूगोतवाले से हालात की सहायता भी मिली थी। ये दोनों बहुत इतिहासज्ञ थे।

(९) बारहट बालाबक्ष जी (इस ग्रंथमाला के संस्थापक) कविया गोपाल के ख़ास भाणजे होते हैं। बालाबक्ष जी अपने ननिहाल भी रहते थे, अपने मामूं गोपालजी से खूब प्रेम रखते थे। परंतु विद्या इन्होंने रामनाथजी के पुत्र देवीदानजी से सीखी थी और उदैपुरना के दादूपंथी साधु खेमदास से तथा शिवदत्त पंडित से भी।

(१०) कविया गोपाल की संतति का वंश वृक्ष यों हैं—

वंशक्रम कविया गोपालजी का (जो सीकर के ग्राम उदैपुरना अपर नाम चोखा का बास में रहते थे)।—

कविया गोपाल।

- (बड़ी स्त्री से)
  - तिजारदान
    - वीरदान
      - गीगदान (मौजूद २२ वर्ष का)
- (दूसरी स्त्री से)
  - रामधन
    - सुजानदान (नाओलाद गया)
  - लालजी
    - भारजी
      - किशोरदा (मौजूद)
      - शम्भूदान (मौजूद)
    - दुर्गादान (मौजूद)

(११) कविया गोपाल जी पहली स्त्री 'रामपुरा' ग्राम की थी। उसके शांत हो जाने पर दूसरी शादी ग्राम रसाल (इ० कुचामण, जोधपुर) सांढू-गीत के चारणों के यहाँ हुई थी। इनकी संतानें वंशक्रम वृक्ष से जानें।

(१२) कविया के वंशजों—दुर्गादान और किशोरदान ने ये बहुत से हालात लिखाये हैं। उनके यहाँ पुस्तकें भी हैं। नवलगढ़ मुकुंदगढ़ के ठाकुर साहिब श्री बाघ सिंह जी द्वारा भी कई एक हालात ज्ञात हुए हैं। तदर्थ धन्यवाद।

पुरोहित हरिनारायण।

सूचीपत्र।

(१) बाला प्रसंग	... ...	पृ०	१
(२) मोकल प्रसंग	... ...	"	२
(३) शेखो प्रसंग	... ...	"	४
(४) रायमल प्रसंग	... ...	"	१२
(५) रावसूजो प्रसंग	... ...	"	१७
(६) रायसल प्रसंग	... ...	"	१७
(७) त्रिमंल "	... ...	"	२६
(८) पूरणमल गंगाराम प्रसंग	...	"	२८
(९) स्याम राम जसवंत सिंह "	...	"	३२
(१०) दौलत सिंह जगत सिंह "	...	"	४१
(११) भोपत सिंह भादर सिंह "	...	"	४६
(१२) सेव सिंह "	...	"	४८
(क) सादूल सिंह झूंगझूं प्राप्ति	...	"	५४
(ख) सेवसिंह फतेपुर राजप्राप्ति	...	"	६५
(ग) सेवसिंह दिल्ली कुरबपट्टा प्राप्ति	...	"	७२
(घ) बखत सिंह मल्लार जुद्ध	...	"	७२
(१३) चाँद सिंह प्रसंग	... ...	"	७८
(१४) देवी सिंह "	... ...	"	८७
(१५) लिछमण सिंह "	... ...	"	१००
(१६) भैरू सिंह "	... ...	"	१०९
(१७) माधो सिंह "	... ...	"	११३
(१८) माधो सिंह जी मकुंद सिंह जी का अलंकारादि कवित्त वर्णन	... ...	"	११७

काविया गोपालकृत

शिषर-वंशोत्पत्ति

पीढी वार्त्तिक

दोहा

(१) पीढ़ी

श्रीगनेश गिरिजा गिरा, गुरू गिरीश मनाय।
हंस वंस कुल कच्छु गुन, बरनूं ग्रंथ बनाय॥ १॥
सुख संपत्ति करनी सदा, करनी सदा सहाय।
करनी रचना ग्रंथ की, करनी देव मनाय॥ २॥

वार्त्ता छंद

उदैकरण राजा आँबैर पाटि बैठा।
उदैकरण राजा कै बेटा तीन सैठा॥ १॥
बाला १ वरसिंघ २ वरसिंघ ३ नाँव पाया।
तीनांका तीन पाट थांन जो बताया॥ २॥
अंबानैर जेठो नरसिंघ राजगादी।
मोजाबाद छोटा वरसिंघ ने बतादी॥ ३॥
बालैराव बरवाडै थांन राज पाया।
पीडी दोय पाछैं अमरसर का राज आया॥ ४॥

घोडी राव बाला कै सिरा की षानि ल्याती ।
घोडो जो दिषाता सो बछेरो रंग ल्याती ॥ ५ ॥
राजा अंबपुर कै रावबाला नैं कहाया ।
थांकै मामला सौं फेरि कोडी का नदाया ॥ ६ ॥
घोड्यां कै बछेरी ह्वै जकी तो राष लेणा ।
बाकी का बछेरा सो तबेलै घाल देणां ॥ ७ ॥
बालारावजी कै तीन बेटां नाँव पाया ।
बालैराव पोता षरथ १ षीवाँ २ का कहाया ॥ ८ ॥
बालारावजी को पाट मोकलराव पायो ।
षीवां षरथ कांनैं गांव एकै को बतायो ॥ ९ ॥

इति श्री कविया गोपाल कृत पीढी वार्तिक
वाला समाप्तो ।

(२) मोकल यथा ।

मोकल रावजी कै सोष घोडों की सवाई ।
कोसां दोय ऊपरि कारवानां दोय आई ॥१०॥
एकां एक घोडो फेरवा कै नांय आया ।
दो दो च्यारि घोडा कारवांना का फिराया ॥११॥
मन मैं यौं बिचारी मोलि कुंण का षांच लेसी ।
खानाजाद थारा तो नो बछेरा भी न रैसी ॥१२॥
मोकलसौं उदासी धारि पाछो ही बदलिगो ।
मोकल नैं भुरानी स्याह जंगल बीचि मिलिगो ॥१३॥

दोहा।

मोकल नैं जंगल मंहो, फिरतो मिल्यो फकीर।
स्याम ताज कफनी असित, सुवरण जिसौ शरीर ॥३॥

वार्ता छुन्द

स्याम ताज कफनो कमंडल मैं नीर।
डाढी सुपेत सेष सुवरण शरीर ॥१४॥
मोकल राव आतो देषि माथा कौं नवायो।
सांई स्यां भुरांनो सेष नामी पंथ पायो ॥१५॥
जंगल में चरैछी सो अव्याई झोटी आई।
मोकल का कनांसू सेष चीपी में दुहाई ॥१६॥
बोल्यो दूध पीकैं सेष नीकी भांति रैणां।
तेरे पुत्र होगा राव सेषा नांव कैणां ॥१७॥
बक्कर का हलालो षांण सूकर कोन षांणां।
नीलाही नीसांणां राषि फक्कर कौं जिमाणां ॥१८॥
मोकल रावजी नैं कैरि सांई तो विलाया।
मोकल रावजी कै राव सेषो पुत्र जाया ॥१९॥

दोहा

अरक बार दसमी विजय, क्वार सुकल सिधि काम।
जिण दिन सेषो जनमियो, बरवाडे बरियाम ॥४॥

इति श्री कविया गोपाल कृत पीडी वार्तिक।
मोकल समाप्तो।

(३) सेषो यथा ।

सेषो बरवारा[1] मैं हुवो कै भाग जाग्यो ।
केई लाष रोकडो को षजानूं हाथि लाग्यो ॥२०॥
धरती बीचि कोई को धर धस्योडो माल पायो ।
करता जो विसंभर राम सेषाँ नैं बतायो ॥२१॥
घोडा आसवारां राषबाकी शोष जादा ।
तोपांकी तयारी सोर सीसोले नवादा ॥२२॥
वारा एकदांई पंथ आया छा नबीना ।
वाइं ही पठाणां राव सेषो राख लीनां ॥१३॥
जां दिनां मैं चंद्रसेणि राजा आमैर ।
मोजाबादि बरवाडा ऊपरि बहुत सेर ॥२४॥
कागद राव सेषां पै जरूरी मांड दीनूं ।
घोडाका मँगावा को तागदो बहोत कीनूं ॥२५॥
कागद राव सेषै अंबपुर नै मांड दीनां ।
घोडा फेरि देणां नाकबूली धार लीनां ॥२६॥
दीनां आज ताँई दाम जांका तो दिरावो ।
घोड़ा चायजे तो कारदानां मांलिरावो ॥२७॥
मोजावादि बरबाडो ठिकाणां दोय दीनां ।
चोदासै चमार्ली गांव थेही दांबलीना ॥२८॥
आपां तीन सारीषा ठिकाणां फांट लेस्यां ।
तीनूं घालिडोरी तीनि पांत्यां बांट लेस्यां ॥२९॥

---

१ "बरसबारा मे" पाठांतर ।

एता आंक सेषै चंद्र सेणी नैं लिषाया ।
राजा चंद्रसेणी कोप दूणांसा दिषाया ॥३०॥
फोजांकी तयारी साथि सेषा सीस आयो ।
सामूं राव सेषो चंद्रसेणो कै चलायो ॥३१॥
मोजाबादि कांनीसूं नरू का फोज ल्याया ।
सो भी राव सेषा सांमलाती फेरि आया ॥३२॥
दोनूं ओड तोपां की लडाई होंण लागी ।
दोनूं ओड तोपां मैं सतेजो सोर जागी ॥३३॥
सेषो चंद्र सेणी भूप दोनूं जंग जूटा ।
सेषाराव आगें चंद्रसेणी भागि छूटा ॥३४॥
फेरो दोय वारी भूप दोन्यां की लडाई ।
तीनूं वारही में राव सेषो जैत पाई ॥३५॥
सोलासै सत्यासी आदम्यां का षेत पडिगा ।
राजा चंद्रसेणी अंबपुर मैं जारि वडिगा ॥३६॥
पांती चंद्रसेणी भूपदेणी धार लीनी ।
पांती वार तीनां की लिषाबटि मांडदीनी ॥३७॥
पांती एक राजा चंद्रसेणी कै रहाई ।
मोजाबादि दूजोडी नरूकां कै लगाई ॥३८॥
पांती तीसरी नैं रावसेषो आप लीनी ।
वांडो जो नदी को नाम जैं की सीम कीनी ॥३९॥
वांडी तीर उत्तर की दिसामें राज आयो ।
सारो अमरसर को देस सेषा कै रहायो ॥४०॥

बांटा तीसरा को राव सेषै राज पायो ।
गाद्दी पैं बरोबरी राव सेषा नैं बैठायो ॥४१॥
पांती वार लीनी भोमि छोड़्या बंट दाया ।
बाकी देस दाब्या राज सेषैयों वधाया ॥४२॥
असैं रावसेषै अमरसर का राज पाया ।
बारा कोटड़्यां में यों पठाणां नै बसाया ॥४३॥
दोनूं ओड भावि जोगि कोई कामि आवै ।
सेषां का पठाणां वैर कोई भी न पावै ॥४४॥
दोनूं ओड सेषैया लिषावट्टि मांडि दीनी ।
हींगूणां निवाणां डूंगर्‌यां को भोमिलीनी ॥४५॥
तीस हजार साथि घोडा रजपूत ।
बीस हजार फौज पयादी मजबूत ॥४६॥
तीय हजार सोर सीसा का ऊँट ।
जंगी बाईस तोप बैलों की जूट ॥४७॥
एता कमाम लै अगोणी भूमि आया ।
जाटूकी भिहाणी दाबलेणीयों कहाया ॥४८॥
सारा जाट वांभी बात सारी जांण पाई ।
फौजाराव सेषा की आगोणी भूमि आई ॥४९॥
दादरी विहाणी चरषो हांसो हंसार ।
सावक हीसांमलाति प्यादा असवार ॥५०॥
सारा सांमलाति ह्वै लडाई काज आया ।
सेषै जाटवां कै सीस घोडां नै उठाया ॥५१॥

सारां सूं आगाउ थां पाठाणां जंग जूटा।
जाटू लोग सारा जूटताहीं भागि छूटा ॥ ५२ ॥
सारा दोडि जाटू सैर किल्ला सांकडाया।
सारा सैर किल्लांका किंवाडानैं जडायो ॥ ५३ ॥
दादरी में जाटू का नोपसिंघ नाम।
सेषैराव जैंको सैर घेर्‌यो तमाम ॥ ५४ ॥
नोपासैर किल्ला छोडि बारैंकाम आया।
किल्लो सैर दोनूं राव सेषा कै रहाया ॥ ५५ ॥
सेषै दादरी कै बीचिथांणानै बठाया।
फेरूं या पठाणांने विहाणी कोषिनाया ॥ ५६ ॥
जाटू एक हल्ला में विहाणो छोड भागा।
सेषा को दुहाई फेरि पाछै लैर लागा ॥ ५७ ॥
कोई दूरितांई जांटवानैं भी भजाया।
पाछैं राव सेषा सामलाति फेरि आया ॥ ५८ ॥
तीनूं ही ठिकाणां राव सेषै दाबलीनां।
फौजां फेरि हांसोका किल्लानैं जोरदीनां ॥ ५९ ॥
होता कामषांनी कौंम हांसी हिंसार।
हीदेषान नांमायेक दूजायकतार ॥ ६० ॥
दोनूं सामलाति होय सेषा पैंचलाया।
ऊंनैं राव सेषा भी लडाई काज आया ॥ ६१ ॥
दोनूं ही ठिकाणां का उडाई षूब लीनी।
दोनूं कांम षांनीं कांमि आयां भूमिदीनी ॥ ६२ ॥

ही देषांन सेषा की लडाई भूमि पोड्या ।
बाकी कांमषांन्यां फोजसूधा षेत छोड्या ॥ ६३ ॥
हीद्दा षेत हांसी लूंण आटा ज्यों मिल्यागा ।
दोनूं हीं ठिकाणां छोडि दिल्ली नैंच ल्यागा ॥६४॥
हांसी हंसार पारतांई फुरमाण ।
आंधो थो लाई तार सेषा की आंण ॥ ६५ ॥

दोहा

दाबि विहाणीं दादरी हांसीगढ हंसार ।
सिषर पजाई सांमठी गवडां धरा लगार ॥ ५ ॥

वार्ता छंद

साबक राज देसां में दुहाई सूं जमाया ।
पाछै राव सेपापाट थानक फेरि आया ॥ ६६ ॥
आगै अजमेरि बछराज गोड होता ।
गोडाटी कहावै बच्छराज गोड पोता ॥ ६७ ॥
जा दितां में ठोड ठोड गोडां का ठिकाणां ।
साबक नगार बंध राजा राव राणां ॥ ६८ ॥
जां दिनां में कोला गोड भूथरी का राव ।
भूथरी की सींव में षुदा वैछा तलाव ॥ ६९ ॥
कोई षौदवानैं तो मजूरी काज आता ।
गैलागीर आता सो ढकोला नाषि जाता ॥ ७० ॥
ताही पंथ कोई कूरमां कै बंस जायो ।
मारूदेसमांसूं जो कबीला लेर आयो ॥ ७१ ॥

साग़ै आदमी भी जाट नाई सा बताया।
भैली में कबोला ईं तलाई तोर आया॥ ७२॥
आनै पंथ जातां एक गोलै रोक लीनां।
आगै आणि सारां कै ढकोलानांष दीनां॥ ७३॥
दूंणारेत चोल्या यांकनासूं तो नषाया।
पाछै दोय चोल्या ठाकुराणीं का बताया॥ ७४॥
बोल्यो च्यारि चोल्या मैं कनां सूंथे नषावो।
भैली काकनांसूंथे सगाछो ऊठि जावो॥ ७५॥
सारा गोंडबंसी छो बिचारो बात देषो।
म्हारै पूठि पाछै भी तपैछै राव सेषो॥ ७६॥
कोलाराव बोला ईं लुगाई नैं उतारो।
आडा जो फिरै तो कोरडां सूं फेरि मारो॥ ७७॥
कोला की जुबांनो छूटि तांई फेरि आया।
ईं भी म्यांन मांसूं लेर सामांहीं चलाया॥ ७८॥
गोलै कोरडानैं हाथ ऊँचो लेउभाय्यो।
ऊँचो हाथ होतʻहीं जकैनैं ठोडि माय्यो॥ ७९॥
ईनैं भी तलाई मैं घणां ह्वै मार लीनूं।
गोडां मारि ईनैं फेरि सारा सोच कीनूं॥ ८०॥
हेलो देर ईंका साथ कांनैं बुला लीनां।
ईं न दाग आवो हाथ थां॥ ८१॥
ई नै दाग आवो हाथ थां कासूं दिरावो।
ईंको लुगाई नैं थे घरां न लेर जावो॥ ८२॥

पैली दाग दीनूं फेरि भैली नैं जुपाई ।
वैंकी ठाकुरांणी अमर सर कै थांन आई ॥८३॥
म्हैलां सांकडीसो आंण भैली थांभि दीनी ।
मूंडी एक बालू की पलाकै बांध लीनी ॥८४॥
सूधी राव सेषाकी विछात्यां आंण लीनी ।
गादी कूंट उपरि षोलि बालू मेल दीनी ॥८५॥
सूणी देषी चोषी बात सूंणां की बताई ।
देषो रावजी को भाग ओरूं भूमि आई ॥८६॥
बोल्या राव सेषोजी जुवांनो सूं सुणावो ।
बालू आंणि मेली आप कुंणछो सो बतावो ॥८७॥
बोली ठाकुरांणी मैं राठोडां बंस जाई ।
माई तां षिनाई ब्याही कूरम बंस आई ॥८८॥
भूंथरी नांव बोलिकै निसासो फेरि नांष्यो ।
मेरा ब्याहता नैं षूनहींणू मारि नांष्यो ॥८९॥
मरतै वख्त बोल्यो छो अेकलो ही न देषो ।
मेरी पूठि पाछै भा तपैछै राव सेषो ॥९०॥
पीढ्यां में बडेरोछो जकै तो साष काको ।
पाछैं पाटवो छो वैर आंटो काढबाको ॥९१॥
ताही स्यात सेषै जीन घोडां पै कराया ।
कोला गोड माथै कोपि भूंथरी पै चलाया ॥९२॥
जां दिनां में कौलराज भूंथरी को राव ।
कोलो लाव नांव सो षुदावैछो तलाव ॥९३॥

सेषोराव सूरज उगंतां की साथि आयो ।
कोलो गोड कोलो लाव ही की पालि पायो ॥९४॥
सेषै देषतांहीं राव घोडां भेलि दीनां ।
गोडां का समूंचा भायपानैं मारि लीनां ॥९५॥
पोडां की धरा में राव सेषा की दुहाई ।
गांवांयकाबनकै सेत भूंथरी आपणाई ॥९६॥
गोडां दोयसैनैं राव सेषै मार लीनां ।
सारांनैं तलाई पाल मैं दाग दीनां ॥९७॥
भूंथरी कै ठिकाणैं गोडवंसी तो उपडिगा ।
कोई उबस्था सो घाटवां में दोडि बडिगा ॥९८॥
भूंथरीकी रूषाली काज थाणां नैं रषायो ।
मांथोकाट कोलाको अमरसरनाथ आयो ॥९९॥
मांथो राव सेषै हाथि मांणस कै षिनायो ।
काकी रावजो की थाल मोत्यां सौं भरायो ॥१००॥
माथा सैत्तमोत्यां राव सेषा नै बधायो ।
सेषा नैं बधास्यो फेरि बोलीगोड जाज्यो ।
भूंथरी को ठिकाणूं राव सेषाकै रहाज्यो ॥१०१॥
लेणी फेरि पाछी गोड भूथरी काज आया ।
फौजां राव सेषा की लडाई कौं चलाया ॥१०२॥
ऊँनै राव सेषा को सतेजो लोग आयो ।
ऊँनैषेत षूस्यां तोर गोडां सांकडायो ॥१०३॥

घोडां की बाग लीनी गोडां सताब।
सेषा की फौज बीचि कीनां गरकाब ॥१०४॥
घोडा रजपूत च्यारि सैं तो षेति पडिगा।
बाकी ऊबरया सो घाटवां में गोड बडिगा ॥१०५॥
गोडां सौं ग्यारा चोगान की लडाई।
बांवनराडिसारी राव सेषा की बताई ॥१०६॥
बावनमी लडाई राव सेषै काम आया।
बैठा पाढिरायांमल सेषै राव जाया ॥१०७॥
इति श्रीकविया गोपालकृत पीडी वार्तिक राव सेषो समाप्ती।
समाप्ती।

(४) राया मल यथा।

आभा १ कुंभ २ अचल ३ भारू ४छोटा च्यारि भाया।
षेजडोल्या मिलक परया गांवां सैं कहाया॥१०८
दुर्गोंजी २ रतनूंजी सेषा का जाया।
दुर्गोंजी नांणो गांव थानिक अपणाया ॥१०९॥
माजी टाकाणी के नांय बाज्या टकणैत।
रतनावत पाछ्यों डांला वांनइसूरसैत ॥११०॥
गोडाटी बिचि सब गौड वतलाया।
घाटवै लडाई राव सेषा कामि आया ॥१११॥
रायामल बैर कायरादा धारि लेसी।
गोडाटी घाटवा समेत दाब लेसी ॥११२॥
सारा गोड भेला ह्वै मनोरथ बांध लीनां।
थानकीं मारोट रायमल को व्याय दीनां ॥११३॥

दाया बैर का तो ब्याहि बेटी दूर कीनां ।
भूथरीका यरादा डायजा में छोड दीनां ॥११४॥
रायामल पास एक रहता रजपूत ।
जाति का पँवार स्यांम धर्मी साबूत ॥११५॥
मारवाडी धरती षीचियांकै जारि ब्याया ।
षीचाणि नैं साथि लै फतैपुर सैर आया ॥११६॥
जां दिनां फतैपुर कामषांन्यां को राज ।
गादी पर अलप षांन कांमी निरलाज ॥११७॥
गैला कै ऊपरि एक जायगा बणाई ।
देष्यां बिना कोई भी न जाबादे लुगाई ॥११८॥
ऊभी राषि सामी घूंघटानैं तो षुलावै ।
आवै दाय जैंनैं फेरि सेजां में बुलावै ॥११९॥
इं गैलै आयो रजपूत दोय बार ।
आडा फिरि पूछ लीनां सारा समचार ॥१२०॥
भैली कों बोल्या नबाब घेरि ल्यावो ।
नोची उतारि यां लुगाई क्कों दिषावो ॥१२१॥
भैली का पैडा पासि उभा मजबूत ।
बासी अमरसर का रायमल का रजपूत ॥१२२॥
बोल्यो मूभ ऊभां आंणि परदा कूँउथेलै ।
धरती को भार सेस नाग नहीं भेलै ॥१२३॥
ऐसी बात बोल्यो कै दुधारो हाथ लीनूं ।
पैली ठाकुराणी सीस हाथां दूर कीनूं ॥१२४॥

सातूं ही जणां है साथि आवध ले चलाया ।
सौला कांमि षानी मारि पाछै कामि आया ॥१२५॥
नाई उबरथा सो जीव लेकैं एक भागा ।
ब्योरा फेरि नाई की जुबांनी आणि लागा ॥१२६॥
रायामल रूठा राव सेषै अंस जाया ।
कोसां कोस ऊपरि डाक छानैं से बठाया ॥१२७॥
एती बात छानां की नबाबांनैं सुणाई ।
सांमी अमरसर कै डाक अलपैवी बठाई ॥१२८॥
दौनां का दिल में दगा करणो का दाव ।
अलपषां नवाब ऊंनैं रायमल राव ॥१२९॥
कोई का दाव माझ कोई भी न आया ।
रायां मल राजा एक मन सूवा उपाया ॥१३०॥
चौमासा आया तब सांवण मास ।
रैता उमराव जेता रायमल पास ॥१३१॥
तींजां पर साबकनैं सीष फुरमाया ।
आणे का सईचा जो सिंजारा नैं बताया ॥१३२॥
जोड़ा की पाल मारोट का ठिकाणां ।
च्यारि घडि राति रयां सांमल हो जांणां ॥१३३॥
अलपा नै डाक मांझ एती लिषा दीनी ॥
रायांमल सबही नैं सीष दे दीनी ॥१३४॥
घोडा पांच सागै मारोट नैं चलाया ।
कागद बांचतां हीं जीन जीन यों कहाया ॥१३५॥

छाणि आंवणी का कांम कोई को न कैणां
रायांमल पावै जो जहाँ सों पकडि लैणां ॥१३६॥
रायांमल घोडा पाँच सागै ले चलाया।
घोडा सात सै सूं कामषांनो पंथ आया ॥१३७॥
आया उमराव रायमल का तमांम।
ग्यारा सैं घोडां का बणिगा कमांम ॥१३८॥
भालों को अणियां सैं आसमान छाया।
जीण वारि तांई कामषानी फेरि आया ॥१३९॥
सामांआवतां हीं आणि ब्योरा फेरि लागा।
ब्योरा लागतां हीं कामषांनी पूठि भागा ॥१४०॥
ताहि स्याति रायांमल को भी ठीक हूगा।
घोडा हांकि कोसां पाँच उपरि जाय पूगा ॥१४१॥
रायामल पूगा कांम षांनी देषि अडिगा।
मीढां की तरह सूं एक टक्कर ले मुरडिगा ॥१४२॥
रायांमल आगै कामषांनी फेरि भागा।
हाम्यां तेज ताजी रायांमल भी लैर लागा ॥१४३॥
सोला कोस तांई सामलातो बीर साका।
पाछै और घोडा लोग सारा लूट थाका ॥१४४॥
इक्का नबाब इक्का रायमल राव।
दोनां का दिल में मारि लेणें का दाव ॥१४५॥
बीस पैंड दोनां का घोड़ा बीच लागैं।
दोनूं हांकि थाक्या पणि आंतिरा न भागै ॥१४६॥

रायांमल तबही मारणे का दाव कीनां।
झोडाका कनारा कामषांनो जाय लीनां ॥१४७॥
आयो बीढ जाएयो रायमल का सेल छूटा।
जैंसों कामषांनी जीन बगतर वाज फूटा ॥१४८॥
मारा कामषांनो कौं सवाया बैर आया।
रायांमल बीरांबोर सेषै राव जाया ॥१४९॥
जां दिनां मैंडोवर में माला राठोड।
परबत सर घाटवा समेति सब गौड ॥१५०॥
दोनां कै सीवां का अडाव ठहिराया।
माल दे मडोवरसैं गोडां पर आया ॥१५१॥
गोडां फौज भेली कर सामने चलाया।
कागद् भेज राजा रायमल जी नैं बुलाया ॥१५२॥
रायांमल घोडा आठसों नैं लेर आयो।
भालां की अएयासूं आसमाणी लोक छायो ॥१५३॥
दोनूं राठोड गोड कांकडां लडैछा।
दोनां का घोडा रजपूत ऊधडैछा ॥१५४॥
रायांमल एते राव घोडां नैं उठाया।
तूटा आभ जाणी मालदेकै सीस आया ॥१५५॥
दोनूं ओड जोधा जूरमां कैसार बागा।
पाछै मालदेजी मडोवर का पंथ लागा ॥१५६॥
रायांमल राजा मालदे सैं जैत पाया।
बाजतां नवरां अमरसर कै थान आया ॥१५७॥

केतो बार कोनी राव केती ही लड़ाई ।

रायांमल जूटा जैं लड़ाई जैत पाई ॥१५८॥

इति श्री कविया गोपाल कृत पीडी वार्तिक रायांमल समाप्ती ।

(५) (राव सूजो यथा)

पाछैं रायांमल कै पाटि बैठा राव सूजा ।

सूजाराव जीं कै पाँच बेटा भांण दूजा ॥१५६॥

टीकाई जकां में लूणकर्ण जी पाट पाया ।

भैरूं जी १ लुहारूं थान भैरूं का कहाया ॥१६०॥

गोपालै ? बसाया गांव झाड़ैली सुरांणी ।

चांदै१ मैणपुरकी बाबसोकी भोमिश्रांणी ॥१६१॥

राजा रायसलजी गांव लांम्यां एक पाया ।

साहांसाह देई दासजी नैं साथि ल्याया ॥१६२॥

इति श्री कविया गोपाल कृत पीडी वार्तिक रावसू जो

समाप्ती (६) रायसल यथा ॥

अकल का देई दास बणियां उदार ।

सारी बात जोगाराय सल का कांमदार ॥१६३॥

एक गांव लांबी सूंठिकाणां नै बणाया ।

धरती बीचि कोई का धर्योड़ामाल पाया ॥१६४॥

जाणैं कौण एती बात सुणता जां बताई ।

ग्यारा लाष रुपयां की असरफी भूमि पाई ॥१६५॥

दिल्ली आगरामें जां दिनां का ए बिचार ।

आई फौज बलषो वादसाहां की अपार ॥१६६॥

रायांसाल जांणी बात सूजै राव जाया ।
घोड़ा सात बीसी लेकर दिल्ली सैर आया ॥१६७॥
घोडा रजपूत देष चंगा हमगीर ।
नगदी में राष लीनां बकसी उजीर ॥१६८॥
बादशाह कतलूषांन बलष सैं चलाया ।
केई लाष घोड़ा ले दिल्ली पै कोपि आया ॥१६९॥
अकबरस्याह फोजां लेर सामांही चलाया ।
जांणी दो समुद्रांपाज लोपी जेम आया ॥१७०॥
नो नो लाष फोजां बादिसांहा कै बताया ।
सत्तरिषांन बहत्तरीराव राजा साथि आया ॥१७१॥
अकबरसा बादिस्याह कीनां परयांण ।
भालों की अणियां सैं छाया असमांण ॥१७२॥
केई तोप जंगी जूंट बैलों की चलाई ।
केई पंथ लम्बी तोप हाथ्या पैहवाई ॥१७३॥
दोनूं बादिशाहां की फौजां मिलांण ।
दोनूं बादिसाहां का कर्त्ता फुरमांण ॥१७४॥
एकै बार लीनी तोप गोलां की लड़ाई ।
पीछै बादिसांहा बाग घोड़ां की उठाई ॥१७५॥
सेर बच्चा कराबीणी षंजर कटार ।
सिरोही असील तेग बाहैं असवार ॥१७६॥
दोनूं बादिसांहां कैसतेजा बाज आया ।
अंगां लाहोर की लड़ाई में उठाया ॥१७७॥

बल्लषकै बादिस्याह अकबर कौं जाणिं ।
बरछी कौं तोली हैरकाबूं कै पांणि ॥१७८॥
अकबरसा बलषी बादिस्यांह कौंपिछांणां ।
भागां लाज तषत की जूटैं जीव जांणां ॥१७९॥
बादिस्याह अकबर नैं भाजणां उपाया ।
जीवकौं बचाणां भी तषत का छोड़ि दाया ॥१८०॥
रायां साल ताही स्याति दोनां बीचि आयो ।
बोल्यो बादिस्यां नैं गाली पीछा कौं हटायो ॥१८१॥
साहां कै अगाड़ी आंणि ऐसी तेगवाही ।
दोनूं बादिसांहां की सिपाहां भी सराही ॥१८२॥
बादिस्याहा वलषी तो बीर भोमि पोड्या ।
वलषो विलायतों का बीर षेत छोड्या ॥१८३॥
बागा बादिस्यांहां के कुस्याली का नगारा ।
दोनूं दीन हाजरि चाकरी में आंणसारा ॥१८४॥
दोनौं दीन वोलै साहि आगै बात आही ।
वलषो बादिसाहां सीस मैनें तेगवाही ॥१८५॥
नांहां नाह अकबर साह सारांनैं पिछांणैं ।
छो तो जाति हिन्दू एक एती बात जांणैं ॥१८६॥
बादिसाह एक दिन कीनां फुरमान ।
साबक सवार होय घोड़ा जवान ॥१८७॥
दोनूं दीनहींका लोग मेरे पासि आंणां ।
मेरे पासि आकै फेरि डेरां ऊठ जांणां ॥१८८॥

सोही लेर आणां जो लड़ाई का समाज।
घोड़ा जीन कपड़ा सेल कमरि का साज ॥१८९॥
ऊपर कौं बकसी उजीर बादिस्याह।
नीचो कर जाणां असवारों का राह ॥१९०॥
रायांसालसारां सों पछाड़ी भूप आया।
दूरां सौंपिछाणयां साहि दिल्लीक बताया ॥१९१॥
मेरी जाणि तो उजीर यही रजपूत।
ढाल तरवारि घोड़ा पछाड मजबूत ॥१९२॥
मेरी जाणि याही जीव मेरा कों बचाया।
जीवां भी बचाया पाट दिल्ली कै बैठाया ॥१९३॥
रायांसालजी नैं साहि दिल्ली कै बुलाया।
सारां आवषां कैसैध रायां साल आया ॥१९४॥
दिल्लीनाथ बोल्या नांवकांई गांव रैणां।
कांई जाति बेटा तू किसका मोहि कैणा ॥१९५॥
भाई का अमरसर थांन सेषै बंस जाया।
रायां साल नामी राव सूजाका बताया ॥१९६॥
वलषीबादिसाहां सीस वाही तेग तूछा।
सच्ची बात कैणी बादिसांहां रामपूछा ॥१९७॥
कतलू साही मेरा जीवलेणे काज आया।
तैनें क्या जुबानी ब ली पीछाकों हटाया ॥१९८॥
रायंसाल बोल्या सुणि दिल्ली सुलतान।
वैही ठौड बोल वैकी वैतौ जुबान ॥१९९॥

नोबति पै अकबर सा बादिसाह आया ।
वावन बार डंका बादिसांहां ले लगाया ॥२००॥
बावन पिड़गनां तो रायसल नैं साहिदीनां ।
सारा पंचभारी का मुनासब कुरब कीनां ॥२०१॥
माही वा मुरातब फोल जंगी पीठि बाजा ।
दीनां षंडपुर का राज रायां साल राजा ॥२०२॥
जेती भोमि मेरी में दुहाई का उचार ।
षोस लेणां देदेणां तेरे यक तार २०३॥
दिल्ली की विलायती के हिन्दू तुरकांण ।
राजा राय सल का सब ऊपरि फुरमांण ॥२०४॥
घोडा ऊंट हाथी तो पय्यादी फौज वैणां ।
सूबादार सावक रायसल की साथि रैणां ॥२०५॥
पताथोक पाया आगरासों भूप आया ।
दोनूं दीन हाजिर होय मांथा कों नवाया ॥२०६॥
जां दिनां षंडेलै निरवांणा को राज ।
साज बाज देस कोस बिगड़्या समाज ॥२०७॥
जांनैं काढ दीनाँ देस बारैं भूमि काजा ।
बैठो षंडपुर कै पाटि रायां साल राजा ॥२०८॥
सोलासै अठारा साल बीत्यां होय सैठो ।
रायां साल राजा षडपुर कै पाटि बैठो ॥२०९॥
पैलां राव सेषों जाटवांकी भूमि लूटी ।
रायां साल सेषां कै रहाई फेरि छूटी ॥२१०॥

सोही जाटवां की भोमि लेणी का इरादा।
फौजां ले चलाया जाटवां कै सोर ज्यादा ॥२११॥
उत्तर की दिसा में रायसल का देष आणां।
होगा सामलाति जाटवां का जो ठिकाणां ॥२१२॥
जाटू सामलाति होय मरणी काज आया।
ऊंनसो नवाबी फौज भटनैरा उठाया ॥२१३॥
षान भटनैर कार जाटू रजपूत।
लड़बे का ठाठ बांधि आया मजबूत ॥२१४॥
आगे बादिसांहां की फोज का कमांम।
जाटूषान देषी डर मान्यां तमांम ॥२१५॥
जाटू रजपूत षांन अधिका उपड़िगा।
किल्ले भटनैर कै तमांम दोड़िबड़िगा ॥२१६॥
रायांसाल राजासैर किल्लो आंणिघेरयो।
तोपां की लड़ाई सोर सीसासूँबषेरयो ॥२१७॥
पैलांसैर किल्ला पैं सतेजी सोर जागी।
पाछैं बोलि हल्लो बादि स्याहि फोज लागी ॥२१८॥
जाटू तो जिताही कोट वारैं कामि आयो।
बाकीका बच्यासो भागि छूटा छोडिदायो ॥२१९॥
जाटू भागिछूटा भी कितांनैं मारि लीनां।
किल्लाबुरज ऊपरि षान पल्ला फेरि दीनां ॥२२०॥
ताहीषांन कौं तो बांधि दिल्ली भेज दीनूं।
रायां साल राजा सैर किल्लो दाब लीनूं ॥२२१॥

रोकड़िका षजांनां हेरि सारांनैं बुलाया।
ऊंटा में भराया षंडपुरनै भी पुगाया ॥२२२॥
किल्ला में पाया ओर जेता जषीर।
साबकही षंडपुरनैं कीनां बहीर ॥२२३॥
नामीजो नगारो जंग जैती आप ल्यायो।
झंडो दुर्ग नामी बादिसांहांनै पुगायो ॥२२४॥
केतो भार किल्लाका किंवाड़ां भूप तो भी।
किल्लाषंडपुर का कै चढाया आंणि सो भी ॥२२५॥
एतै बादिसांहूं का आया फुरमांण।
सूबा गुजरात पल्लणपुर का पठांण ॥२२६॥
आबूगिर नारि हिन्दू जाड़ेचा जाम।
जूनांगढ़ भावनगर सिंधी तमांम ॥२२७॥
सत्तरि हजार गुजरात का बदलिगा।
सूबादार अैमदपुर का सैं जारि मिलिगा ॥२२८॥
मिलिकै बादिसाहूं का अमल कौं उठाया।
ऊंतीन बरस होगा तैसोलकूं न आया ॥२२९॥
हाथी गांव बावन चारणां नैं दान दीनां।
तेरा लाष रोकड़िका दान पुंन्य कीनां ॥२३०॥
रायां साल राजा आप पश्चिमदेस जाणां।
सूबा गुजरात कौ बिगाड़ि फेरि आणां ॥२३१॥
रायां साल किल्ला भटनैर तोड़िआया।
दान पुंन्य रीऊकै प्रवाह सा चलाया ॥२३२॥

ऊंधरती नापि एक सो यकावन का दान।
विप्रा कौं देर फेरि करणां सनांन ॥२३३॥
कोई देश कोई गांव करणां मुकाम।
दिल्ली का सूबा बादिसाही तमाम ॥२३४॥
वाही गांव वासी ब्राह्मणां नै तेड़लेणां।
पट्टामांडि पच्छिम की तरफ कौं नांपदेणां ॥२३५॥
ब्राह्मण ब्राह्मणी का आणां जाणां हमेस।
पूठि पाछै रहणां ताबड़ां का प्रवेस ॥२३६॥
बाकी गाँव भोमिरीज राजी होर कैंणी।
एक सो यकावन तो हमेसां नाप देणीं ॥२३७॥
ऐसा नेम धार्यां देस पच्छिम कौं चलाया।
सूबादार जाणीं थंडपुरका भूप आया ॥२३८॥
संगर सफील रैंणी जंगो कपाट।
किल्ला में सीसा सोर तोपां का ठाट ॥२३९॥
सिंधी गुजरात का ठिकाणां सैंराह।
जेती कम नेत नेत बंधी सिपाह ॥२४०॥
एतै भूप रायांसाल फोजां लेर आया।
किल्ला सैर हल्ला बोलि दोनांनैं दबाया ॥२४१॥
दोनूं ओड़ तोपां की सतेजी धूम बागी।
धूँणी सोर सीसा की अकासां जाय लागी ॥२४२॥
कोई सामलाती वां टिकाणां का न आया।
रायां साल आठैं दहि किल्ला को छुंड़ाया ॥२४३॥

सूबादार कामैत्यां समेति बांधि लीनां।
बेड़ी घालि दिल्ली कों सताबी भेजदीनां ॥२४४॥
ताला षोलि रोकड़िका षजानां काढ लीनां।
बाकी का जषीरी सो किलामें छोडि दीनां ॥२४५॥
सूबादार सूबै भूप दिल्ली से बुलाया।
रायां साल फोजां ले पुराणैं कोटि आया ॥२४६॥
जूनै कोट दीहां तीन तांई सोर जागा।
सारा हींदवांका भी ठिकाणां पांय लागा ॥२४७॥
जूंनागढ भावलपुर आबू गिर नार।
जामनगर भुजनगर भावनगर धार ॥२४८॥
जाड़ेचा सर वहिया वाले सा जाम।
षोची यामारषांन सिंधी तमोम ॥२४९॥
तीनूं बरस तांई का मांमला भराया।
सूबैं गुजरात कै नियाति षांन जाया ॥२५०॥
रायां साल सूबा गुजरात सरदकीनां।
हिन्दू लोग सारा द्वारिकानैं साथ लीनां ॥२५१॥
छापांले पुरी में पुन्यि सारां का बढाया।
गांवां पांच पट्टामांडिटीकम कै चढ़ाया ॥२५२॥
याही गुजरात की तलेटीका गांम।
रायां साल पट्टा मांड दीनां सरनांम ॥२५३॥

॥ दोहा ॥

रायां साल नरष्षियो दत बिणषाली दीह।

पटां जिकणरी पाति सा लोपन सक्या लीह ॥२५४॥
केई गांव भूमी राय सलका दान पट्टा।
केई राज होगा हाल तांईनां पलट्टा ॥२५५॥
सूबां बादिसाही कां समूंचां भोमि दीनी।
दोनूं दीन रायां साल दीनी सो न लीनी ॥२५६॥
सूबा बादिस्याहि पायनामां में लगाया।
राजा रायसलजी षंडपुर कै पाटि आया ॥२५७॥
सारा ही प्रवाह रायसल का जो बतांवै।
एता ग्रंथ होवै फेरि पोथी में न मांवै ॥२५८॥

इति श्री कविया गोपाल कृत पीडी वार्तिक रायां साल समाप्तो त्रंमल यथा।

रायां साल राजा कै समूँचा पूत बारा।
ना ओलाद रैगा पाँच सातां का पसारा ॥२५९॥
रायां साल जाया नांव पाया नाह नाहा।
सातांनैं ठिकाणां बांट दीनां बादिसाहां ॥२६०॥
थे ठू भोज राजा १ उदैपुर को थान पायो।
रैवासो बड़ाजांलाडषां जीनैं बतायो ॥२६१॥
रांणोली हराकै १ ताजषांकै चावड्यायो।
परसै १ गांव न्यारो परस रामांपुर बसायो॥२६२॥
गीधोजी रहायो पांट थांनी षंड पर को।
त्रंमलराव १ होगो ईस नागाणां नगर को ॥२६३॥
तिरमल कौं बादिस्याह बकस्या नागौर।

राव पदो वाही दिन आई सर जोर ॥२६४॥
भाई ओर सारा षंड पर की भोमि रैगा।
नागाणां ठिकांणां राव ंत्रमल राज हैगा ॥२६५॥
त्र्ंमल कै तीन बरस भुगती नागोर।
ता पीछै अंबापुर बालां का तोर ॥२६६॥
दिल्ली चाकरी में दोडि जगता मान जाया।
नागाणां ठिकाणां बादि साहां सैं लिषाया ॥२६७॥
बाईसी साथि लेर कीनां पयांण।
हिंमति का जोर बादिस्याही फुरमांण ॥२६८॥
किल्ला दाब लेणीकौं सताबी चालि आया।
चार्‍यों मेरि हल्ला बोलि किल्ला पै चलाया ॥२६९॥
मैंना तीन तांई सोर सीसा की लड़ाई।
एकै बंस जाया भूमि ताबा की अड़ाई ॥२७०॥
जांणी बादिसाहां कोट नागाणां न छूटै।
दोनूं षंडपुर का अंबपुर का ईस जूटै ॥२७१॥
ऊंनैं मान जाया एक रायां साल जाया।
दोनां का यरादा एक दिल्ली में रहाया ॥२७२॥
अैसा बादिसाहां का छूटा फुरमांण।
राषणां बरोबर ही दोनां का मांण ॥२७३॥
जगता मै बादिस्याह दोनी नागोर।
कासली ठिकाणौं राव त्रंमलको तोर ॥२७४॥
कासली ठिकाणैं राव त्रंमल का राज।

घोड़ा रजपूत राज कारिज समाज ॥२७५॥
पुरजा कासलीनैं बादिसांहां का षिनाया।
रायां साल जाया राव त्रंमलनैं बुलाया ॥२७६॥
दिल्ली राव त्रंमल बादिसाहां यासिपूगा।
जांणी अंबषासां बोचिदूजा भाण ऊगा ॥२७७॥
षत्री एक चांदूलाल दिल्ली मांझ रैतो।
जैंकै काम रोकड़ि का षजानूं हाथि ह्वैतो ॥२७८॥
बेटी रूपवती एक चांदूलाल जाई।
दिल्ली में कुसीसैं रावत्रंमल कै रहाई ॥२७९॥
त्रंमलराव केतादेह दिल्ली में रहायो।
आयो कासलीनैं साथि वैनें भी लियायो ॥२८०॥
एक रवतांणी एक षतरांणी नारि।
दोनां को त्रंमलराव राषी यक सारि ॥२८१॥
त्रंमलराव जी कै पूत जाया फिरि तीन।
तीनूंहो त्रंमलराव जी कै आधीन ॥२८२॥
रांणी एक गंगा १ एक बंद्दो छोड जाया।
पूरामल १ नांमीसो षवास्यां का बताया ॥२८३॥
त्रंमल रावजी तो सुर्ग कीनां पयांण।
दिल्ली में जहांगीर दिल्लो सुरतांण ॥२८४॥
इति श्रीकविया गोपालकृतपीडीवार्तिक त्रंमल समाप्ती
पूरणमल गंगाराम यथा।
फोजां बादिसाही लेर सूबादार जूटो।

सोलासै घुंणंतरि कासलो को राज छूटो ॥२८५॥
गंगाराम बंद्धी छोड़ राणीं कूंष बेटा।
बांटा अमरसरका काजकीनां ओरि षेटा ॥२८६॥
दोनां अमरसरकी भोमि बसबाभी न दीनी।
जोरावर पणैंसी रैंणवायली दाबलीनीं ॥२८७॥
बंद्दी छोड गंगारैंण बायलि में रहाया।
पूरणमाल सूदा सैर दिल्ली नैं चलाया ॥२८८॥
पूरा बादिसाहां का सलांमो पासि रैंणां।
कोई पासि षोटी बात कोई की न कैंणां ॥२८९॥
पूरा बरस बारा बादिस्याही में रहाया।
पूरा नाम अञ्छा बादिसाहां यों कहाया ॥२९०॥
एता मांझ बिलषो बादिसाहां को षिनायो।
कुस्तीगोर जेठी एक दिल्ली मांझ आयो ॥२९१॥
बादिस्याह कागद में लिषदी विचार।
जेञ्यां की राड़ि वलष दिल्ली की हारि ॥२९२॥
दिल्लीनाथ जेठी बादिस्याहो का बुलाया।
कुस्तो काज °सों एक कोई भी न आया ॥२९३॥
ईसों जूटवाका साहि बीड़ा फेरि दीनां।
दोनूं दीन देषैं पांन एक भी न लोनां ॥२९४॥
बीड़ा फेरि पाछै बादिसाहां यों कहाई।
सारी बादिस्याही में निबीजी भोमि पाई ॥२९५॥
एती बात सुणकैंराव अंमल का पूत।

साहि कै नजीक आणि ठाडा मजबूत ॥२९६॥
बीड़ाको उठाया बादिसांहां को निहाख्या ।
जेठी पेचलाया फेरि दूणां जोसधाख्या ॥२९७॥
जेठी तो भुजांनैं ठोक पूरासीस आयो ।
पूरै रावजी कै खूब जेठी नैं खिलायो ॥२९८॥
दोनूँ सिंघ रूपी सांकलां सूं जाणि छूंटा ।
दोनूं बादिसाहां को सिपाहां बीचि जूटा ॥२९९॥
केति बार भूमो चांपि जेठी दाव पाया ।
पाछैं राव पूरै चांपि जेठी नैं उठाया ॥३००॥
केती बार जेठी जोर आगैं पेच कीनां ।
पूरै चांपि जेठी नैं भ्रमाया नांषि दीनां ॥३०१॥
वाहीस्याति नीसरिगा जेठी का प्राण ।
पूरा मल्ल बादिस्याह कीनां फुरमांण ॥३०२॥
दोनूं बादिसाहां की सिपाहां नैं निहाख्या ।
पूरैमल्ल जेठी को पछाड्या भूमि माख्या ॥३०३॥
पूरानैं जिहांनां गीर छाती सैं लगायो ।
ताही स्याति फेर्यो कासलीको राज पायो ॥३०४॥
दीनूं कासला को पाट चोरासी गांम ।
बादिस्याह दीनां राव पूरणमल नांम ॥३०५॥
कोईको पिड़गना बादिस्याही सैं मिलैगा ।
तेरी राव भाला की सही सैं काम ह्वैगा ॥३०६॥
तेरा एक भाला हींण नोऊँ म्होर कच्ची ।

तेरा एक भाला की सही सैं राव सच्ची॥३०७॥
कैणां बादिसाही राव मांथा पै रषाया।
मांगी सीष पाछैं कासली कै पाट आया।
पूरणमल जायो सो गयोड़ो भोमि ल्यायो ॥३०८॥
पूरणम लकीनूं राज तिरमल कै पूत।
साबक रजवाड़ां को बांध्यो यक सूत ॥३०९॥
राजा १ राव २ रावत ३ समेत सवरांण ४।
रावल५ वहादुर६ जाम७ पदवा दीवांण८ ॥३१०॥
आठोंहीं पदीका कासली कै थांन आया।
सारा कच्छ कुल में राव दादोजी कहाया ॥३११॥
गीत-पोता स्हो थारा पूरणमल तू दादो ढूंढाड तणो पांण
सराह्योपाति सा गाई विलायति गल्ल राव ठिकांणैं
राषियो सूरोपूरण मल्ल ॥
कासली ठिकांणैंज राव पूरण कमांम।
पूरण कै पाटि राव बैठो बलिराम ॥३१२॥
पीढी दोय तांई तो षवास्यां का रहाया।
पीढो दोय पाछैं राव तांणी का बताया ॥३१३॥
गंगाराम बंदी छोड तिरमल राव जाया।
केई बरस तांई रैंणवायलि में रहाया ॥३१४॥
बंदी छोड़ जीतो कासली में फेरि आयो।
गांवां कासली का नागवां में जो बसायो ॥३१५॥
गांगै रैंणवायली थांन बेटा पांच जाया।

जेठा स्यामसींहजो रैण वायलिमें रहाया ॥३१६॥
टाडावास एकै गांव रतनैं दाब लीनां।
तीन्यां का ठिकाणां नांव एकैसाथ कीनां ॥३१७॥
तुलछीराम१ दलपति१ किलांणसिंघ१ नांम।
पालबास बींजासी उगेरें पांच गांम ॥३१८॥

इति श्री कविया गोपाल कृत पीडीत्रार्तिक गंगा राम
समाप्ती स्याम (राम यथा)

बेटा नव स्याम कै बिजाई सिंघ जाया।
नोऊँ ही सतेजा भांण नोवां नांव पाया ॥३१९॥
सामतसिंह१ किसन१ मुकनूं१ करणूं बलधाम१।
अबलो १ अमरसिंह सातों यह नाम ॥३२०॥
कोई बरस पाछै गांव यांकै तीन आया।
ईंदोखू गुणाट् गांव सेवद में बताया ॥३२१॥
जैसो जगतसीं जी स्याम कामैं दोय ऊठा।
सारां बोचि दोनूं ही सवाए तेज सैठा ॥३२२॥
सारा जा दिनां में रैणवायलि गाम रैता।
सारा पूत स्यामां का अबीढा जोरि बैता ॥३२३॥
रैता गोपाल बस गांवां दो च्यारि।
सारी अणहोती बात सैता बिचारि ॥३२४॥
तावै एक होणी कैलड़ाबा अैंणल्याया।
सारा सांमलातां कोटड़ी कै बीच आया ॥३२५॥

दोनूं ओड हिरणां की लड़ाई जीति हारि।
दोनूं ओड गाली बोलि काढी तरवारि ॥३२६॥
ऊँनैं राव बंसी बंस ऊँनैं गोपाल।
दोनां तेग बरछी तोलि कीनूं रणताल ॥३२७॥
हिरणां की लड़ाई में अपूठा बैर नांष्या।
आया छा जकानैं स्यांम जाया मारि नांष्या ॥३२८॥
कागद् गोपाल कां अमरसर भेज दीनूं।
ऊपर गोपाल बंसकां को राव कीनूं ॥३२९॥
पाछै स्यांमजी सैं रैणवायलि गांम छूट्यो।
फेर्यो स्यांम जाया रावजी को देस लूट्यो ॥३३०॥
पाछै कासली कै राव कागद् भेज दीनां।
साराही भतीजा स्यांम सूधा तेड़ लीनां ॥३३१॥
सल्ला स्यांम जायानैं दीनी बलराम।
कासली षंडेलो भूमि कांकड़ पै गांम ॥३३२॥
दूजा बादि बांटै आपणी में जाय बैठो।
आदी षंडपुर की दाबि लेणी होय सैंठो ॥३३३॥
बांटो षंडपुर को थेट तांई सूं न आयो।
जैसो रावजीकां को सदा सूं बंट दायो ॥३३४॥
जैसे रावजी सों सीष मांगी करि मोद।
छोडि रैणवायलि दाब लीनी दूजोद ॥३३५॥
भादरसिंघ राजा षंडपुर को जां दिनां में।
आयो काढषा नैं षोट धार्यो जे मनां में ॥३३६॥

जैसे स्यामजी कै भूमि कानैं चाप लीनी।
वीहां दोय भादरसिंघजी सों राडि कीनी ॥३३७॥
आधी षंडपुर को में रैता टकणेत।
भाई तीन झगडा में पोढ्या रणषेत ॥३३८॥
जेसा सांमलातो कासली सैं लोग आयो।
ऊँनैं लाडषांनी भायपांका भी षिनायो ॥३३९॥
भादरसिंघ राजा षंडपुर में जाय बैठो।
जायो स्यामसिंघ जो को रहायो होय सैंठो ॥३४०॥

॥ दोहा ॥

कँवर अबीढो कासली, जसियो ओरँगजेब।
आंणि मिल्या सो ऊबर्‌या, राजा झालि रकेब ॥३४१॥
भादरसिंघ राजा दोय बारि फेरि आयो।
सैंठो ह्वैर जैसो स्यांमसिंघ जी को रहायो ॥३४२॥
ओरूं षंडपुर का गांम दोनूं दाब लीनां।
राजी ह्वैर फेर्‌यौं कासली कै राव दीनां ॥३४३॥
जां दिनां ठिकाणांबंध मांडोली गांम।
पोता लाडषां का धाडवी छा सरनांम ॥३४४॥
सारा देस गांवां में उगाही बांध लीनी।
गांवां आप का मां दालि जैसे दूरि कीनी ॥३४५॥
जोरी तो न कीनी फेरि चोरी काम कीनां।
फोजां लेर पूगा आदम्यां नैं घेर दीनां ॥३४६॥

एकैं द्रोह जेसै जीव मांहि दोष धाऱ्या ।
ठावां लाडषांनो सांथठांनैं आंणि माऱ्या ॥३४७॥
ऊँनैं लाडषांनी रावजी का सिंघ अडिगा ।
एकैं भायपां कै बीचि षांपां वैर पडिगा ॥३४८॥
पोता लाडषांन जी का कणवारी गांम ।
माधोसिंघ जी का पूत सूरा सरनांम ॥३४९॥
सूरै धाडो दीनो बाहरूं का दांत भाड्या ।
केई बार सूबा बादिसाहां का उजाड्या ॥३५०॥
दिल्ली साहि साज्यां बादिसाही पाट पाया ।
षाटू इंद्रसिंघ जी नांम जोधाण वुलाया ॥३५१॥
साहां की सलामी होय षाटूनाथ आयो ।
जैंनैं धाडब्यां नैं बंध करबा नैं ।षिनायो ॥३५२॥
बोल्या साहि साज्यां एम पच्छिम देस जाणां ।
सूरा लाडषांनी कों हमारे पासि ल्याणां ॥३५३॥
जोधै आंणि चोरां धाडब्यां में जाल नांष्यो ।
सूरा लाडषांनी नैं दगासूं मारि नांष्यो ॥३५४॥
सूरोसिंघ माऱ्यो कै दिल्लो कै पंथ जोधो ।
घोडी ले चल्यो गो ताछि नांमां छोडि ओधो ॥३५५॥
ऊँनैं लाडषानो बंस जोधां नैं बकाऱ्या ।
केई ठोड आतां जातां तामैं पंथ माऱ्या ॥३५६॥
दोनूं ओड जोधां लाडषांन्यां बैर जाग्यो ।
सागै यंद्रसिंघजी हाथि कोई के न लाग्यो ॥३५७॥

ताही बार दिल्ली सैं दिल्ली सुलतांण।
कीनूं अजमेरी पोर जारित पयांण ॥३५८॥
साज्यां साहि दिल्लीनाथ दिल्ली सैं चलाया।
दोनूं दीन सारा हींदवा का बंस आया ॥३५६॥
डेरा बादिसाहां मारवाडी भूमि कीनां।
जैपुर जोधपुर का भायपां नैं साथि लीनां ॥३६०॥
दोनूं षंडपुर का कासली कां नैं बुलाया।
जेसा स्यांमजी का कासली का साथि आया ॥३६१॥
फौजां में चारण भी होता अनेक।
अमली सो चारण देवराज नांम एक ॥३६२॥
षाटूनाथ इंदा पासि डेरै चालि आया।
जोधै यंद्रभाणै जीन घोडां पै कराया ॥३६३॥
घोडी लाछि साषती सूं तयारी होर आई।
घाडी नैं जुबांनी बोलि सेषावति बताई ॥३६४॥
चार साषा जुबांनी जांणितां हीं पाणि बोल्यो।
सूरो लाडषांनी मारि नांष्यो आभ तोल्यो ॥३६५॥
जोधा या जुबांनी बोलि सोभा भी न पावैं।
फैस्यो षासते नैं गंज दारू क्यों दिषावैं ॥३६६॥
इंदा जीभ थारी की न रैसी बात छांनी।
केई राव सेषा की सुणलो या जुबांनी ॥३६७॥
जोधो यंद्रभाणूं एम बोल्यो ऊठि जावो।
सारा लाडषान्यां का कडौमां नैं सुणावो ॥३६८॥

चारण एम बोल्यो फेरि थारै तो न आस्यों ।
कोई जो सुणलो बात जैनें भी सुणास्यों ॥३६९॥
एती बात बोल्यो फेरि चारण ऊठि आयो ।
दीहां दोय तांई फोज सारी में फिरायो ॥३७०॥
भूषो दोय दिन को देव चारण चालि आयो ।
दूजै दीह जेसा स्यांमजी का नैं सुणायो ॥३७१॥
चारण देवकरणैं बात बरती सो बताई ।
जेसै स्यांमजी कै बात सारी जांण पाई ॥३७२॥
जेसो एम बोल्यो थे मनां में धीर राषो ।
रोटी जीमि पाछै ई मुदा की बात भाषो ॥३७३॥
सावडदी समोसा मांस सूली भांति न्यारी ।
दारू पीय बैठा थाल आबा की तयारी ॥३७४॥
चारण नैं घणीं ही बात बडेरां को सुणांई ।
ई कै जीमबा की दाय कोई भी न आई ॥३७५॥
जेसो एम बोल्यो पैल दारू घालि पावो ।
जीमण आपणां की साथि बारठ कै मँगावो॥३७६॥
चारण एम बोल्यो आप सारी बात जोगा ।
पांणी नाज छोड्यां नैं अठारा जाम होगा ॥३७७॥
औरों पांच सातां तो दिनां भो फेरि जीस्यों ।
औरों देह दूजी पाय दारू फेरि पीस्यों ॥३७८॥
जेसो एम बोल्यो थे अनेसो क्यों रषावो ।
कांई बात धार्यो नेम सारी कै बतावो ॥३७९॥

सूरो लांडषांनी गैलकां नैं बोल देगो ।
जोधो यंद्रभाणूं मारि घोडी लाछि लेगो ॥३८०॥
घोडी यंद्रभाणैं जाति सेषां की बताई ।
सारां नैं सुणांई कालिजा में तो न माई ॥३८१॥
जोधा की जुबांनी का अजीरण नैं जरावै ।
जोधो मारि घोडी लाछि ल्यावै सो जिमावै ॥३८२॥
सुंणतां बात जेसा कै कलेजै आगि जागी ।
थांकी जाति म्हांकै तो भलांही लैर लागी ॥३८३॥
सागै चालि डेरो इंद्रभाणां को बतावो ।
दारू मांस रोटी थे भलांही फेरि षावो ॥३८४॥
जेसो काल रूपी लै दुधारो हाथि ऊठो ।
षाटू गांव जोधा इंद्रभाणां सीस रूठो ॥३८५॥
आधी राति बीतां का समां में चालि आयो ।
जेसै आंणि सूता यंद्रभाणां नैं जगायो ॥३८६॥
डेरै लोग सारो साथ कां तो दाट लीनूं ।
जेसै सीस जोधा को तँबू में काट लीनूं ॥३८७॥
पैलां लाछि घोड़ी हेरि ठाणां सूं मंगाई ।
घोडी एक फेर्यो यंद्रभाणां की षुलाई ॥३८८॥
आधो राति बीतां मारि जोधा नैं चलाया ।
लड़कै दो घड़ी में घाटवा कै बीचि आया ॥३८९॥
जेसो आंणि फलसा कोटडो कां नैं षुलाया ।
हेलो देर सारा कोटडी कां नैं जगाया ॥३९०॥

आया तो कठासों थे कठीनैं फेरि जावो ।
पूछ्यो लाडषान्यां गांव नांवां तो बतावो ॥३६१॥
आया फोज मां सूं कासली नैं फेरि जाणों ।
बोल्यो आय जेसो स्यांमजी को छै पिछांणों ॥३६२॥
मांडोली।ठिकांणां की पिछांणी रीति सारी ।
सारा लाडषान्यां बैर लेवा की बिचारी ॥३६३॥
माधोसिंघ जीव जां दिनां में षान जायो ।
माधोसिंघजी कै नांय मंडल नांव पायो ॥३६४॥
माधोसिंघ बोल्या बार कोई भी न बोलो ।
सारी बात जांणी जाय दरवाजो न षोलो ॥३६५॥
ईमैं एक कारण ओर सोही जांणि पायो ।
जेसो स्यांमजी को कोटडी कै बीचि आयो ॥३६६॥
स्याला जाति गांवां की गुवाड़्यां मे फिरावै ।
बोली बासते कै सिंघ नेडै भी न आवै ॥३६७॥
माधोसिंघ एती बोलि बारैं पांव धार्यो ।
॥३६८॥
फेर्यो एम बोल्यो लाछि घोड़ी नैं बंधावो ।
मरजी आपकी छै बैर आंटो भी लिरावो ॥३६९॥
माधोसिंघ सुंणतां बात छाती कै लगायो ।
बेटो स्यांमजी कै तूं भलांही लाल जायो ॥४००॥
जाया लाडषांजी का सवाया मोद पाया ।
सेषा बंस जेति में बधावा देस गाया ॥४०१॥

माधोसिंघ बोल्या आज तांई बैर दाया।
सोही बैर सारा रावजी का सूं मिटाया ॥४०२॥

कोई रावजी को लाडषांनी नैं न मारै।
कोई लाडषांनी बैर लेबा की न धारै ॥४०३॥

कोई आज पाछै आंट राषै बैर गावै।
सोही षांप दोनां सूं निरालो होय जावै ॥४०४॥

दोनूँ षांप राजी ह्वै लिषावटि मांड लीनी।
जेसै फेरि माधोसिंहजी सैं सीष कीनी ॥४०५॥

जेसो स्यांमजी को फेरि आयो दूजोद।
कासली ठिकाणैं रावजी का मनमोद ॥४०६॥

भादरसिंघ षंडेला भूप स्योगढ फेरि आयो।
केई आदम्यां की बांह जेसा नैं बुलायो ॥४०७॥

स्योगढ आवतां ही बांह सारा दूरि कीनी।
राजा का दगा की बात सारा जांणि लीना ॥४०८॥

भादरसिंघ राजा चूक जेसा पैं करायो।
जेसो चूक होतां कोपि राजा सीस आयो ॥४०९॥

पेमैं बीच आतां ही जेसा नैं रोक लीनूं।
सारां होर जेसा नैं दगा सूं मार लीनूं ॥४१०॥

पेमूं जो न पूगै स्याति की भी जेज करतो।
भादरसिंघजी नैं मा'र पाछैं आप मरतो ॥४११॥

॥ दोहा ॥

राजा दगै न मारतो, बिढतो षाग बकारि ।
तो कुसले घरि आवतो, जसू बहादर जारि ॥४१२॥
भादरसिंघ जेसा नैं दगा सूं मार लीनूं ।
दोलै पूत जेसा कै सवायो बैर लीनूं ॥४१३॥

इति श्री कविया गोपाल कृत पीढी वार्तिक स्याम राम जसवंतसिंघ समाप्ती ।

(दौलतसिंघ जगतसिंघ यथा)

जगतो स्यांमजी कै एक जेसा पूठि जायो ।
जेनैं कासली कै राव रैबा नैं बुलायो ॥४१४॥
नेडा साष तावै कासली में बुला लीनूं ।
बारा गांव सूंधा सापरो भी दबा दीनूं ॥४१५॥
सूजा भोज कां कै सापरा को थांन होतो ।
आयो षंडपुर का देहरा में कामि सोतो ॥४१६॥
ओरंगजेब दिल्ली साहि दिल्ली सैं चलायो ।
गोपीनाथजी का देहरा नैं आंणि ढायो ॥४१७॥
सूजै फोज कै तो जीव देही साच दीनूं ।
सूना सापरा नैं राव जगतै दाब लीनूं ॥४१८॥
कोई दीह पाछैं राव जगतै धर्म हार्यो ।
मांझो कासली का नैं दगा सूं आंणि मार्यो ॥४१९॥
एती जे बलूं तै कासली कै राव कीनी ।
जैनैं मारि जगतै कासली भी दाब लीनी ॥४२०॥

बेटा दोय जेसा स्यांम जी का कै बताया।
नांमी दोल १ देसां में फतै १ भी नांव पाया ॥४२१॥
दोलतसिंघ जी कै गांव बांटै पांच आया।
छोटै जै फतै भी गांव पांच बंट पाया ॥४२२॥
दोनूं बंधवां कै भूमि आधौ आधि बांटो।
भादरसिंघजी सौं दोल काढ्यो बैर आंटो ॥४२३॥
भूमी षंडपुर की फेरि बसबा भी न दीनी।
च्यार्‌यौं मेर घोड़ा फेरि सारी लूंट लीनी ॥४२४॥
कूक्यो देस राजा को मिटावो बैर दायो।
जेसै षंडपुर को भूप दोला नैं बुलायो ॥४२५॥
भादरसिंघ ढाणी एक छोटी सी बताई।
सीकरी जाटणी की जाति जैं तावै कहाई ॥४२६॥
दोलै देस धाडा लूंटबो तो बंध कीनूं।
आंटो बैर ताबै को न छोडूं बोल दीनूं ॥४२७॥
दिल्ली बादिस्याही राज ओरंगजेब छायो।
सूबै बिटली कै षांन अबदू नैं षिनायो ॥४२८॥
भादरसिंघजी तो बास दूजै लोक पायो।
राजा केहरी के षंडपुर को राज आयो ॥४२९॥
सूबै बिटली कै मामला की रीस कीनी।
ओछी बात राजा केहरी नैं मांड दीनी ॥४३०॥
कै तो मांमला का दाम बेगा लेर आणां।
नां तो षंडपुर नैं छोडि दूरा भागि जाणां ॥४३१॥

राजा या लिषावटि बांचि पाछी यों लिषाई।
अबदूषान नैं तौ अमरसर का भांगि पाई ॥४३२॥
नीली का आरा की दवाई लीग्र जासी।
पाई आज तांई जो नसो भी वादि जासी ॥४३३॥
लूंट्यो रामपुर नैं षंडेलो जेम आवो।
लूंटो षंडपुर नैं फेरि सारिषा कहावो ॥४३४॥
सारा दूसरा को लेर पाछैं तीर बायो।
थारै पासि कौंभा धायभाई नैं षिनाया ॥४३५॥
भेज्यो मैं अठासूं बोलि कागद बांच लीजे।
कागद बांचतांई जेज आबा की न कीजे ॥४३६॥
सूबादार सामां भूप कागद यों लिषाया।
साबकराय सबां का बंस भाया नैं बुलाया ॥४३७॥
रायांसाल बंसी षंडपुर कै सांम लाया।
एकैं कासली सूं रावजी का ता न आया ॥४३८॥
कागद कासली नैं फेरि राजा दे षिनायो।
दोलतसिंघजी नैं एक न्यारो ही पुगायो ॥४३९॥
आंट काढबा नैं दीह आगे छै घणांही।
आ तो बात घर की बैर लीज्यो ल्यो जणांही ॥४४०॥
पोता लूंणजी का धाय भाई नैं षिनायो।
थां को राज सूबा विटली का सूं लिषायो ॥४४१॥
सारा सांमलाती होय केसू नैं माद्यो।
पाछैं राज सारा लूंणजी का को कराद्यो ॥४४२॥

कागद षंडपुर सूं कासली नैं एम आया ।
जगतै राव सारां स्यामजी का नैं बुलाया ॥४४३॥
दोलतसिंघजी नैं राव जगतै यों कहायो ।
दोला लूंणका कै षंडपुर को लेण दायो ॥४४४॥
दोलो एम बोल्यो सामलाती चालि होस्यां ।
सूबादार सूधां लूंणजी का नैं डबोस्यां ॥४४५॥
जगतै जंग ताबै कासली सूं कूंच कीनां ।
दीपो जैत २ बेटा दोय दोनूं साथि लीनां ॥४४६॥
दोलो भी फते भी दोय सिभूनैंण तीजा ।
सारा रावजी कां सैत सारा ही भतीजा ॥४४७॥
ऊदा १ ग्यान२ कनका ३ सामलाती सैत सूजा ।
सूबादार सामां ह्वै चलाया सिंघ दूजा ॥४४८॥
दोनूं कासली सूं षंडपुर सों फोज ल्याया ।
राजा राव दोनूं ही हरीपुर षेत आया ॥४४९॥
राजा राव दोनां हरिपुर का षेत लीनां ।
सूबादार डेरा देवली में आंणि कीनां ॥४५०॥
दोनूं ओड हो सों आगि तोपां नैं दिषाई ।
दोनों ओड लीनो सोर सीसां को लड़ाई ॥४५१॥
राजा राव सूबादार सामां जंग जूटा ।
घोडां असवारां का कळेजा सार फूटा ॥४५२॥
राजा षंडपुर कै राव जगता नैं कहाया ।
जाया दोय थांका दोय जैसैं भ्रात जाया ॥४५३॥

आंनैं तौ ठिकाणां राषणां छै सो बिनाद्यो ।
आपां फोज माथै वाग घोड़ां की उठाद्यो ॥४५४॥
दीपो १ जैत २ झोलो ३ तीन पूगा कासली नैं ।
बाको काम आया मारि सूबां की सली नैं ॥४५५॥
ऊदा १ ग्यान २ सूजा ३ फता ४ कनका ५ समेत ।
राव जगते सैं साथि पोढ्या रणषेत ॥४५६॥
राजा तो केसरीसिंघ जगतसिंघ राव ।
तीन बार फोजां बीचि कीनां आव जाव ॥४५७॥
गोली तरवारि तीर षंजर कटार ।
सतरि घाव राजा कै लागा सुमार ॥४५८॥
राजा पांडुवां भी आसमेधी धारि लीनां ।
लोही की सन्योडी भूमिका नैं पिंड दीनां ॥४५९॥
जगतै कासली कै राव घोड़ां नैं उठाया ।
भाई सात बीसी लोग सूधां कांमि आया ॥४६०॥
चोरासी लाडषांनी पोढ्या रणषेत ।
बाप परसरामजी का तेजा समेत ॥४६१॥
बीसी च्यारि भोजांणी हरा कै बंस जाया ।
दोनूं षांप ही का बाजि तेगां कांमि आया ॥४६२॥
राजा का हजूरी बीस बीसी बांधि नेत ।
आया कांमि सारा ही पठाणां कै समेत ॥४६३॥
हिन्दू लोग ग्यारासै असीलां कांमि आया ।
सोलासै सिरोह्यां सैं मुसल्ला घोर पाया ॥४६४॥

राजा राव दोनूं हरीपुर कै षेत पोड्या ।
राजा के करौठी षीर ऊदै षेत छोड्या ॥४६५॥
हिन्दू आसुरां कै देवली में सार बागो ।
सूबादार सूबा विंटलो का पंथ लागो ॥४६६॥
फेर्यो षंडपुर को राज ऊदै भूप पायो ।
दीपो कासली को राव देसां में कहायो ॥४६७॥

इति श्री कविया गोपाल कृत पीडी षार्तिक केहरीपरा जुद्ध समाप्ती

दोलत सिंघ यथा

भोपतसिंघ भादरसिंघ जी को एक भाई ।
जैनैं पांच गांवां सैत सीवांटां बताई ॥४६८॥
दोलै जां दिनां में बैर जैसा को चितार्यो ।
भोपतसिंघजी नैं दगा सूं आंणि मार्यो ॥४६९॥
सत्रासै पचावन साल बीतां वैर लीनां ।
भोपतसिंघ जी का गांव पांचौं दाब लीनां ॥४७०॥
जां दिनां षंडेलै भूप ऊदो कमजोर ।
कासली ठिकांणैं राव दीपां को तोर ॥४७१॥
दिल्ली सैं नूरदी नबाब चालि आयो ।
भाई अबदूषांन जी को मात जायो ॥४७२॥
पूगि बादिसाहां की लिषावटि यों ठिकाणां ।
सारा साथि जांणां फेरि दिल्ली भी पुगाणां ॥४७३॥
सारा नूरदो कै तो ठिकांणां साथि हूगा ।
दोनूं कासली सों दोल जैतो जाय पूगा ॥४७४॥

साबक राठौड़ कछवाहां की जाति।
मारवाडी को ले मुकाम सांमलाति ॥४७५॥
राठोडां मनांणां वूडसू का यों कहाया।
वैरी नूरदी की साथि सेषा बंस आया ॥४७६॥
एती बात बोल्या दोल जैता नैं सुणाई।
जांणि बासते नें गंज दारू में छिपाई ॥४७७॥
दोलो जैत दोनूं सिंघ रूपी है दिषाया।
आधी रात बीतां नूरदी कै सीस आया ॥४७८॥
तंबू फाड़ि सूता नूरदी नैं जाय मार्‍यो।
दूजा नूरदो का भांणजा नैं भी सिघार्‍यो ॥४७९॥
राजा रावजी का बैर दोनूं काढि आया।
जूना गीत दोहा चारणां भी कै सुणांया ॥४८०॥

॥ दोहा ॥

गिलिगो भोपतसिंघ नैं, हुवो न पूर आहार।
दवलै षाधो नूरदी, उंण दिन लई डकार ॥४८१॥
दोलै बैर काढ्यो सेस माथै नोव दीनी।
सीकरी सैर होबा की तयारी फेरि कीनी ॥४८२॥
सीकरी सूं उतराधो एक कोस गांम।
कसबा को बस्ती जगमालपुरो नांम ॥४८३॥
जैंके मांय पोता हरिराम का रहै छा।
घोडा छोडि सूनां षेत सारा भेलि देछा ॥४८४॥

नेपै का उजाडा जांणि जांनैं काढि दीनां ।
तीनूं गांव यां का फेरि दोलै दाब लीनां ॥४८५॥
दोलतसिंघजी कै धाम सेवो दूठ जायो ।
रायां साल बंसी तेज पीढ्यां में सवायो ॥४८६॥

इति श्री कविया गोपाल कृत पीडी वार्तिक दौलतसिंघ समाप्ती

सेवसिंघ यथा

सेवै राज सत्रासै यकांयन साल पायो ।
सत्रासै तरेपन सैर सीकरी नैं बसायो ॥४८७॥
चोपडि का बजारां हाटि किल्लो कोट षाई ।
सारी येक सागै नींव चेजा की चलाई ॥४८८॥
किल्लो राज सोभा धाम सारो पारि पायो ।
रैणी कोट षाई सैर आधोकेक आयो ॥४८९॥
ओधादार बोल्या आंणि पैसो तो निमडिगो ।
षाई कोट चेजा को समूचो कांम अडिगो ॥४९०॥
जां दिनां में आगरो का सेठ की कतार ।
पांच हजार मण चांदी का भार ॥४९१॥
सीकर सौं नजीक आगरा कै पंथ आई ।
सेठां जांणि मंदी देस पच्छिम सूं मँगाई ॥४९२॥
हेरू एक सेवानैं अगाऊ षबरि दीनी ।
चांदी लूंट सीकर का किला में नांष लीनी ॥४९३॥
आगरा को साहूकार दिल्ली सैर आयो ।
साहां कै पुकार्‍यो सारज्यांनी की उठायो ॥४९४॥

ज्यांनीसार दिल्ली सों हजारां फोज लीनीं ।
केई तोप घोडां की अगाऊ पेल दीनीं ॥४६५॥
दिल्ली सैं सताबी फोज सीकरि सैर आई ।
कासोदां अगाऊ आंणि सेवा नैं सुणाई ॥४६६॥
दीपा रावजी नैं कासलो सूंभो बुलायो ।
सादो भोजबंसी उदैपुर सूं चालि आयो ॥४६७॥
पोता लाडषांन जी को कणवारी गांम ।
सूरबीर सेषावत रतनसिंघ नांम ॥४६८॥
सेवसिंघ सेषावत भायपो बुलायो ।
ज्यांनीसार दिल्ली सों सताबी फोज ल्यायो ॥४६६॥
च्यारयों मेर कूवा सूर हाडां सूं भरायो ।
कोसां च्यारि तांई नीर बालू सों बुरायो ॥५००॥
ज्यांनीसार पाणी की अगाऊ जांणि पाई ।
पांणी काज हल्लो बोलि भूमि नैं षुदाई ॥५०१॥
पांणी बावडी में पाय हाथी नैं बठायो ।
हाथी छोडि ज्यांनीसार डेरां चालि आयो ॥५०२॥
डेरां बैठि बोल्यो तोपषांनै जाय कैणूं ।
किल्लो आज घेरो कालि हल्लो बोलि देणूं ॥५०३॥
पती बात बोल्या फेरि किल्ला गिर दबाया ।
च्यारयौं मेर फोजां तोपषानां नैं फिराया ॥५०४॥
प्यादां की लडाई पूठि घोडा फेरि सैंठा ।
नीसार सागै मोरिचा में आंणि बैठा ॥५०५॥

तोपां बादिसाही की लडाई फोज लागी ।
दोनूं फोज किल्ला में सतेजी सोर जागी ॥५०६॥
एकै मास लोनी सोर सीसा की लडाई ।
दूजै मास किल्ला सौं नजीकि फोज आई ॥५०७॥
ज्यांनीसार झोक्यो जीवसागै आप आया ।
किल्ला की सफीलां मोरिचां नैं सांकडाया ॥५०८॥
सादुल्लो सलेधीसिंघ सेवा तीन आया ।
सारा मोरिचां नैं काटि किल्ला सौं उठाया ॥५०९॥
मोरिचां में षेति पड्या सो कै उनमांन ।
हिन्दू बाईस बीस और मुसलमांन ॥५१०॥
ऐसी भांति ज्यांनीसार हल्ला सात कीनां ।
सोकरिनाथ सेवै फेरि पाछा मारि दीनां ॥५११॥
ज्यांनीसार जी का भ्रात फेर्‌यौं एक आयो ।
दिल्ली पंथ फौजां भी हजारां साथि ल्यायो ॥५१२॥
सूबादार सूबा बिटली का सूं चलायो ।
बाजूषांन नांमा फेरि फोजां लेरि आयो ॥५१३॥
ज्यांनीसार सूबादार दोनों रीस कीनी ।
दूणादूण फोजां की लड़ाई फेरि लीनी ॥५१४॥
सीकरिनाथ सेवै दांन में तो भूमि दीनी ।
दाबी भूमि जेती बादिसाहां को न दीनों ॥५१५॥
दो सै तीस हिन्दू लोग सारा कांमि आया ।
सीकरि षेत सोलासै मुसल्ला घोर पाया ॥५१६॥

जेता ही दिनां में गंजनी को जोर ज्यादा ।
बौबरा का दरा सों बार आंणी का यरादा ॥५१७॥
फोजां लेर षेवर का दरा कै बार आया ।
सूबादार बांका बादिसाहां नैं लिषाया ॥५१८॥
ओरँगजेब दिल्ली बादिसांहां कूंच कीनां ।
दिल्लीनाथ ज्यांनीसार कों भी तेड लीनां ॥५१९॥
ज्यांनीसार फोजां बादिस्याही में मिल्योगो ।
सूबादार सूबा विटली का नैं चलोबगो ॥५२०॥
सेबै भूप सूवां बादिसाही नांव पायो ।
सीकरि सैर किल्लो कोट सारो ही बणायो ॥५२१॥
जैपुर का धणी नैं जंग सारो जांणि पायो ।
राजी होय जैसे भूप सेवा नैं बुलायो ॥५२२॥
जैपुर स्रांणि सेवै कायदाई बात कीनी ।
जैपुर भूप जैसै तीन वारी दादि दीनीं ॥५२३॥
राजा जोधपुर को जां दिनां में अभैसिंघ ।
जैपुर में सवाईबाजी छोटो जैसिंघ ॥५२४॥
दोनूं ही ठिकाणां कागदां सूं बात कीनीं ।
दोनूं ही ठिकाणां में सगाई धाम लीनीं ॥५२५॥
अभैसिंघ जी तो जोधपुर सैं चालि आया ।
जैपुर सैं राजा जैसिंघ जो सिधाया ॥५२६॥
मारवाडी धरती में पोकर जी धाम ।
दोनूं ही राजा आणीं कीनां मुकाम ॥५२७॥

दोनों ही पोकर में दान पुन्नि कीनां।
दोनों ही बेद की म्रजाद ब्याहि लीनां ॥५२८॥
बाई जैसिंघ जी की अभानैं विवाही।
अभैसिंघ जी की भैन ब्याही जैसाही ॥५२९॥
दोनां ही राजा कूंच साथि बोल दीनां।
दोनां मोजाबादि में मुकाम आंणि कीनां ॥५३०॥
मोजाबादि केई मास बीता ये रहाआ।
सांवण का महीना चत्रमासा फेरि आया ॥५३१॥
सांवण का दिनां में साल वर्षा छी अतोली।
सारां ही दिनां में इन्द्र आंष्यां भी न षोली॥५३२॥
राजा जोधपुर का साथि साबक राठोड़।
ऊँनैं बंस कूरमकी फोजां सरजोड ॥५३३॥
दोनूं फोज ही में आगि चूला में न पाया।
सेवै नाथ सीकरी कै कडाहां नैं मँगाया ॥५३४॥
तंबू बांस ऊँचा तांणि डेरां में चढ़ाया ॥५३५॥

॥ दोहा ॥

बांस बडा डेरा बडा, दिनां बडेरा होय।
सेषावत सिवसिंघ सों, किरतब बडो न कोय॥५३६॥
जूँनी लेकनांतां तेल सींची आगि जाली।
रुई राल सारी तेल घी सों सींचि राली ॥५३७॥
फोजां में अषंडी धार ऊँनैं यन्द्र छूटो।
ऊँनैं नाथ सीकरि को जिवांरी भाग तूठो ॥५३८॥

षाटो बीच फलका मांस बाटी दाल् न्यारी।
सावडदी समोसा मूंग चांवल् की तयारी ॥५३९॥
सेवा नैं रसोईदार सारा आंणि बोल्या।
मोजाबादि हास्यां सौं मंगाया बांज चोल्या॥५४०॥
पांते बैठबाकी बार नौबति नैं धरावो।
सेवो एम बोल्यो लोग आवै सो जिमावो ॥५४१॥
सीकरि का धणीं सौं भूमि दोलतवान सैंठा।
सो भी सेवसिंघ जी कै रसोडै आंणि बैठा ॥५४२॥
भाई भी सगा भी बराबरी का जींम लीनां।
जैसौं चिराकां का चांदणां नैं बंध कीनां ॥५४३॥
दोनूं फौज जैपुर जोधपुर की नैं जिमाई।
सारां ही ठिकांणां साहि दिल्ली कै सराई ॥५४४॥
जैपुर जोधपुर कै नाथ दोनां बात जांणी।
सोभा श्री मुषांसूं सेवसिंघ जी की बषाणीं॥५४५॥
केई चारणां भी ग्रन्थ पोथ्यां मैं बणाया।
दोहा गीत छपै छंद सारा ही सुणाया ॥५४६॥

॥ दोहा ॥

मिलिया मोजाबादि में, दुय राजा दल दोय।
सेषावत बधियो सिबो, रुपयां दान रसोय॥५४७॥
पांन संधां धिनि धिनि पहल, धांन रंधां धिनि धिन्नि।
सेषावत सित्रसिंघ रै, द्वारि जिगन दिन दिन्नि॥५४८॥

जैपुरनाथ सेवा कै रसोडै सीर कीनां ।
जैपुर का रुपैया सो हमेसा बांध दीनां ॥५४६॥
सीकरि में जैपुर में देस परदेस ।
लागै जे मांमला में भर ल्यो हमेस ॥५५०॥
कूरम राठोड मोजाबादि कै मुकांम ।
साबक में सेवासिंघ जी को सरनांम ॥५५१॥
राजा मारवाडो फेरि जोधाणै सिधायो ।
जसो भूप जैपुर सेव सीकरि सैर आयो ॥५५२॥
थोड़ा सा दिनां में भोज बंसी दोय हैता ।
भायप उदयपुर की बारवां कै मांय रैता ॥५५३॥
जांनै कांमषांनो षूनवाडा कै मराया ।
सादो सेवसिंघ जी बैर लेवानैं चलाया ॥५५४॥
माथै कामषांन्यां कै बुराई बैर जाग्यो ।
जाणी कै फतैपुर झूंझुणूं कै बुरो जोग लाग्यो ॥५५५
हाता मांवडा में करामाती तूर आसा ।
सादूलो सलैधीसिंघ जैं का छा नवासा ॥५५६॥
आसो तूर बोल्यो षम सादा राज षाजे ।
देसां में सलेधीसिंध तूं भी षोसि षाजे ॥५५७॥
आसा की जुबांनी को सईचो आंणि लाग्यो ।
सेषां कांमषांन्यां कै नवीनूं बैर जाग्यो ॥५५८॥
सारा कांमषांनी बंस मोटे राव पोता ।
हिन्दू छा सदा सूं चाहवाणी कूम होता ॥५५६॥

दिल्ली बादिसाहां दीन आपां कै मिलाया।
कलमां भी भराया साथ षाणां भी षिलाया॥५६०॥
आदि चहुंवाण रजपूती का तोर।
पाछै मुसलमांन बादिसाही का जोर॥५६१॥
पीढी पांच सातां में सतेजा नैंक होया।
दूजै क्यांमषां जो बैठि बडां नैं डबोया॥५६२॥
दूजो कांमषांनो नांम जायो फतैपुर में।
सादो सेवसिंघ जी दोय रायां साल घर में॥५६३॥
सादूलो सलैधी उदैपुर सा चालि आया।
सीकरि भेजि कागद सेवसिंघ जी नैं बुलाया॥५६४॥
तीनूं सांमलाती ह्वै फतैपुर भूमि आया।
दूजै क्यांमषांजी लोग सांमांही षिनाया॥५६५॥
जां दिनां फतैपुर की तूटी सिरकार।
भायपो फिरावान एक काजी कांमदार॥५६६॥
काजी लोग लीनूं साथि कोसां तीन आयो।
जैनैं तो सलेधीसिंघ आतां ही दबायो॥५६७॥
काजी बीड झोडा कै कनारै पांव रोप्या।
सादूलो सलेधीसिंघ सेवो फेरि कोप्या॥५६८॥
सादे लोग सारा कामषांनी का भजाया।
ग्यारा कांमषानी एक काजी कांमि आया॥५६९॥
सेषा कांमषांनी यों कनारै बीड जूट्या।
आतै पांच गांवां नैं सलेधीसिंघ लूट्या॥५७०॥

सादो सेवसिंघ जी फेरि दोनूं साथि आया।
दोनां नैं नबाबां कासली का जांणि पाया ॥५७१॥
केसू को सुषा को बैर आपां काढ़ लीनूं।
अब तो यां नबाबां नैं ठिकांणां जाब दीनूं ॥५७२॥
कोई आंणि दिल्ली सूं चिगथ्यो काढ़ देसी।
दोनूं ही ठिकांणां सारिषा छै दाब लेसी ॥५७३॥
आपां दोय जांणां बात कोई को न कैंणां।
दोनूं ही ठिकांणां हाथि लाग्या दाब लेणां॥५७४॥
सेवा तू फतैपुर कै ठिकांणै राषि दायो।
मेरे सींव नेडे झूंझणूं को राज आयो ॥५७५॥
कोई मे पडै जो कांम सोही नैं बचावो।
सारा भायपा नैं साथि बेगा लेर आवो ॥५७६॥
सादो सेवसिंघ जी तो ठिकांणां नैं चढ्याया।
कोई भी न जांणैं एम सल्ला धाम आया ॥५७७॥
सत्रासै सतावन साल ही को चैत आयो।
दिल्ली मैं महंमद बादिस्याही राज पायो॥५७८॥
झूंझणूं रुहिल्लेषां नबाब कांमषांनी।
भांयां कामषांनी को दुहाई को न मांनीं ५७९॥
सागै मातजायो एक लालीषां बदलिगो।
सो भी कांमषांनी भायपां सूं जारि मिलिगो॥५८०॥
मानुल्ला मदारीषांन बडवासी गांम।
साठि साठि दोनां कै घोड़ा सरनांम ॥५८१॥

कांटी कै अलीषां गांव न्यारो दाब लीनूं ।
पैसो भी धतूरी कै सलाबतषां न दीनूं ॥५८२॥
बादूषांन बादी गांव षेडी को अन्याई ।
चोरी धाडि में तूषार जांणिकै कराई ॥५८३॥
तारू कोलस्या कै भी जमी नैं दाब लोनीं ।
एवजषां भगैरै जाटणी नैं षोस लीनीं ॥५८४॥
घासीषां बजावा कै अनीती जोर कीनी ।
हाल्यां झूंझणूं कै सैर आयो लूट लीनीं ॥५८५॥
पैसो मांमला को एक एकै भी न दीनूं ।
सारो झूंझणूं को देस चोरां लूट लीनूं ॥५८६॥
बेगम नैं रुहिल्लेषांन सल्ला में कहाया ।
सारा कामषांनी षूंन मेरा का तिसाया ॥५८७॥
मेरी तो दुहाई देस मां से दूर कोनीं ।
सारां झूंझणू को देस भूमि दाब लीनीं ॥५८८॥
अब तो झूझणूं कै मांहिं सादा नैं बुलासौं ।
किल्लो सूंप देस्यां षूबषांणे को दिल्लासौ ॥५८९॥
सारी कूंम जांणो कांमषान्यां की न कारी ।
बीबी फेरि बोली बात चोषी थे बिचारी ॥५९०॥
सादूलो सलैधी झूंझणूं कै सैर आया ।
सुणतांहीं रुहिलेषांन किल्ला में बुलाया ॥५९१॥
सारी सैर किल्ला जाबतां की बात कीनीं ।
सादा नैं रुहिल्लेषांन कूंची सौंप दीनीं ॥५९२॥

कागद भेजि सादै सेवसिंघ जी नैं बुलाया ।
सादा भोज बंसी भायपां का फेरि आया ॥५६३॥
पैली सैर किल्ला जाबताई सों रषाया ।
पाछैं झूंझणूं का कांमदारां नै बुलाया ॥५६४॥
सारां कामदारां नैं किला में रोक दीनां ।
सादै रोकि सारां नैं रुपैया लाष लीन ॥५६५॥
सारा सैर बासी सेठ लोगां नैं बुलाया ।
हाली का रुपैया लाष हुंडी लेर आया ॥५६६॥
राष्या सादूलसिंघ घोड़ा रजपूत ।
बांध्यो राज कारिज नैं सारो मजबूत ॥५६७॥
सादा नैं रुहिल्लेषांन फेर्यो दादि दीनां ।
सादा कामषांन्यां जोरि ज्यादा फैल कीनां॥५६८॥
सारां ही मतासों षासां नैं दाब लीनां ।
पैसा मांमला का पांच बरसां में न दीनां ॥५६९॥
मोद्यां नैं बजाजां सैर कां नैं बरज दीनां ।
बाण्यां रोसनी का तेल सारा बंध कीनां ॥६००॥
सारी बाति मेरा कायदा नैं तो मिटाया ।
सारा कामषान्यां राज सीगा नैं घटाया ॥६०१॥
सारां को जुबांनी एक लासा नैं बैठाणां ।
गादी झूंझणूं की सैं रुहिल्ला कों उठाणां ॥६०२॥
न्यारो ले रुहिल्लाषांन बोल्यो बात सादा ।
मेरै भायपा कै जीव लेणां का यरादा ॥६०३॥

सादा नैं रुहिल्लाषांन बेटो कै वणायो ।
बीबी सेत दोनां आप गोदी में बठायो ॥६०४॥
बेटो गोदि सादा नैं रुहिल्लाषांन लीनूं ।
सारो देस किल्लो भूंभणूं को सूंप दीनूं ॥६०५॥
सादो काढि दै सो देस बारै ऊठि जावै ।
कोई कामषांनी भोड करवा भी न पावै ॥६०६॥
राजी ह्वै रुहिल्लेषांन सारी बात कीनीं ।
कोई को न दावो या लिषावटि मांडि दीनीं ॥६०७॥
छानां की लिषावटि और कोई नां पिछाणैं ।
सादो कै रुहिल्लेषांन बीबा तीन जाणैं ॥६०८॥
सादै या लिषावटि जापता सूं मेल दीनीं ।
सारां कामषांन्यां नैं बुलास्यां धाम लीनीं ॥६०९॥
कागद कामषांनी जाति सारां नैं लिषाया ।
कागद बांच लीनां फेरि कोई भी न आया ॥६१०॥
मानुल्ला मदारीषांन बडवासी गांम ।
भाई दोय आया और बटिगा तमांम ॥६११॥
मानुल्ला मदारीषांन दोनां नैं मिलाया ।
पैसा मांमला का फैल सारा ही मिटाया ॥६१२॥
सादै कामषांनी नैं जणायो हेत ज्यादा ।
भाई करि बोलै गांठि लेणी का यरादा ॥६१३॥
मानुल्ला मदारीषांन दोनूं गांठ लीना ।
पाछै भूंभणूं का भायपां नैं जोर दीनां ॥६१४॥

सादै फोज लीनी साथि सेवा नैं बुलायो ।
पैली कोसल्या नैं धूलधांणीं ज्यों मिलायो ॥६१५॥
रोहेली रजांणी कांटि तीन्यूं गांव लूटया ।
तीन्यूं कामषांन्यां का ठिकाणां साथि छूटया ॥६१६॥
घासीषां बजावा कै लड़ाई षूब लीनी ।
चिलासी वजावो कांमि आंयां भूमि दीनीं ॥६१७॥
सादै भूमि सारा कांमषांन्यां सैं छुडाई ।
सारै फेरि दीनी षां रुहिल्ला की दुहाई ॥६१८॥
भूमि छोडि सारा कांमषांनी जाति भागा ।
सेषा बंस सादो सेवसिंघ जी आभि लागा ॥६१९॥
धरती झूंझणूं की कांमषांनीं बंस जाया ।
मानुल्ला मदारी गांव बड़वासी रहाया ॥६२०॥
सादो फेरि पाछो झूंझणूं कै देस आयो ।
सारै देस भूमि जाबताई में रहायो ॥६२१॥
घोड़ा ऊँट रोकां का षजांनां लूट लीनां ।
सारां ही रुहिल्लेषांन जी कौं आंणि दीनां ॥६२२।
राजी ह्वै रुहिल्लेषांन बोल्यो एम सादा ।
यां के झूंझणूं को राज लेणीं का यरादा ॥६२३॥
यां को दाव लागां झूंझणूं को राज षोसी ।
मानुल्ला मदारी नैं बिगाड्यां चैन होसी ॥६२४॥
मानुल्ला मदारीषां किला कै बीचि आया ।
गादी कूंट दाबी बैठ हुका भी भराया ॥६२५॥

सादो एम बोल्यो आप हूका तो न ल्यावो ।
आवो तो सलामो होर दूरा बैठि जावो ॥६२६॥
बोल्यो षांन मानुल्ला हिया में रोस कीनूं ।
सादो बोलतां की साथि षारो जाब दीनूं ॥६२७॥
गादी तो हमारी छै तुमारी नांहि सादा ।
बारा महिनां सैं क्यों बध्यो छै जोर ज्यादा॥६२८॥
तेरा जोर ज्यादा को सलीको लागि जासी ।
किल्ला भूंभणूं का में कदे भी तूं न आसी॥६२९॥
बोल्यो एम सादो जीवका नैं थे गमास्यो ।
सारा कामषान्यां सांमलाती होय जास्यो॥६३०॥
बोल्यो यों मनुल्लाषांन कोई एक जासी ।
दोन्यूं तेग एकैं म्यांन मांहीं तो न मासी ॥६३१॥
सैषा कांमषांनी कूंम दोनूं एम रूठा ।
दोनूं ही विवादी यों विवादो धारि ऊठा ॥६३२॥
मांना कांमषांनी कै लडाई का यरादा ।
ऊंनैं बीर सादा कै सवाया जोर ज्यादा ॥६३३॥
मानुल्ला मदारीषां ठिकाणां नैं चढ्याया ।
घोडा कामषांन्यां का मनुल्लोषां बुलाया॥६३४॥
घोड़ा पांच सै तो कांमषांनी लेर आया ।
घोड़ा आठ सै नैं लेर सादै भी चलाया ॥६३५॥
दोनूं ओड़ही सैं तेग दोनां काढ लीनीं ।
दोनूं ओड घोड़ां को सतेजी बाग लीनीं ॥६३६॥

बोल्यो यों मनुल्लाषांन सादा कैथ पावै ।
एती बार होगी तेग नीचे भी न आवै ॥६३७॥
जोरो नांव जैंको एक सादा अंस जायो ।
मेरा नांम सादा कैर जातानैं बुलायो ॥६३८॥
तेरा नांम सादा तो अभी लो चोट झेलो ।
पंजै जोर पाया तो सिरोही दाव पेलो ॥६३६॥
ऐतो बोलि मानुल्लाषांन तेग बाही ।
जोरै सादूलासिंघ जी कै भी सराही ॥६४०॥
बोल्यो सादूलसिंघ भाई मानुल्ला ।
वालक पै तेग बाही सो कुन्याय सल्ला ॥६४१॥
बालक पुकारि कहि मेरा नांव सादा ।
मेरे जब तेरा जीव लेणें का यरादा ॥६४२॥
एती बोलि मानूल्लाषांन सेल वाया ।
ताही स्याति सादै सेल आता नैं बचाया ॥६४३॥
जोरै तेग मानुल्लाषांन पै चलाई ।
ताहीं तेग मानुल्लाषांन मौत पाई ॥६४४॥
जोरावरसिंघ पै मदारीषांन आयो ।
हूरां का बिमांणां आसमांणि लोक छायो ॥६४५॥
सादै कामषांनी कै कलेजै सेल दीनूं ।
आतां ही मदारीषांन कूं भी मार लीनूं ॥६४६॥
मानुल्ला मदारीषां न दोन्यूं भूमि पोड्या ।
भूमि पोडतां ही कांमषांन्यां षेत छोड्या ॥६४७॥

मानुल्ला मदारीषांन कौं भी मार लीनां ।
सारी झूंझणूं का यों निकंटी राज कीनां ॥६४८॥
सादो एम मांनुल्ला मदारी मारि आयो ।
छाती सैंरुहिल्लेषांन आतां हीं लगायो ॥६४६॥
सारी बात सादै चाकरी तो यों बजाई ।
सारै देश गांवां पां रुहिल्ले की दुहाई ॥६५०॥
सारा कांमषांनी काढि गांवां नैं बसाया ।
दिल्ली सैं तकादा मांमला का फेरि आया ॥६५१॥
सादूलै रुहिल्लेषांन जी नैं यों सुणाया ।
दिल्ली सैं तकादा मांमला का जोरि आया॥६५२॥
दिल्ली कों रुहिल्लेषांन बोल्यां बेग जाणां ।
पैसा मांमला का सांवठा छै सा चुकाणां ॥६५३॥
सारा ही रुपैया कासली का बांध लेणां ।
कागद वांचतां की साथि हुन्डी भेज देणां ॥६५४॥
दिल्ली कों रुहिल्लाषांन जी कूंच कीनां ।
सारा लोग हिन्दू छा जकां नैं साथि लीनां ॥६५५॥
गैला में रुहिल्लेषांन जी तो मौत पाया ।
देही झूंझणूं नैं फेरि पाछी लेर आया ॥६५६॥
सादूलै रुहिल्लेषांन जी का सोच कीनां ।
सारै मोलब्यां नैं ले जमो नैं सूंप दीनां ॥६५७॥
षोषांसा कुरानां का पढैयां नैं बुलाया ।
चालीसा समेती दांम ज्यादा ही लगाया ॥६५८॥

आपै भापयां कै जोर सारी बात सैंठो ।
सादौ झूंझणूं की राजगादी फेरि बैठो ॥६५९॥
सारा कांमषांनी जार दिल्ली में पुकारया ।
सादूलै रुहिल्लेषांन जी कों मोसि मारया ॥६६०॥
सादै झूंझणूं का राज सारा दाब लीना ।
सारा कांमाषानी देस बारै काढ दीनां ॥६६१॥
दिल्ली सैं तकादा झूंझणूं नैं फेरि आया ।
दिल्ली नाथ दिल्ली सैर सादा नैं बुलाया ॥६६२॥
बोल्या यों महंमद बोलि हिन्दू जाति सादा ।
दाब्या झूंझणूं का राज तेरा क्या यरादा ॥६६३॥
गादी झूंझणूं की तो रुहिल्लेषांन दीनी ।
दीनीं बादिस्यांहां नैं लिषावटि बांच लीनी ॥६६४॥
बोल्या साहि कोई मांमला कों जो चुकोवै ।
सो ही कामषांनी राजा सेषा वंस पावै ॥६६५॥
सारा मांमला का दांम सादै ही चुकाया ।
दिल्ली की सलांमी झूंझणूं कै फेरि आया ॥६६६॥
ऐसी भांति सादै झूंझणूं का राज पाया ।
रीमां पुन्न कीनां भूप दानी नांव पाया ॥६६७॥
ग्यारा गांव हाथी चारणां नैं दान दीनां ।
तेरा गांव जूनां ब्राह्मणां नैं पुन्नि कीनां ॥६६८॥
भाटां नैं चारि पाँच मंदिरां चढाया ।
च्यारौं कूंट कीर्ती का प्रवाह सा बढ़ाया ॥६६९॥

बेटा सादूलसिंघजी कै पाँच जाया।
पांचां हीं पांडवां से मांन पांण पाया ॥६७०॥
जोरावरसिंघजी का चोकडी ठिकाणैं।
किसनसिंघजी का षेतडी में जगत जांणैं ॥६७१॥
जाया केहरी का भी बिसाऊ राज पायो।
नोलै नोलगढ नैं फेरि न्यारा ही बणायो ॥६७२॥
सारी झूंझणूं नैं च्यारि पांत्यां राष लीनी।
पांति जो अषा की च्यारि पांत्यां बांट लीनी॥६७३॥

॥ दोहा ॥

किशनूं १ जोरो २ केहरी ३, सषो ४ नवल ५, अणबीह।
पांच सरीषा ऊपज्या, सादूला घरि सींह ॥६७४॥

इति श्रीकविया गोपालकृत पीडी वार्तिक
सादूलसिंघ झूंझणूं समाप्ती ॥

राज लब्ध सेवसिंघ फतैपुर राज आगमन यथा

॥ वार्ता ॥

ऐसी भांति सादै झूंझणूं को राज लीनूं।
सेवै फतैपुर नैं दाबवा को दाव दीनूं ॥६७५॥
छोटो क्यांमषांजी फतैपुर में एक जाबो।
दिल्ली सवाई क्यांमषांजी भी कहायो ॥६७६॥
असमद षांनजादै ताहि बेटी ब्याह दीनीं।
पाछै एक तेली की लुगाई षोस लीनीं ॥६७७॥

बीबी नैं बिहारी प्यार तेलणीं सों लगायो।
छोटै क्यांमषांजी म्हैल तेलणीं कै बणायो ॥६७८॥
म्हैलां राति दिन में एक तेलणीं कै रहावै।
तेलणीं नैं घडी भी छोडि बारा को न आवै ॥६७९॥
बीबी षांनजादी नैं कुली की आस दीनीं।
पाया ढोलणींकां कै जकै नैं बांध लीनीं ॥६८०॥
बेटो एक भाई मीरषां कै पेटि जायो।
केई बार जैनैं आप बेटो भी बणायो ॥६८१॥
बेटो एक तेलणीं कूंषि जायो छो नवीनूं।
पैलां गोदि लीनूं छो जकैं नैं दूरि कीनूं ॥६८२॥
दोनूं बाप बेटां नैं किलामों काढ दीनां।
जांनैं मारि लेबा का यरादा धारि लीनां ॥६८३॥
भाई मीरषां जी नांम बेटा क्यामाब।
दोनां नैं किल्ला मां काढ्या नवाब ॥६८४॥
सारा कांमषांनी एम बोल्या राज षोसी।
छोटो क्यांमषांजी राज गादी नैं डबोसी ॥६८५॥
एता में बुलावा साबकां नैं फेरि आया।
आज्यो फतैपुर नैं क्यांमषांजी बंस जाया ॥६८६॥
कागद में लिषाई बांचतां हीं बेग आज्यो।
अस्मदषां हरांमी साथि आवै तो न लाज्यो ॥६८७॥
सारा कांमषांनी फतैपुर कै सैर आया।
सारां साथि अस्मदषांनजी को भी लियाया॥६८८॥

सारा कांमषांनी भायपां नैं तेड लीनां ।
अस्मद्‌षांनजी नैं फेरि बडबा भी न दीनां ॥६८९॥
किल्ला मैं समूंचा कांमषान्यां नैं बुलाया ।
गाद्दी का नजीकी बोलि सारां नैं बैठाया ॥६९०॥
चाहि स्याति तैलणीं कूंषि जाया नैं बुलायो ।
सारां नैं सबाई कांमषांनी यों कहायो ॥६९१॥
षांणैं सांमलाती साषजादा नैं । बैठाणूं ।
सादी भी कराद्यो हेरि चोषो सो ठिकाणूं ॥६९२॥
सारां का हिया मैं बास तेसी जाग ऊठी ।
सारां ही बिचारी बात बोल्या अपूठी ॥६९३॥
अस्मद्‌षांनजी कौं आप किल्ला मैं बुलाद्यो ।
राजी होर दोनूं बाप बेटी नैं मिलाद्यो ॥६९४॥
फेस्यौ आप ईनैं गोदि बीबी की बठांणूं ।
सारा सांमलाती कूंम चोषी मैं ठिकाणूं ॥६९५॥
एती बात सुंणतां कांमषांजी रोस कीनां ।
गाली बोलि सारां नैं किल्ला मां काढ दीनां ॥६९६॥
सारां कामषांन्यां क्यांमषांजी नैं दकाल्या ।
तैसौ फतैपुर का क्यांमषांजी राज चाल्या ॥६९७॥
औरों क्यांमषांजी भी जुबांनी गैर बोली ।
डेरै आंणि घोडां जीन कमस्यां भी न षोली ॥६९८॥
जैपुर सैर सारा कांमषांनी कूंम जांणां ।
जैपुर जार छोटा क्यांमषांजी नैं उठाणां ॥६९९॥

सारो जोर जैपुर को फतैपुर थांन लेणां।
तेलण कैं समेति क्यांमषां नैं काढि देणां ॥७००॥
सारा कांमषांनी सांमलाती है चलाया।
सीकरि आवतां ही सेवसिंघ जी सूं मिलाया॥७०१॥

॥ दोहा ॥

क्यांमल कुल धूंकल कियो, किण पै निजरि करूर।
आज फतैपुर ऊथपां, जैपुर फिसी जरूर ॥७०२॥
सेवो दोलतसिंघरो, बोले यसा जवाब।
पकडि रथां नैं सूंपद्यो, तेलणि सहित नवाब॥७०३॥
गाडोदा गांवका जमालषां नैं बोल्या।
सेवसिंघ सेषावत आसमांण तोल्या॥७०४॥
नांमदार भूंमि वेचि राम षांति डोकी।
राजतषां नेठवै कस्योडी बात रोकी॥७०५॥
चूडी वेस वांका फेरि बातां नै बणांई।
असमदषां मिरिंडि गांव कां नैं सुणांई॥७०६॥
सारां कै सेवसिंघजी की दाय आई।
सारी जीवका की साथि ताजीमां लिषाई॥७०७॥
कोई फेरि बदलै सेवसिंघजी यों लिषाई।
सो ही दीन बारै पीर षाजे की दुहाई॥७०८॥
कोई भी नवांबां सांमलाती होर आवै।
सो ही कांमषांनी भायपां मां दूरि थावै॥७०९॥

सेवा सांमलाती कांमषांनी कूंम आसी ।
कोई भी नबांबां सांमलाती है न जासी ॥७१०॥
सेबो एम बोल्यो सांमलाती को न लेषो ।
आवो तो भलांही दूर ऊभा ष्याल देषो ॥७११॥
सेवा सांमलाती कामषांनी कूंम होस्यां ।
छोटा क्यांमषांजी की नवाबी राज षास्यां॥७१२॥
चूडी बेल बांका सैत मोटै राव जाया ।
सारां कांमषांनी तो ठिकांणां ऊठि आवा ॥७१३॥
सीकरिनाथ सेवै फेरि सादा नैं बुलायो ।
पोतो लाडषांजी का गुमांनीसिंघ आयो ॥७१४॥
बांटो क्यों गुमांनीसिंघजी सौं बोथ लीनूं ।
पाछै फतैपुर नैं दाबि बांटो दूरि कीनूं ॥७१५॥
सीकरिनाथ सेषो फेरि फोजां लेरि आयो ।
मांडोली फतैपुर बीचि षागां षेत छायो ॥७१६॥
छोटै क्यांमषांजी भी यतां का आवकीनां ।
तेल्यां का पिनारां का सवारां साथि लीनां ॥७१७॥
ष्यादी चाकरी का डील ढाई सै करै छा ।
गावां में तकादै जारि पेस्या ऊबरै छा ॥७१८॥
सारो मालिकाई में पिनारा मालि षायो ।
बाकी ऊबस्या सो माल ऊती में गमायो ॥७१९॥
तेल्यां कै पिनारां कै दुसाला ओढवानैं ।
गालीचा झरोषां में बिछात्यां पोढबानैं ॥७२०॥

सारो उपज्यो सो माल तेल्यां नैं षषायो ।
कोई कांमषांनी सेर आटो भी न पायो ॥७२१॥
तेल्यां नैं पिनारां नैं फकीरां नैं बुलाया ।
सारा सेवसिंघजी सों लड़ाई लेण आया ॥७२२॥
सारी तीन तोपां की तयारी एक फूटी ।
हाथी पै नगारो मेल्ही कोरी चाम कूटी ॥७२३॥
साडा तीन सै तो बाज ग्यारा सो पयादा ।
जां में दोय पांती रेजगाना लोग ज्यादा ॥७२४॥
तेलो जाति सारा आवद्या में पूर आया ।
लाला ताम घोड़ां कै दुसालां का लगाया ॥७२५॥
तेल्यां नैं षवायो सो सवायो पाडि लेषो ।
हाथी क्यांमषांजी बैठ पाछे हाथ देषो ॥७२६॥
छोटो क्यांमषांजी आवद्या में बोंटि आयो ।
हेलो देर एकैं कामषांनी नैं सुणायो ॥७२७॥
आजूंणी लड़ाई क्यांमषांजी तो न जावो ।
पैलां एक बारि कांमषान्यां नैं बुलावो ॥७२८॥
चोडा की लड़ाई तो पिनारां नैं लडायो ।
बारै बैठि किल्ला का किवाडां नैं जडायो ॥७२९॥
आछ्यो भाग होसी तो कह्यांकी मांन लेस्यो ।
तेल्यां की लड़ाई फतैपुर आज देस्यो ॥७३०॥
होणीं जोग तावै कांमषानी की न मांनी ।
फोजा ले लड़ाई काज आया रेजगांनी ॥७३१॥

सादो सेवसिंघजी लाडषांनी भी गुमांनां ।
सारी बादिस्याही भूमि सूबा में न छानां ॥७३२॥
दीष्यो कांमषांनी हींदवां की बाग ऊठी ।
फेरी तेलियां भी बाग घोड़ां की अपूठी ॥७३३॥
सेवै ईं तरहँ सों कांमषांनी नैं भगाया ।
चिगंदा तोन छोटा क्यांमषांजी कै लगाया ॥७३४॥
असी भांति छोटा क्यांमषां नैं काढ दीनूं ।
पाछो फतैपुर में फेरि बडवा भी न दीनूं ॥७३५॥
तेगां तीन माथा में सजोरो सी बताई ।
जैसों क्यांमषांजी फतैपुर कै मोत पाई ॥७३६॥
कोई कै फतैपुर में जमी नैं सूंप दीनूं ।
कोई कै राम बोलै देस हांसी जाय लीनूं ॥७३७॥
सूंनूं सेवसिंघजी नैं फतैपुर सैर आयो ।
किल्लै एक फेर्यो कांमषांनी कांमि आयो ॥७३८॥
सेवै फेरि सारा कांमषान्यां नैं बुलाया ।
सारां नैं बडाई का यरादा सूं रषाया ॥७३९॥
किल्ला सैर भूमी जापताई सूं रषायो ।
गादी फतैपुर की दाबि लीकरि सैर आयो ॥७४०॥

इति श्रीकविया गोपालकृत पीछीवार्तिक फतैपुर
राजलब्ध समाप्ती ॥

॥ बादिशाही पट्टा कुरब आगमन यथा ॥

वार्ता ।

मैंमदस्याह बादिसाह दिल्ली में बताया ।
जैपुर सूं राजा जयसाह नैं बुलाया ॥७४१॥
जैसैं मांडि सीकरि नैं लिषावटि भेज दीनां ।
सेवा लैर सीकरि का धणी नैं साथि लीनां ॥७४२॥
जैपुर सूं अगाऊ लेर दिल्ली सैर आया ।
साहां अंब षासा भूप जैसा नैं बुलाया ॥७४३॥
अरजी भूप जैसैं बादिसाहां नैं कराई ।
सेवा नाथ सीकरि का बड़ा छकायदाई ॥७४४॥
थेट्ठ कासली कै जो ठिकांणैं कुरब दीनां ।
सो ही भूप सेवै बादिस्याही कुरब लीनां ॥७४५॥
सेवा नैं महंमद साहि पट्टा मांहि दीनां ।
रींगस का फतैपुर कासली का फेरि कीनां ॥ ७४६॥
सत्रासै छयासटी साल पट्टा भी लिषाया ।
जैसा भूप सेवा सेत जैपुर सैर आया ॥७४७॥
इति श्रीकविया गोपालकृत पीडी वार्तिक सेवा साह
दिल्ली कुरब पट्टा लब्ध समाप्ती ॥७४८॥

॥ षषतसिंह मल्लार जुद्ध यथा ॥

वार्ता ।

राजा जां दिनां में जोधपुर को जोरि आयो ।
फोजां बांधि बीकानेर लेबा नैं चलायो ॥७४९॥

राजा अभसिंघजी आंणि बीकानेर जूटो।
मूंतो एक बषतो जैनगर को पंथ छूटो ॥७५०॥
जैपुर सूं सवाई भूप जैसा नैं उठायो।
फोजां लेर सूधो जोधपुर कै पंथ आयो ॥७५१॥
जैपुर का धणीं कै जोधपुर को जाणि दायो।
सामूं देर फोजां वषतसिंघ जी नैं षिनायो ॥७५२॥
जैसो भूप फोजां की हरोली में षिनाया।
ऊनें सेवसिंघजी गगवाणैं षेत आया ॥७५३॥
सेवो वषतसिंघजी गगवाणैं षेत जूटा।
सेवा कै अगाडी बषतसिंघजी भाग छूटा॥७५४॥
जूनां चारणां का गीत दोहां नैं परेषो।
कोई जो न मानैं रूपगां नैं बाचि देषो ॥७५५॥

॥ गीत ॥

राडिरो अघायो सेवो वषानों चाडि।
आयो राडि हार मारूराव गया मारवाडि ॥७५६॥

॥ दोहा ॥

हाथी छाड्या हींडता, पांती करिगा पेस।
गगवाणां कै गोरिवै, बड़गड़िगा वषतेस ॥७५७॥
तेग कटारी कूंत कर, किया कसूंमल रंग।
सेवा दौलतसिंघरो, जीतिर ऊभो जंग ॥७५८॥

॥ गीत ॥

बिढंतां बार कारारी बषतो।
गिरधारी नैं मेलि गयो ॥७५९॥

जां दिनां बणायां चारणां का गीत देषो ।
सेवो पाटि सीकरि कै बिजाई राव सेषो ॥७६०॥
ऐसी भांति सेवैं बगतसिंघजी नैं भजायो ।
जैपुर कै धणीं भी भूप जैसे मोद पायो ॥७६१॥
जपुरनाथ जैसा धाम बेटा तीन जाया ।
प्याला फेर पाया एक बेटा नें मराया ॥७६२॥
माधोसिंघ माजी वागिए को जन्म लीनूँ ।
राजा जीवतां ही उदैपुर में घालि दीनूँ ॥७६३॥
माधोसिंघ जो तो उदैपुर को भांणजो छो ।
राजा ईसरा सूं छा दिनां में क्यों कतो छो ॥७६४॥
जैपुर में ईसरीसिंघ राजा राज पायो ।
माधोसिंघ राणां कै उदैपुर ही रहायो ॥७६५॥
कोई दिनां पाछै देस दिष्षण नैं उठायो ।
फोजां सामठी सी ले मलारी राव आयो ॥७६६॥
माधोसिंघजी नैं मलारीराव आया ।
जैपुरनाथ फोजां लेर सामां ही चलाया ॥७६७॥
सांगानेर सारा कूरमां नैं साथि लीनां ।
सेवा नैं लड़ाई भार सारा सौंप दीनां ॥७६८॥
आबा की जेज तो मलार भी न कीनीं ।
राजा की फोज भी बनारस आंणि लीनीं ॥७६९॥
दोनूं फोज घोड़ां की बोह सांकड़ाया ।
हाथ्यां का पांव लोह लंगरां जड़ाया ॥७७०॥

एकै साथि तोपां की लडाई होण लागी।
एकै साथि दोनूं फोज ही में सोर जागी ॥७७१॥
तोपां सात सै की तो मलार कै तयारी।
ग्यारा सै तोप श्री हजूरी को डकारी ॥७७२॥
घोडा रजपूत को कमाम तो सरीषो।
तोप की लडाई में मलार राव तीषो ॥७७३॥
बीसां तीस गोलां सूं ठठैरी तोड नांषी।
सालै तोप राजा की अचंका फोड नांषी ॥७७४॥
आयो पूठि तोपां को अगाडी नैं हकादी।
जैपुर का धणी की तोप पाछां नैं धकादी ॥७७५॥
तोपां पूठि पाछा सूं मलारी राव चांपीं।
फोजां कूरिमां की जो समूची हाल कांपी ॥७७६॥
केसोदास षत्री सेवसिंघ जी पास आया।
सारा ही प्रवाडा सेवसिंघ जी नैं सुणाया॥ ॥७७७॥
ज्यांनीसार दिल्ली पंथ फोजां लेर आयो।
ज्यांनीसार सूबादार सुध्धां तैं भजायो ॥७७८॥
छोटा क्यांमषां नैं फतैपुर में काढ दीनूं।
सारा कांमषान्यां को निकंदी राज लीनूं ॥७७९॥
ऊनैं जोधपुर सूं राव फोजां लेर आयो।
सबै गगवाणैं षेत बषता नैं भजायो ॥७८०॥
सारा जंग कीनां जै हरोली में रहायो।
जैसे भूप सेवा ढाल जैपुर को बतायो ॥७८१॥

HYDERABAD

ओरूं भी प्रवाडा जो बताऊँ जेज लागै ।

संभ सांमठी की ज्यों मलारी सोर जागै ॥७८२॥

आज कै प्रवाडै हारि जीति जांणि लेहैं ।

बांण चहुवांण का समांन आज हैहैं ॥७८३॥

सेवो भूप हाथी सैं कूदि भूमि आयो ।

बाडव को भूर वीरभद्र सो लषायो ॥७८४॥

आवैं भायपां का नाथ सीकरि कै सुंणाया ।

सारा भायपां का भी हजारां साथि आया ॥७८५॥

उणियारै नरूको बिसनसिंघ जी फेरि आयो ।

भालां की अणयां सूं आसमांणी लोक छायो ॥७८६॥

दूणीनाथ पेमान रावजी नैं बुला लीनूं ।

जैं नैं भूप सीकरि का धणी कै साथि कीनूं ॥७८७॥

सेषां का नरूका जंग जुड्बा नैं चलाया ।

हूरां का विमांणां आसमांणी लोक छाया ॥७८८॥

दूणी नाथ पेमां तो बिचै ही तूटि थाक्या ।

सेषां का नरूका सांमलाती बाज हाक्या ॥७८९॥

तोपां पर सेषां का नरूका साथि आया ।

तोपां पर सुम्मां फेरि फेरबा न पाया ॥७९०॥

छोड दी गलार तो मलार भागि छूटा ।

हाडा सीसोद कूरमां सूं फेरि जूटा ॥७९१॥

रूपसिंघ राणांवत रांणां को षिनायो ।

बूंदी को हाडो अभैसिंघ साथि आयो ॥७९२॥

दोनूं रजपूत माधवेस का सहाई।
सेवसिंघ जी पै अभैसिंघजी तेग बाई ॥७६३॥
सेवै फेरि हाडा का हिया में सेल बायो।
झाला का उमंटो लागि हाडो भूमि आयो ॥७६४॥
हाडोती धरा को राव हाडो भूमि पोड्यो।
रूपै बंस राणां कै सताबी षेत छोड्यो ॥७६५॥
सोलासै यक्यावन आदमी तो षेत पोड्या।
हाडो भूमि पोड्या रांण बसी षेत छोड्या ॥७६६॥
ऊपरि तीन सै कै साठि सेवा का बताया।
घायल तीन सै तो तीन बीसी कांमि आया ॥७६७॥

॥ दोहा ॥

परे त्रसंत घायल तहां, मरे सब्बि बहु मारि।
लागी सीकरिनाह कै, तीन कठिन तरवारि ॥७६८।

॥ छप्पै ॥

त्रिषम झाल बिकराल भूत बैताल भभक्के।
प्रलै काल सिवपाल काल सामां हय हक्के ॥७६९॥
रुंडमाल हर करी बरी अच्छुर बर हूरे।
षप्पर भरि षेचरी गूद गिद्धणि गल पूरे ॥८००॥
मृगमाल भांजि मझार दल सिंघ रूप दरसावियो।
सिषराल बंस दूजो सिषर उरस ठिवंतो आवियो॥८०१॥

॥ दोहा ॥

उण गज हूंता ऊतरे, सेवो करि मन रोस।
चमर ढुलंतां फिर चढ्यो, जिण हाथी धरि जोस॥८०२॥

॥ छंद ॥

जैपुरनाथ पाछो जैपुर नैं फेरि आयो।
सेवा नैं घणूं ही जापताई सूं रषायो ॥८०३॥
कोई दीह तांई घाव में लूणि न आया।
चिगदा छा सजोरा सेवसिंघजी धाम पाया॥८०४॥
ते श्री कविया गोपालकृत पीडीबार्तिक सेवसिंघ समाप्ती ॥

॥ चंद यथा ॥

सेवा कै पांच सेव साहि तैं सवाया।
पांचूं ही भूमि का उथाप थाप जाया ॥८०५॥
संमृथसिंघ १ सीकरि कै ठिकांणैं राज कीनां।
कीता नैं २ दसीआ ३ नैं दगा सूं मारि लीनां ॥८०६॥
कीतो मेद पाड्यो दैव ठोठ सरवडी में।
सीकरि कै आडा ढालदोन्यां का अडी में ॥८०७॥
चांदो बुधसिंघ दोय छोटां का नाम।
बेरी कटराथल दोय दोनां कै गांम ॥८०८॥
समृथसिंघ जी तो गांव च्यार्‌यां नैं बताया।
कोई दीह पाछै चंद्र सावक राज पाया ॥८०९॥
पैलां रामसिंघ जी अभैसिंघजी भूप जायो।
गादी जोधपुर की छूटि जैपुर सैर आयो ॥८१०॥
जैंकी भूप जैसै यों कही छी साथि जाज्यो।
गादी जोधपुर की रामसिंघ जी नैं दिवाज्यो॥८११॥

जैंसूं अंबपुर का नाथ पूरो जोर पायो ।
दिष्यण देस मां सूं फेरि आपा नैं उठायो ॥८१२॥
ईसर अम्बपुर कै तो सतावी कूंच कीनां ।
सीकरिनाथ समृथसिंघजी नैं साथि लीनां॥८१३॥
समृथसिंघ भाई चंद नैं भी साथि लीनूं ।
सारा मेडतां कै पेति डेरो आणि कीनूं ॥८१४॥
जां दिनां में भूंभणूं फतैपुर का नवाब ।
एकै यकलास नाम दूजो क्यामाब ॥८१५॥
दोनूं सांमलाती ह्वै बिलोचां नैं उठाया ।
दोनूं ही दगा सूं फतैपुर कै सैर आया ॥५१६॥
पैली तो दगा सूं फतैपुर नैं दाबि लीनूं ।
पाछै भूंभणूं की तरफ दोनां कूंच कीनूं ॥८१७॥
सीकरि सूं लिषावटि मेडता नैं दे षनाई ।
समृथसिंघजी भी बात राजा नैं सुणाई ॥८१८॥
राजा राम बोल्यो बार जावा तो न देस्यां ।
पाछा बावड्यां सूं फतैपुर नैं फेरि लेस्यां ॥८१९॥
समृथसिंघ भाई चांदसिंघजी नैं षिनायो ।
घोडा दोय सै सूं चंद सीकरि सैर आयो ॥८२०॥
सीकरि आंणि तोपां लोग फेर्यो साथि लीनां ।
ऊँनैं कामषान्यां भूंभणूं पै कूंच कीनां ॥८२१॥
सांमां तीन साहा का लडाई काज आया ।
नोला एक जोरा किसनसिंघ जी नांव पाया ॥८२२॥

डेरा कांमषान्यां लूमास गांम कीनां ।
बेटा सादूलसिंघजी का घेर लीनां ॥८२३॥
जां दिनां सलेधी जगरामसिंघ जाया ।
यंद्र का कठोर बज्र की सी रीति आया ॥८२४॥
दायें झूंझणूं कै कामषांनी जंग जूटा ।
गोली तीर षंजरां कटारां सेल छूटा ॥८२५॥
जायो सिव साहू को यते में चन्द आयो ।
काल कै सरूपी कांमषान्यां नैं लषायो ॥८२६॥
घोड़ा चांदसिंघजी का उड्या ज्यों नाग पांष्यां ।
सारां ही बिलोचां कामषान्यां बीचि नाष्यां ॥८२७॥
ऊँनैं सूं सलैधीसिंघ घोडां नैं उठाया ।
नोलो किसनसिंघजी भी उलाली बाग आया ॥८२८॥
फेर्यो कांमषांनी एक स्याति भी न जूटा ।
मांगी फोज ल्याया सो बिलोची भागि छूटा॥८२९॥
चूरू सैर तांई तो नवाबां नैं भजाया ।
पाछै सांमलाती ह्वै फतैपुर सैर आया ॥८३०॥
सादै जां दिनां में झूंझणूं का राज लीनां ।
राजी ह्वै सलैधीसिंघ जी नैं गांव दीनां ॥८३१॥
जां की फेरि सादा कंजवायदि छोड दीनी ।
साषी चांदसिंघ जी ह्वै लिषावटि मांड दीनी ॥८३२॥
फोजां ले नवाबां की बिलोचां दाव कीनां ।
ऐसी भांति चांदै फतैपुर नैं फेरि लीनां ॥८३३॥

मारू देस सारो ही उदंगल तो मिटायो।
राजा जोधपुर मे विजैसिंघजी ही रहायो ॥८३४॥
जैपुर नाथ पाछा फेरि जैपुर नैं चलाया।
समृथसिंघजी भी फेरि सीकरि सैर आया॥८३५॥
सीकरि आणि समृथसिंघजी तो धाम पायो।
सीकरि राजगादी नारसिंघजी नैं बैठायो ॥८३६॥
बैठो नारसिंघजी राजगादी नैं लजाई।
रोजी नैं कपूती बंब ऊती की बताई ॥८३७॥
सारी अंबपुर कै नाथ बातां जांणि लीनी।
जैपुर तो बुलाया बात म्हातम की न कीनी॥८३८॥
राजाराम बोल्यो नारसिंघजी तो गमासी।
सीकरि को ठिकाणूं चांदसिंघजी सो रहासी॥८३९॥
सीकरि सैर सूधी फतैपुर की राजगादी।
जैपुर नाथ सारी चांदसिंघ जी नैं बता दी॥८४०॥
पाछै नारसिंघजी नैं दगा सूं काढ दीनां।
चांदै राज सीकरि का समूचा दाब लीनां ॥८४१॥
ऐसी भांति सीकरि राजगादी चंद पाई।
बैरी कटराथल बुद्धसिंघजी नैं बताई ॥८४२॥
जैपुर नारसिंघजी भोड़ केती बार कीनां।
कोई दीह पाछै राव लारां थांन दीनां ॥८४३॥
जैपुरनाथ जैपुर चांदसिंघजी नैं बुलाया।
बूंदीनाथ नटिगो मांमला सूं सो सुणाया॥८४४॥

पैला फोज राजा की बलांनैं जाय घेर्‌यो ।
जैसे भूप बूंदी का किला नैं तो बषेर्‌यो ॥८४५॥
बूंदीनाथ हाडा सीरी जीनैं काढ दीनूं ।
पाछो सोंप बूंदी मांमलो भी बांध लीनूं ॥८४६॥
साल दर साल हाडो मांमलो चुकायो ।
श्री हजूरी धांम पूगां पाछलो न आयो ॥८४७॥
बूंदी सैर कांनी चांदसिंघजी आप जावो ।
पैसो मांमला को राव हाडा सूं भरावो ॥ ८४८॥
राजा जैनगर कै ईसरैं तो यों बषांणीं ।
सीकरिनाथ चांदै बात सुणतां मूंछ तांणी॥८४९॥
फोजां जैनगर की साथि लीनी कूंच कीनूं ।
बूंदी सैर किल्लो चांदसिंघजी घेर लीनूं ॥८५०॥
हाडै राव लीनी मास एक की लड़ाई ।
बूंदी सैर लूट्यो देषि पाछै हारि पाई ॥८५१॥
हाडो राव किल्लो छोडि नीचो भूमि आयो ।
पैसो मांमला को तीन बरसां को चुकायो॥८५२॥
बूंदी सैं मांमलो भराय चंद आयो ।
रींगसि को तालिको सवाय में बंधायो ॥८५३॥
पैली कांमषांनी लोमांस षेत हार्‌या ।
पाछैं जारि दिल्ली बादिसाहां नैं पुकार्‌या ॥८५४॥
दिल्ली में भादरसाह बादिस्याह बतायो ।
बारासै ग्यारा की साल राज पायो ॥८५५॥

दिल्ली नैं राजा जयसिंघजी डबोई ।
सत्तरि षांन बहत्तरि उमराव मां न कोई ॥८५६॥
फरकी सैर को बिलोच पीरषां रहातो ।
रैवाड़ी हीर मित्रसेणी एक आतो ॥८५७॥
दिल्लीनाथ बोल्यो एम दोनूं साथि जावो ।
पीरू मित्रसेणी फोज सागि लैर आवो ॥८५८॥
सीकरि झूंझणूं का ईस दोनूं आंणि पाई ।
ओरूं कांमषान्यां की दिल्ली सों फोज आई ॥८५९॥
नोलो एक सादा को बतायो सिंघ दूजो ।
पोतो एक सादा को जकैं को नांम सूजो ॥८६०॥
बेटा लालनैं भी नोलसिंघ जी साथि लीनूं ।
मांढणी झूंझणूं कै बीचि डेरो एक कीनूं ॥८६१॥
सूजै नोल घोडा सांमडानैं साथि मोकया ।
मांढणी षेत सारा कांमषांनी आंणि रोक्या ॥८६२॥
जैपुरनाथ सूजा भरतपुर का नैं षिनायो ।
फोजां लेर सेषा सांमलाती जाट आयो ॥८६३।
ऊँनैं जाट आयो बस सेषा को सहाई ।
आयो चंद सीकरिनाथ फोजां में अवाई ॥८६४॥
कैतां जेज लागी कैथतां में चंद आयो ।
तोपां की लड़ाई सोर घैणी गैण छाया ॥८६५॥
घोडा दोय सै की लालसिंघजी बाग लीनी ।
तोपां की लड़ाई बाग लेतां बद्ध कीनीं ॥८६६॥

सूजै केहरी कै फेरि घोडां नैं उठाया ।
घोडा तीन सैं सौं कांमषांनी सीस आया ॥८६७॥
सूजै लाल षांगा नैं बिलोचो सीस बाही ।
दोनूं फोज देषैं हीर जाटां भी सराही ॥८६८॥
लालो नोलसिंघजी को लडाई षेत पोड्यो ।
माख्यो लाल पीरूषां बिलोची नैं न छोड्यो ॥८६९॥
दोनूं एक लासीषां किमावो कांमषांनी ।
दाया झूंझणूं का फतैपुर का पाटथांनी ॥८७०॥
मोती फोजदारांषां हमीराषां चलाया ।
पांचूं सांमलाती ह्वै उलाली बाग आया ॥८७१॥
पांचों कांमषांनी ह्वै सुजाणां नैं दबावो ।
जायो सेवसिंघ जी को यता में चंद आयो ॥८७२॥
गोली षंजरां का सेल तीरां घाव कीनां ।
केता कांमषांनी चांद सूजै मार लीनां ॥८७३॥
ठावा दोय पीरू एक लासा नैं मराया ।
ढाई सो बिलोची कांमषांनी कांमि आया ॥८७४॥
दो सै साठि हिन्दू कांमषान्यां भी षपाया ।
तेगां बाहि सूजा चन्द घावां पूर आया ॥८७५॥
पाछैं मित्रसेणि हीर सेषां पैं चलायो ।
नोले हांकि घाडां मित्रसेणीं नैं भजायो ॥८७६॥
ठारा सै रनेप का बरस मैं जंग जूटा ।
मांढणी षेत फेख्यौ कांमषांनी भागि छूटा ॥८७७॥

पाछै कांमषांन्यां तो पमांनूं धारि लीनूं ।
दोनूं हीं ठिकाणां को यरादो छोड दीनूं ॥८७८॥
सूझै चांद नोलै जैत जांगी तो बजाया ।
दोनूं हीं ठिकाणां राषि सादै नादि आया ॥८७९॥
सीकरि कै ठिकांणै चांदसिंघजी राज कीनां ।
हाथी गांव घोडा चारणां नैं रीझ दीनां ॥८८०॥
बूंदी उदैपुर की जोधपुर की राजधांनी ।
सारांही ठिकाणां चांद की तो संक मांनी ॥८८१॥
जैपुर कै नरेश्वर ईसरै तो धाम पायो ।
माधोसिंघ गादी जैनगर की भूप आयो ॥८८२॥
सागै दोय बारी में मलारी राव आया ।
माधोसिंघ जी नैं आंणि गादी पै बैठाया ॥८८३॥
बोल्यो यों मलारीराव फोजां षरच लेस्यों ।
माधोसिंघ बोल्यो पम कोडी भी न देस्यों ॥८८४॥
जैं दिन तो मलारीराव पाछा ही चलाया ।
बरसां तीन बीतां फेरि बगरू षेत आया ॥८८५॥
जैपुर जाबताई सों रषायो फोज कीनीं ।
सारा ही ठिकाणां में लिषावटि भेज दीनीं ॥८८६॥
सेषावत राजावत नाथ का नरूका ।
जैपुर में सांमलाती षेत बगरू का ॥८८७॥
जोलो भोपालसी सुजांणसिंघ आयो ।
सीकरि सूं सेषावत चंद नैं बुलायो ॥८८८॥

जैपुर तैं बगरू कैं षेत पूर आया।
कूरम की सेनि का सुमार हू न पाया ॥८८६॥
माधव मलार की गलार तोप लागी।
ग्रीषम की लाय कैं समांण सोर जागी ॥८९०॥
बाधर उमेद राठोड रांण आया।
साहिपुरो स्यांमकोट ऊर्जल दिषाया ॥८९१॥
दोनूं राठोड रांण बीर ष्याल षेलू।
दोनूं बगरू कै षेति माधव का उबेलू ॥८९२॥
दोनूं राठोड रांण तीजो चन्द आयो।
नोलसिंघ चोथो सादूलसिंघ जायो ॥८९३॥
राजावत नाथ का नरूका तीन आया।
सातूं सांमलाती ह्वै मलार पैं चलाया ॥८९४॥
सातां सात कांनी ह्वै मलार नैं वितूण्यों।
जाणि सांमठा सा ह्वै किसाणां ईष लूण्यो ॥८९५॥
सोला सै स केई आदम्यां तो षेत पायो।
माधोसिंघ जी की जीति गाडू नैं भजायो ॥८९६॥
जैं दिन अरांई को पिडगनूं भी रीज कीनूं।
भादरसिंघ लीनूं भूप माधोसिंघ दीनूं ॥८९७॥
ऐसी भांति बगरू षेत दिषणी नैं भजायो।
माधोसिंघ सोकरि कै घणीं कै मोद पायो ॥८९८॥

॥ सोरठा ॥

उण आंटै सिवसाह, मसल्यो षाग मलारनैं।
दूजी बार दुबाह, चंद पषां जल चाढियो ॥८९९॥
मुकनो दुरद मलार, गल डागं झरते गयो।
गाडर छोडि गलार, मसती फेरि न मंडियो॥९००॥
नांहां नाह नरीस, ओपि प्रवाडां ऊजलां।
आयो सीकरि ईस, चन्द ढुलावत चम्मरां॥९०१॥

॥ छन्द ॥

सीकरि में सेषावत चन्द जोति आया।
ऊजला प्रवाडां फेरि ऊजला दिषाया ॥९०२॥
कोई दिनां सीकरि फतैपुर को राज कीनूं।
पाछै चांदसिंघजी देवता को धाम लीनूं ॥९०३॥

इति श्रीकविया गोपालकृत पीडी वार्तिक
चांदसिंघ समाप्ति।

॥ देवीसिंघ यथा ॥

जायो चंद काको तेज सारां बीचि सैठो।
सीकरि फतैपुर कै पाटि देवीसिंघ बैठो ॥९०४॥
देवीसिंघ बाला ही पणां में राज पायो।
काकै बुद्धसिंघजी राजकारिजै नैं जमायो ॥९०५॥
राजा भरतपुर कै जां दिनांमें जोर पायो।
जैपुर जोधपुर पै जाट फोजां लेर आयो ॥९०६॥

समरू तोपषानां नैं बजारै साथि लीनूं ।
दोनूं ठोड जैपुर जोधपुर नैं जोर दीनूं ॥६०७॥
फोजां ले जवारै जेज आवा की न कीनीं ।
दोनूं हीं ठिकाणां में लिषावटि भेज दीनीं ॥६०८॥
जैपुर जोधपुर का पायनांमें लागि जाणां ।
सागै चालि दिल्ली बादिस्याही पै बैठाणां ॥६०९॥
गादी पै बराबरि बैठबा की भी लिषाज्यो ।
पती नां कबूली तो लड़ाई काज आज्यो ॥६१०॥
पैली तो मुकामां पांच पोकर धाम रेस्यों ।
जैपुर जोधपुर को जोर पाछैं देष लेस्यों ॥६११॥
राजा जोधपुर को या लिषावट बांचि आयो ।
राजा बिजैसिंघ जी आंणि गादी पै बैठायो॥६१२॥
कासीदां यता में आब जैपुर का सुणाया ।
भागो जाय छै तो भागि माधोसिंघ आया ॥६१३॥
सुणतां ही जाट तो मुकाम छोडि दीनूं ।
कूंचां दर कूंच मावडा को षेत लीनूं ॥६१४॥
जैपुर सूं जाट कै अगाऊ फोज आई ।
जंगी फोज लाषां माधवेस की षिनाई ॥६१५॥
राजावत धूलै ले दलेल फोज संगी ।
षत्री हरसाहि कँवर साहि दोय जंगी ॥६१६॥
नांमी नोलगढ को सादूलसिंघ जायो ।
सेषावत नोलसिंघ जी भी साथि आयो ॥६१७॥

बेटो सिवसाह को बुधेस नांम ताको ।
देबीसिंघ सीकरि का धणीं को एक काको ॥६१८॥
राजा पांचवां नैं भार सारो सूंप दीनूं ।
जाता जाट नैं भी मावडां में आंणि लीनूं ॥६१६॥
काला नाग को सो पूंछ पाछा सूं दबायो ।
फोजां नावड़ी कै जाट पाछो बावड्यायो ॥६२०॥
गोलां की लड़ाई फोज दोनां होण लागी ।
संपा सांमठी की रीति प्यालां सोर जागी ॥६२१॥
हाथी बैठि धूला को दलेलो कांमि आयो ।
हाथी फेरि बैठो जैं दलेलींसिंघ जायो ॥६२२॥
जायो दलेला को तोप गोला सौं उडायो ।
पोतो दलेला को फेरि हाथो पीठि आयो ॥६२३॥
पीढी तीन धूला कामढोली कांमि आया ।
धूला नाथ पाछैं रावती का बिरद पाया ॥६२४॥
ताहि स्याति नोलै जीव सादा कै बचायो ।
टालो चोट गोलां की नला को ओट आयो ॥६२५॥
समरूषांन सीसा सोर सारा बाहि थाक्या ।
जावे सेवसिंघजी कै बुधै भो बाज हांक्या ॥६२६॥
पैंतालीस भायां लोग सुधां कांमि आया ।
सुरांलोक केता ही बिमांणां बेत छाया ॥६२७॥
सारी बात समरू भो जवारा नैं सुणाई ।
जैपुर पंथ केती भूपती की फोज आई ॥६२८॥

मेरी तीन चादरी पाट भूमि को उडा दे ।
डूंगर की बषेरैं पाट भूमि को छुडा दे ॥६२६॥
ऊग्यां आंथणां में आज केता ही उडाया ।
सागरमें किता ही पार पांणी ज्यों न पाया ॥६३०॥
केता ही उडाया तो न पाया पार लोगो ।
देषो बंस कूरम द्रोपती को चीर होगो ॥६३१॥
एता जोर मेरे फेरि सूरज तो उगाद्यो ।
भाजै मावड़ा सूं भरतपुर में भी पुगाद्यो ॥६३२॥
मावड़े मढोली षेत जाट नैं भजायो ।
जैपर कै राज माधवेस मोद पायो ॥६३३॥
जाट की लड़ाई बुद्धसिंघजी कामि आया ।
सीकरि में जीवता रह्या सो फेरि आया ॥६३४॥
एक मास बीत्यो माधवेस की सुणाई ।
जैपुर की गादी परताप भूप पाई ॥६३५॥
जाट नैं भजायो जां दिनां में दाब कीनूं ।
अलवर को राज भी नरूकै दाब लीनूं ॥६३६॥
मुगलां की बादिस्याहि डूबगी दिली में ।
जां दिनां में पूरणमल राव कासली में ॥६३७॥
देबीसिंघ सीकरि तमांम बात जोगो ।
घोड़ा रजपूत को कमांम बंस छोगो ॥६३८॥
आपस में सीकरि कासली विरोध जाग्यो ।
कासली ठिकाणैं छूटबा को भोग लाग्यो ॥६३९॥

पूरणमल राव कासली कै जोर कीनूं।
घोड़ा रजपूत भी पयादो लोग लीनूं ॥६४०॥
पूरणमल राव कासली सों फोज ल्यायो।
देबीसिंघ सीकरि सों फोज ले चलायो ॥६४१॥
सीकरि कासली बीच कटीव जंग जूटा।
घोड़ा रजपूत का तिरणां ज्यों सीस तूटा।६४२॥
हारि जीति कोई का न कोई हीण सैठा।
सीकरि कासली में फेरि दोनूं जाय बैठा॥६४३॥
देबीसिंघ सीकरि सों उकीलां नैं पठाया।
अलवर का नरूका राव पांतिल नैं उठाया॥६४४॥
देबीसिंघ सांमल राजगढ़ को राव आयो।
सारो कासली को राज देवा कै दबायो ॥६४५॥
पूरो कासली नैं छोडि पच्छिम नैं परोगो।
सीकरि कासली को राज देबीसिंघ जोगो।६४६॥
केई बार पूरै देस सारो लूट लीनूं।
पूरा नैं लड़ाई लेर पदमैं जेर कीनूं ॥६४७॥
दाब्यो कासली को राज देवो जोरि आयो।
राजा षंडपुर का नैं लिषादी बंट दायो ॥६४८॥
कांकड़ सूं लागतां अनेक झोड़ कीनां।
पैंतालीस गांव षंडपुर का दाब लीना।६४९॥
किल्ला रुघनाथ देवगढ़ का दो बणाया।
दोनूं षंभ धरती द्रुगपाल सा लषाया॥६५०॥

दिल्ली में बादिसाह गैंघर साहि अल्ली ।
फोज की हरोली में हूतो निजाब कुल्ली ॥९५१॥
रजवाड़ा ऊपरि तैसील को षिनायो ।
सोला हज्जार फोज ले निजाब आयो ॥९५२॥
दिल्ली तूंराटि बोचि रोकबा न पाया ।
तूंराटी तार तीर ज्यों सतेज आया ॥९५३॥
सादा का भोज का सिरोही षेत जूट्या ।
झगड़ा बीचि नीजाब कुली का पांव छूट्या ॥९५४॥
कुल्ली निजाबषांन गरद में मिल्योगो ।
दिल्ली नैं पांव लेर परेवा ज्यों चल्योगो ॥९५५॥
दिल्ली में जारि बादिस्याह नैं कहाई ।
सूबै अजमेरि कै न साह की दुहाई ॥९५६॥
हिन्दू लोग सारा बादिसाह सों बलिगा ।
॥९५७॥
सेषावत झूंझणूं फतैपुर का बताया ।
सेवा सादूलसिंघ जी का जोरि आया ॥९५८॥
घोड़ा रजपूत को कमांम जोर आपै ।
देबीसिंघ सीकरि बादिसाहां को न थापै ॥९५९।
साबक नैं साहि अंबषास में बुलाया ।
हाजिर उमराव मीर सो तमांम आया ॥९६०॥
बादिसाह बोड़ा अंबषास में फिराया ।
दोनूं दोन पांन कै नजीक भी न आया ॥९६१।

बीड़ादार बोल्यो आज केही सों उठावै ।
बीड़ा में भार एक भार को लषावै ॥६६२॥
फेरि पांन बादिस्याह बोल दीनूं ।
मुरतज्जा षांन जैं भड़ेच पांन लीनूं ॥६६३॥
मुरतज्जा षांन पांन लीनूं साहि बोल्यो ।
आज तैं भड़ेच आसमान सोस तोल्यो । ६६४ ।
बंगाली कूंम को नजीम नां कहायो ।
मेरो नांम मुरतज्जा मोलवी बतायो ॥६६५॥
सेषावत कूंम का समेत बांधि ल्योंगा ।
बादिस्याह गैंवर की पेस भेज द्योंगा ॥६६६॥
एती बोलि जंग को सबाब ले चलाया ।
बांवन हज्जार फोज लेर साथि आया ॥६६७॥
आई फोज देस में अषाई कूच कीनां ।
माधोपुर थोई दोय सैर लूट लीनां ॥६६८॥
सीकरि सूं कागद भड़ेच नैं षिनाया ।
देवोसिंघ कागद में आंक यों लिषाया ॥६६९॥
कागद नैं बांचतां ही भड़ेच ऊठि जाजे ।
सेषाटी देस में विचारि फाज ल्याजे ॥६७०॥
सूबादार आगैं अबदुलषांन आयो ।
देवली मुकांम सूलि मांमलो चुकायो ॥६७१॥
सीकरि में सेवसिंघ जी सूं आंणि जूटो ।
सीकरि साबूत सारज्यांनी भाणि छूटो ॥६७२॥

बंगाली फोज ले सिरोही कालि आयो ।
मांमलो रहायो भागि जीव नैं बचायो ॥६७३॥
मुरतज्जाषांन क्यों भड़ेच बादि आवै ।
सेषाटी देस में सदाही यों चुकावै ॥६७४॥
कागद नैं मुरतज्जाषांन बांच लीनूं ।
देबीसिंघजी कै नांम पाछो मांड दीनूं ॥६७५॥
थोई का डेरां पेस ले जरूर आणां ।
बादिस्याह गैंबर का मांमला चुकाणां ॥६७६॥
आगै तीन आया सो उमीर छा सदा ही ।
मेरा नांम मुरतज्जाषांन मैं सिपाही ॥६७७॥
मेरा तोपषांना सोर सीसा उगलैगा ।
झूंझणूं फतैपुर कांमषान्यां कूं मिलैगा ॥६७८॥
रैती बादिसाहां की जराति ऊजड़ैगा ।
देबीसिंघ तेरा जोर देषना पडैगा ॥६७९॥
मैं भडेच कूंम का पठांण जो कहाया ।
मुरतज्जाषांन नाम तो जरूर आया ॥६८०॥
सींकरि नैं जोर की लिषावटि भेज दीनीं ।
रींगस नैं दूसरे मुकांम लूट लीनीं ॥६८१॥
देवीसिंघ सेषावत आयपो बुलायो ।
पोतो सादूलसिंघजी को सुजांण आयो ॥६८२॥
दांतै कूडि बषनावर अमानीसिंघ आया ।
दोनूं बीर जम की जमाति सी लषाया ॥६८३॥

खाडांणी दूलषां चखास को बुलायो ।
सैंकडी बार आसमांणि तोलि आयो ॥९८४॥
सोकरि सूं देवसाह फोज ले चलाया ।
षाटू षेत मुरतज्ञाषांन फोज ल्याया ॥९८५॥
जैपुर कै भूपति प्रतापसिंघ जांणी ।
देवीसिंघ मुरतज्ञा सीस मूंछ तांणी ॥९८६॥

॥ दोहा ॥

तोप नगारां तंडियो, असुरां देव अमाप ।
आमैरो छुणि ऊससयो, तिण वेला परताप ॥९८७॥

॥ छुन्द ॥

षंगारोत सेवै दलेल नांम जाको ।
भूडसिंघ नाथावत चोमूं भायपां को ॥९८८
दोनां नैं फोज की हरोली भूप दीनों ।
मंगल महंत जी की जमाति साथि कीनीं ॥९८९॥
देवीसिंघ जी कै सांमलाती फोज आई ।
सोला हज्जार श्रीहजूरी को षिनाई ॥९९०॥
सेषावत जाति सांमलाती ह्वै चलाया ।
मुरतज्ञाषांन षूर षाटू षेत आया ॥९९१॥
सांमढि सतेज तोपषांनां सोर जागी ।
षाटू षेत कायरां हियां में कंप लागो ॥९९२॥
गंगा जल पान ले सनांन दान दीनां ।
सूरमां सरीर में सनाह धारि लीनां ॥९९३॥

देबीसिंह साहि का कमांम नैं बषेस्या।
ताजी हज्जार तीन तीन बार फेस्या ॥९९४॥
पद में दैठो कै निघात बाज कीनां।
मुरतज्जा षांन का समीपी मार लीनां ॥९९५॥
भूडसिंघ नाथावत डूंगस्यां ठिकाणैं।
भेज्यो हजूरि को तमांम फोज जांणैं ॥९९६॥
सेषावत हाथियां हवद्दा में सेल बायो।
कूडि कै ठिकाणैं बषतेस कांमि आयो ॥९९७॥
ठाकर दूजोद को सलेदीसिंघ जूटो।
षंजरां कटारां सेल तीरां अंग फूटो ॥९९८॥
जायो नारसिंघजी को हणूंतो कामि आयो।
मिसरीषां सरीफे कामषान्यां षेत पायो ॥९९९॥
षाटू षेत बांधे टकणेत षाग बाही।
त्यावली ठिकाणां कै पठाणां भी सराही ॥१०००॥
पालडी ठिकाणां को उमेद नूर जायो।
सिंघासणि लाडणी बुधसिंघ नैं बतायो ॥१००१॥
देषकरण सूजे धाय भाई नांव पाया।
कायथ दोय अरजन उमेद कांमि आया ॥१००२॥
बेरी चहुवांण चन्द पोता कांमि आया।
नाथावत ढांणि का दोय नैं बताया ॥१००३॥
मेल का नरूका तीस षाटू कांमि आया।
सोला नर सास कालसां का मां बताया ॥१००४॥

राणो एक जूटो दोय राज का दरोगा।
पारासुर बंसी दोय टूक टूक होगा ॥१००५॥
हिन्दू गजसिंघवोत स्याम को सहाई।
बड़वो सरूप जी हमीरो एक नाई ॥१००६॥
चारण दोय चौषा का बास का बताया।
हिन्दू म्हाद्यान षेत षाटू कांमि आया ॥१००७॥
हुकमू लाडषांनी लाडषान्यां बंस टीको।
दुरजणसिंघ मलमल कै ठिकांणै रावजी को ॥१००८॥
एता है दिल्ली की फोज लैं बिरोली।
मुरतज्जाषांन कै जगाई जीव होली ॥१००९॥
हाक्या बाज मुरतज्जाषांन कोप कीनूं।
मंगल महंत की जमाति रोक लीनूं ॥१०१०॥
बाणां को घोष तैं आकाश लोक छाया।
दादू हज्जार एक साधु कांमि आया ॥१०११॥
दादू का जैपरि नवोन भोमि दाटू।
मंगल महंत की जमाति षेत षाटू ॥१०१२॥
हिन्दू तुरकांण जूटि घणां धर धपाई।
दोनों की हारि जीति जांणमें न आई ॥१०१३॥
सेषावत जाति भी न आया षेत कांनी।
मुरतज्जाषांन भी हिया में हारि मांनीं ॥१०१४॥

॥ दोहा ॥

दोय सहस्र अरु दोय सैं, अछरो बर यकसार।
वरिया षाटू षेत बिच, हूरां होय जुहार ॥१०१५॥

॥ छंद ॥

षाटू षेत बाजतां नगारां जैत पाई।
आयो भूप सीकरि का बजारां में बधाई ॥१०१६॥
नोछावर भूप की तमांम सैर कीनीं।
आसागीर पूरणय नांम रीझ लीनीं ॥१०१७॥
दोहा गीत छुप्पै छुन्द चारणां सुणांया।
एकै दिन हाथी पांच गांव मोज पाया ॥१०१८॥
सीकरि की गादी न्याय नीति राज कीनां।
झूंठा चोर लापर नैं प्रांण दंड दीनां ॥१०१९॥
सेवा सादूलसिंघजी का बंस दोऊ।
जाकै बीचि समृथसिंघजी का आगि कोऊ ॥१०२०॥
जे दिन नारसिंघजी का बलारां में रहाता।
पोता सादूलसिंघजी का पासि जाता ॥१०२१॥
कसबा नोलगढ कै तो जमों की सांकड़ाई।
समृथसिंघजी का कैर कांकड़ की अड़ाई ॥१०२२॥
देबीसिंघजी तो फोज तोपां लेर आयो।
सादा का अठीनैं जोर सारा ही रषायो ॥१०२३॥
पानां च्यारि सारा सांमलाती है चलाया।
समृथसिंघजी का फेरियां में ही मिलाया ॥१०२४॥
कांकड़ फतैपुर का झूंझणूं का की अड़ाई।
केई बार होगी हारि जीत्यां की लड़ाई ॥१०२५॥
काट्या कैर वेरी वां अजाषा काट लीनां।
देवै उदैपुर का आंम साटै काट लीनां ॥१०२६॥

घां तो दाघ कोनूं आंणि घोड़ा हेरि लीनां।
देवीसिंघ साटै हाथियां नैं घेरि लीनां ॥१०२७॥
हाथ्यां को रुषालो नूरसिंघजी कामि आयो।
बेट मेदसिंघजी मारि हाथी घेरि ल्यायो ॥१०२८॥
केई दीह तांई तो जमीं का झोड़ कीनां।
पाछे न्याय ताबै सीम काटि सुलझ लीनां ॥१०२६॥
सारा फोज का तो पेडबां नैं भेज दीनां।
सारा आप आपां का ठिकांणां जाय लीनां ॥१०३०॥
सीकरि षोस लेबा का मनोरथ तो बिलाया।
समृथसिंघजी का भी बलारां फेरि आया ॥१०३१॥
देवीसिंघजी भी झोड़ कांकड़ को मिटायो।
फोजां लेरि सीकरि सों बलारां फेरि आयो॥१०३२॥
समृथसिंघजी का नैं किला मां काढ दीनूं।
देवै यों बलारां को ठिकाणों दाब लीनूं ॥१०३३॥
दादा सेवसिंघजी सूँ सवायो चन्द जायो।
देवै रामगढ का सैर किल्ला नैं बणायो ॥१०३४॥
देवै रामगढ में पोज(त)दारां नै बसाया।
कोड्यां का पसारा जां बिलात्यां नैं चपाया ॥१०३५॥

॥ दोहा ॥

कूरम जसे षाटे की (?) तादटि देस बदेस।
अष्टादस सत बावनैं, बीसमियो देवेस ॥१०३६॥

इतिश्री कविया गोपालकृत पीडोवार्तिक सिषर
वंसोत्पत्ति देवीसिंघ समाप्ती।

॥ लिछमणसिंघ यथा ॥

ठारा सै बांवन की साल देव वा को।
पूरण तप तेज देवसाहि का लछा को ॥१०३७॥
ठारा सै बावन की साल राज पायो।
ठारा सै छपन की साल भयाभ्र आयो ॥१०३८॥
फरासीस कोम को फिरंगी एक नांमी।
जंगी हज्जार बीस फोज को कमांमी ॥१०३९॥
जैनें पंजाब सों बलारां का उठायो।
सेषाटी लूटबा फतैपुर सैर आयो ॥१०४०॥
सारो सैर किल्लो भयाभ्र फोजां घेर लीनूं।
रूंषां नैं कटाया फोज संगर फेर लीनूं ॥१०४१॥
सीकरि में मुसाहिब धाय भाई एक सूजो।
बेरी गाँत्र चाँदावोत जालिमसिंघ दूजो ॥१०४२॥
तीजो मेदसिंघजी को नूरसिंघजी बतायो।
मेदां जारि जैपुर सों सतावी फोज ल्यायो ॥१०४३॥
चोमूं नाथ रणजीतो मुसाहिब होर आयो।
फोजां की हरोली भूप पातिल को षिनायो ॥१०४४॥
जैपुर सों बारा हज्जार फोज ल्याया।
सीकरि सों फेरि फोज साथि ले चलाया ॥१०४५॥
सेषां का नाथ का मृगेस बंस जाया।
भयाभ्र फोज कुंजर समूह सोस आया ॥१०४६॥

संगर फोज श्राडा तोपषांनैं तोडि नांष्या ।

सेषा नाथ बंस्यां फोज माथै बाज नांष्या ॥१०४७॥

ऐ तो बाग घोड़ां की सतेजी लेर आया ।

ऊँनैं कोट मां सूं डोल किल्ला का चलाया ॥१०४८॥

दोनूं श्रोड संगर में कुठारा षाग छागा ।

कूरम सामठा सा ज्यों कबाड़ी काठ लागा ॥१०४९॥

फेर्यो हारि मांनी सो किल्ला सों दूरि हटिगो ।

बेड़ा भयाभ्रू का को बरदबांनी चीर फटिगो ॥१०५०॥

फेर्यो फतैपुर सों भयाभ्रू मांनी हारि भागा ।

चोमूं का धणीं कै भी सजोरा घाव लागा ॥१०५१॥

किल्लो फतैपुर को रावराजा कै रहायो ।

किल्लै गोड सुरतांणो सरीसो कांमि आयो॥१०५२॥

समृथसिंघजी का भयाभ्रू बेड़ा यों उठाया ।

फेर्यों फतैपुर की भोमि नाहर का न आया ॥१०५३॥

सीकरि का लछा की देस सारा में दुहाई ।

फोजां की हरोली मेद सूजो धाय भाई ॥१०५४॥

पूरण राव फेर्यों कासली कै दाव कीनां ।

बीरा लाडषांनी मेडत्यां नैं साथि लीनां ॥१०५५॥

सागै मेद सूजो धाय भाई फोज कीनीं ।

सामां जाय कांकड़ पै लड़ाई दोय लीनी ॥१०५६॥

सूजो धाय भाई नूर जायो जाय जूटा ।

बीदा लाडषांनी छा लुटेरा भागि छूटा ॥१०५७॥

बीदा लाडषांनी मेड़त्या भी धाड़ि दोड्या ।
सारा जेर कीनां लोटसार का कोट तोड्या ॥१०५८॥
षागां पांण देवै चंद सेवै भूमि षाटी ।
सो ही पांणि षागां सेष नांमी भूप दाटी ॥१०५६॥
किल्लो एक पीरोहांसलाका बाँध लीनूं ।
चोरी धाडि देसां में उदंगल फेरि कीनूं ॥१०६०॥
सीकरिनाथ फोजां फेरि किल्ला ढाहि दीनां ।
जाषल मुनवाड़ो कै समेति लूट लीनां ॥१०६१॥

॥ दोहा ॥

पाडि बरड़वो पेम पर. लोठसरां लग घेर ।
दलां उराड़ा दे लछै, सीमाड़ा आसेर ॥१०६२॥

॥ छन्द ॥

जेता ही दिनां में जोधपुर सों भीम जायो ।
सेषाटी घरां में भाजि धूंकलसिंघ आयो ॥१०६३॥
जैंको दोष धार्यो भूप मानैं फोज भेजो ।
आई फोज किल्ला सापरा का पैं सतेजी ॥१०६४॥
कोट्या डीडवाणां सूँ चलाया कूंच कीनूं ।
किल्लो सापरा को मारवाड़ा घेरि लीनूं ॥१०६५॥
मोबतसिंघ नांमी रावजी का मैं कहातो ।
किल्लादार किल्ला सापरा का में रहातो ॥१०६६॥
मोबतसिंघ जी तो कोट बारैं कांमि आयो ।
पांचोदो किलांणिसिंघजी का षेत पायो ॥१०६७॥

नाथावत परसरांमजी का लाडषांनी ।
मिलक पख्या मेल का पठांण कांमषांनी ॥१०६८॥
कायथ १ टकणैत २ बरि रंभगा विमांणां ।
नायक३ निर्वांण गोड़२ ढोली१ दोय रांणां२॥ १०६९॥
किल्ला सापरा का में यता तो देस नांमी ।
बाकी सो सवा सो रावराजा का सलांमी ॥१०७०॥
हल्लो बोलि किल्ला में समूँची फोज आई ।
दारु का दगा सूँ मारवाड़ा मौत पाई ॥१०७१॥
पंद्रा सै पचावन मारवाड़ां षेत पायो ।
किल्लो सापरा को रावराजा कै रहायो ॥१०७२॥
जेते ही लछ्या कै सैर लिछमणगढ बसायो ।
बीकानेरि राजा सुरतसिंघजी कै न भायो ॥१०७३॥
राजा सुरतसिंघजी जाति बीदा नैं सिषाया ।
सीकरि की धरा नैं लूटबा नैं चालि आया ॥१०७४॥
लिछमणगढ़ बसो छो सैर अै में वाज फेस्या ।
मालां की कतारां का लुटेरा ऊँट घेस्या ॥१०७५॥
बषतो नांम दरोगो सीकरि सूं लैर लागो ।
कांकड़ि पूगतां ही धाडव्यां सूं रीठ बागो ॥१०७६॥
सारोट्या समेती लोठसर का नैं बिगाड्या ।
बीदाधिसारी का दरोगै दांत झाड्या ॥१०७७॥
बीदा दोय ठावा नैं दरोगैं बांधि लीनां ।
पाछो आरि किल्ला की बुरज में कैद कीनां ॥१०७८॥

बीकानेरि राजा सुरतसिंघजी जोर षायो।
फोजां साथि दीनीं एक सूरांणो षिनायो ॥१०७९॥
ऊनैं सूं फतैपुरनाथ पूरो कोप कीनूं।
बीकानेरि राजा को रतनगढ़ लूट लीनूं ॥१०८०॥
केई बार फोजां सेत सूरांणूँ नसायो।
लिछमणसिंघ राजा सैर लिछमणगढ़ बसायो ॥१०८१॥
व्होरो एक स्योगढ़ में कुसालीराम होतो।
जैपुर को उथापि थाप पूगो धाम सो तो ॥१०८२॥
जैंको एक बेटो षंडपुर का मैं दिषायो।
व्होरै सैर स्योगढ़ रावराजा कै दबायो ॥१०८३॥
स्योगढ दाबि रेवासा किला नैं दाबि लीनूं।
सूजैबास किल्लै रावराजा जोर दीनूं ॥१०८४॥
सूजाबासि सोला दीह किल्लै घूम बागी।
सत्रै दीह किल्लाकै बडोड़ी तोप लागी ॥१०८५॥
गोला दोय लागा एक डंडो गेर दीनूं।
तीजो तोर लागो फेरि पल्लो फेरि दीनूं ॥१०८६॥
सूजाबास रैवासो षंडेलो दाब लीनूं।
किल्ला कोट का नैं रावराजा जोर दीनूं ॥१०८७॥
ऊंनै षंडपुर का ईस ऊनैं रावराजा।
बागा फोज किल्ला में झुंझाऊ बीर बाजा ॥१०८८॥
सीकरिनाथ किल्लो तोड़बा को बोल दीनूं।
जगां भीर मेलकै जवानीसिंघ लीनूं ॥१०८९॥

हल्लो बोलि किल्ला पै जवांनीसिंघ आयो।
हूडा में हणूँतो लोहलंगर सो लषायो ॥१०९०॥
दोनूं ओड षापां सूं उषाली तेग हाथां।
गोली तीर सेलां षंजरां सूं लूथबाथां ॥१०९१॥
हूडा मां हणूंता का कड़ां सू बाण छूटा।
हूडो कोट दोनूं मास च्यारयां में न छूटा ॥१०९२॥
केई बार हल्लो बोलि किल्लै जाय भूम्यां।
केई बार दोनूं ओड घावां पूर घूम्यां ॥१०९३॥
चोथै मास मेलकै जवांनै कोप कीनां।
हल्लो बोलि हूडो कोट दोनूं भेल दीनां ॥१०९४॥
हूडै इन्द्रसिंघजो को हणूं तो कांमि आयो।
पाछै कोट किल्लो रावराजा कै रहायो ॥१०९५॥
फोजां में अढाई सै पच्यांका लोक पाया।
किल्लै सो सवा सौ षंडपुर का कांमि आया ॥१०९६॥
राजा षंडपुर का छोड़ि दोनां कूंच कीनों।
ठारा सै गुणंतरि में षंडेलो दाब लीनों ॥१०९७॥
बांकानेरि जैपुर जोधपुर का उदैपुर का।
भेजो राव्रराजा की लिषावटि मांडि डर का ॥१०९८॥
च्यार्यों हीं ठिकाणां रावराजा राज कीनां।
सोला गांव हाथो चारणां नैं दान दीनां ॥१०९९॥
चारण कच्छ देसां जाति कच्छिला कहाया।
तेजो भोज दोनूं कारषानां लेर आया ॥११००॥

घोड़ा एक रेड्या नैं मुलायो लाष दीना ।
हाथी गांव फेर्यो बायना में रीझ कीनां ॥११०१॥
बाकी कारवानां का हजारां साठि बोल्या ।
मांग्या सो रुपैया देर फेर्यो बाज बोल्या ॥११०२॥
दूजै दीह जोड़ापैं सिकारां गोठि कीनां ।
रेड्यो एक राष्यो बाज सारां बांट दीनां ॥११०३॥

॥ दोहा ॥

परठे उझल तालब पर, लिछमण षेलि सिकार ।
साकुर साठि हजार का, दीनां जगदातार॥११०४॥
पता लिछमण आपिया, साकुर ऊँट समाज ।
पंथ पंथ लिछमण परा, गढवांड़ां गजराज॥११०५॥

॥ छन्द ॥

फेर्यो मीरषां जी जां दिनां में सोर कीनूं ।
जैपुर का धणीं को देस सारो लूट लीनूं ॥११०६॥
दोनां मीरषांजी रावराजा पाघ बदली ।
तावै दोस्ती कै रावराजा देस अदली ॥११०७॥
बेड़ा मीरषां का तो चल्यागा टूंक कानीं ।
ऊँनैं भोजवंस्यां षंडपुर की बात मांनी ॥११०८॥
ठाम्रा जो ठिकाणां बंध सारी बात जोगा ।
सारा भोजबंसी भोजगढ़ में एक होगा॥११०९॥
सीकरि का धणीं सों तो षंडेला खोसि लेणूं ।
राजा षंडपुर का नैं षंडेलो सोंप देणूं ॥१११०॥

स्यामूं अभैसिंघजी भोजबंस्यां का मुराई ।
दोनां जार जैपुर सैर फोजां नैं उठाई ॥१११११॥
फोजां लेर जैपुर सूं पिरोहित मांन आयो ।
जैपुर का धर्णी को भूप जगता को बिनायो ॥१११२॥
फोजां जैनगर की भी षंडेलै आंणि भूमी ।
ऊंनैं भोजबंसी फोज ल्याया लेण भूमी ॥१११३॥
किल्लादार ग्यानूं नूरसिंघजी को कहातो ।
किल्ला सेष ताजी पैं सदा ही सौं रहातो ॥१११४॥
तोपां की लड़ाई सोर सीसां सोर कीनां ।
हल्ला तीन किल्ला का जवानां मार दीनां ॥१११५॥
जैते रावराजा मीरषां जी नैं उठायो ।
सारी फोज सुद्धां मीरषां जी आप आयो ॥१११६॥
फोजां मीरषांजी रावराजा की चलाया ।
दोनूं सांमलाती है लड़ाई काज आया ॥१११७॥
फोजां नैं पिरोहित मांन देषिकै उपडिगा ।
सादा का समूंचा उदैपुर में भाजि बडिगा ॥१११८॥
फोजां रावराजा मीरषां की लैर लागी ।
सारा साथि बेड़ा मीरषांजी आप सागी ॥१११९॥
आई देखि फोजां उदैपुर सूं तो उपडिगा ।
सारा भोजगढका जो नला में जारि बडिगा ॥११२०॥
सारा भोजबंस्यां नैं नला में हेरि लीनां ।
फोजां भी लछा की मीरषां को घेरि लीनां ॥११२१॥

कोई भोजगढ़ में रावराजा सों न जूटा ।
सारा दंड लाखां दे रुवाया फेरि छूटा ॥११२२॥

॥ दोहा ॥

अचड़ यसी जग ऊपरै, करी लछै नृप कालि ।
भालायीं सिर भोज का, ऊबरिया दे नालि॥११२३॥

। छन्द ।

ऊँ दिन तो षंडेलो रावराजा के रहायो ।
फेर्यो फोज पंगारोत वेरीसाल ल्यायो ॥११२४॥
सीस्यों कोट रैवासो षंडेलो तो छुडाया ।
बारा गाँव स्यामां नै बताया सो रहाया ॥११२५॥
फेर्यों षेतड़ी का बिसाहूँ का फोज ल्याया ।
सारा भोजकां नैं रावराजा जी भ्रमाया ॥११२६।
सोकरि कै लछै भी रावराजा फोज मेली ।
फेर्यो डूंडलोदा की गढोनैं जाय भेली ॥११२७॥
साबक रावराजा का प्रवाड़ा जो बतावैं ।
न्यारी एक पोथी साबती में नीठि मावै ॥११२८॥

॥ दोहा ॥

यता किया जग ऊपरै, आचां षग आचार ।
कवण लच्छुरा कहि सकै, परवाड़ा नह पार ॥११२९॥

॥ छन्द ॥

सारी रावतांण्यां नैं अलूसू भेष दीनूं ।
बीरां पास वायनिजैं सती है साथ कीनूं॥११३०॥

इति श्री कविया गोपालकृत पीढी वार्तिक लिछमन-
सिघ समाप्ती

॥ भैंरूंसिंघ यथा ॥

सीकरिनाथ अरासै नवै में धाम पूगा।
बेटा सात सातूं ही सतेजा भांण ऊगा ॥११३१॥
जाया रावताण्यां तीन तीनूं जो सुरेती।
बेटो कैरि राष्यो सात रामूं कै समेती ॥११३२॥
कँवराईपणां में नो हमीरो धाम पूगो।
जैंकी पूठि भैंरूंसिंह फेर्यो भांण ऊगो ॥११३३॥
सीकरि का ठिकांणां को यता पै (मैं) राज पायो।
किल्लो नेछुवा को रामसिंघजी नैं बतायो ॥११३४॥
नूं १ हुकुमसिंघजी २ चिमनसिंघजी ३ नां कवाया।
तीनूं राष वास्यां कै विजाईसिंघ जाया ॥११३५॥
आ मां एक चिमनूं सैर सीकरि में रहायो।
चिमना नैं प्रतापै गाँव एको ही बतायो ॥११३६॥
हुकमूँ सूर तोठां गाँव सोला की लिषावटि।
मुकनूं बीस गांवा सूं ठिकाणैं सीघरावटि ॥११३७॥
भैंरूंसिंह धांणों रात्र न्यांनेरे रहायो।
बरसां पाँच सातां में बड़ो सो ह्वैर आयो ॥११३८॥
कांकड़ पै अगाऊ जारि सूधो काट दीनूं।
सीकरि कै ठिकाणैं फेरि बडबा भी न दीनूं ॥११३९॥
भैंरूंसिंघजी तो फेरि जैपुर जाय लीनूं।
कोई दीह सीकरि में प्रतापै राज कीनूं ॥११४०॥

भैंरूसिंघजी कै भी ठिकाणूं एक आयो।
जैपुर की लिषावटि सूँ समायलतो बतायो ॥११४१॥
सीकरि में मुसाहिब होय दूंणी सावधानी।
भ(ब)गतावर दरोगो एक बीजो लाडषांनी ॥११४२॥
घोड़ा असवारां की तयारी भूमि लाटी।
बारा गाँव स्यामां नैं बताया और दाटो ॥११४३॥
राजा को ठिकाणैं सायरा कै ब्याव कीनूं।
चारण भाट रांणां नैं अमोघो त्याग दीनूं ॥११४४॥
पाछै रावराजा कै कुमंत्री कांनि लागा।
कायथ रामचन्द्रा नूंनदा का दाव लागा ॥११४५॥
ओदादार आगै छा जकां नैं दूरि कीनां।
माटा कांम छोटा आदम्यां नैं सोंप दीनां ॥११४६॥
सागै जारि जैपुर सैर फौजा नैं उठाई।
किल्लै सींघरावटि कै लड़ाई काज आई ॥११४७॥
ऊनैं झुंझणूँ सूं फासतर नैं भी बुलायो।
किल्लै सींघरावटि कै लड़ाई काज आयो ॥११४८॥
च्यारयौ मेरि फोजां सींघरावटि घेरि लीनीं।
ठारा दीह किल्ला में लड़ाई षूब लीनीं ॥११४९॥
जैपुर का फतैपुर का फिरंगो आंणि जूटा।
ठारै दीह किल्ला सींघरावटि नीठि छूटा ॥११५०॥
पाछ्योदो बठोठां सूर लोग नेक्षबा नैं।
फोजां ले प्रतापै फेरि काढ्या साबकां नैं ॥११५१॥

सींघासणि समेति पालड़ी का काट दीनां ।
सारो देस लूट्यो आं डदंगल फेरि कीनां ॥११५२॥
सीकरि नैं फतैपुर रामगढ नैं जोर दीनां ।
बीकानेरि जोधाणैं फिरंगी ढाब लीनां ॥११५३॥
भायां बंस कां सूं तो जमीं को लोभ दायो ।
सारो देसबास्यां भी अचैनूं जोरि पायो॥११५४॥
समत में गुनी सै साल सातां की कहाई ।
वैंही साल संवत में प्रतापै मोत पाई ॥११५५॥
ओदादार सीकरि का लिषावटि भेज दीनीं ।
भैरूंसिंघजी की नां कबूली बात कीनीं ॥११५६॥
ओदादार हलघो जैनगर सूँ एक आयो ।
बारा मास तांई सैर सीकरि में रहायो ॥११५७॥
किसनैं षंडपुर कै बात ढाबी परम अंसी ।
सारा ही बिसाह नोलगढ़ का भोज बंसी ॥११५८॥
सारा कूंडि दांतै षाचर्यां सा एक होगा ।
रायांलाल बंसी जो समूंची बात जोगा ॥११५९॥
भैरूसिंघजी कै सांमलाती बंस सारो ।
सारां सूं हुणूं तो सापरा को एक न्यारो ॥११६०॥
सीकरि में हणूं तै सापरा कै जाब पायो ।
रायांसल बंस्यां भूप भैरू नैं बणायो ॥११६१॥
जैपुर में रिकाट साहब भादुर न्याय छांणी ।
सीकरिसापरा की जालसाजी नैं पिछांणी ॥११६२॥

सागै चोपदारां साब भादुर जी षिनाया।
भैरूंसिंघजी नैं राजगादी पै वैठाया॥११६३॥
गादी बैठि भैंरूसिंघ भायां नै बुलाया।
मुकनू हुकमसिंघजी जोधपुर सूं भ्रात आया॥११६४॥
मुकनू हुकम सीधोर सीवोटां ठिकांणै।
दोनूं भ्रात बैठा आंणि जांनै देस जाणैं॥११६५॥
कागद भेजि बीकाणैं जँवारा नैं बुलायो।
आयो फेरि कागद सूं जवानूं मेद जायो॥११६६॥
भोपा भीमका नैं फेरि कागद सूं बुलायो।
सगतो लाडषांनी जैनगर सूं साथि आयो॥११६७॥
होता गांव भूमि साबकां नैं जो बताया।
भैंरूसिंघ सारा सांमलाती यों रषाया॥११६८॥
आबादांन गांवां में किसाणां नैं बसाया।
उदकी भी यनांमी देसवासी चैन पाया॥११६९॥
सेवै चंद देवै रावराजा भूमि षाटी।
भैंरूंसिंघ जेती न्याय तावै भूमि लाटी॥११७०॥
जेती भूमि भैंरूं रावराजा की दुहाई।
कीनूं राज जेतै कैतसाली भी न आई॥११७१॥
बेटो एक जायो सो बटाऊ जेम बलिगो।
सारा सोच कीनूं सात म्हैनां को विनसिगो॥११७२॥
भैंरूसिंघ राजा बरस चोदा राज कीनूं।
माधोसिंघजी नूं आप बैठां गोद लीनूं॥११७३॥

भैंरूसिंघजी तो देवलोकां में बसायो।
भैंरूसिंघजी को पाट माधोसिंघ पायो ॥११७४॥

इति श्रीकविया गोपालकृत पीढ़ीवार्तिक सिषर-
वंसोत्पति भैंरूसिंघ समाप्ती।

॥ माधोसिंघ यथा ॥

माधोसिंघ बालाही पणां में राज पायो।
मुकनूं श्री लछा कै तो भलां ही पूत जायो ॥११७५॥
भैंरूसिंघजी कै नांम केता पुन्नि कीनां।
हाथी हेम घोड़ा ब्राह्मणां नैं दान दीनां ॥११७६॥
कपिला वस्त्र का आसण अन्न भोजन भूषणादी।
छत्री बाग छाया मांस बारा में बणा दी ॥११७७॥
हैड़ो सैर सीकरि में सुधा रो नांम कीनां।
हाथूं हाथि सावक नैं रुपैया फेरि दीनां ॥११७८॥
भैंरूसिंघ भाई को सुधारो षरच कीनूं।
मुकनैं राज कारिज को संभालो फेरि लीनूं ॥११७९॥
जेतै जैनगर सूं कागदां को डाक आई।
अरजी राम राजा नैं ओलादा कै बधाई ॥११८०॥
आगै ह्वैर मरिगो कँवर भैंरूसिंघ जायो।
जैनें लाडषांनीं जालसाजी सूं जिवायो ॥११८१॥
समृथसिंघ जी का स्याम जाया दाव दीनूं।
सीकरि राज लेबा को मनोरथ फेरि कीनूं ॥११८२॥

केई बार दोनूं सांभलाती है पुकार्‌या ।
केई बार न्यारा है मनां में षोट धार्‌या ॥११८३॥
केई बार अरजी रामराजा नैं बचाई ।
केई बार सीकरि का उकीलां सूं लड़ाई ॥११८४॥
केई बार जोरै लाडषांनी जाल नांष्यां ।
केई बार सीकरि का उकीलां तोड़ि नांष्यां ॥११८५॥
जैपुर जां उकीलां में षुमांणीसिंघ नांमी ।
बेलणसाब सीकरि में पधार्‌या न्यायधामी ॥११८६॥
मुकनैं श्रीलछ्या कै साब लोगां सूं बणाई ।
साबक न्याय ताबै साब लोगां नैं सुणाई ॥११८७॥
मेजर साब बेलण न्याय ताबै बात जांणी ।
सीकरि की सदा सूं नेकनांमी नैं पिछांणीं ॥११८८॥
पालट साब भादुरजी यता में फेरि आया ।
माधोसिंघजी नैं साब छाती कै लगाया ॥११८९॥
चड्ढा साब भादुर जो सुजांणीकोट आया ।
बग्गी बीचि सामां मुकनसिंघजी नै बैठाया ॥११९०॥
सीकरिनाथ बालक साब भादुर नैं सुणाई ।
सारी बात मुकनैं सावधानी की जणाई ॥११९१॥
बोल्या साब भादुर भूप माधोसिंघ वाला ।
जैते सैर सीकरि राज मुकनां का संभाला ॥११९२॥
सगतो लाडषांनी एक चिमनूं कांम जोगो ।
पोकरराम साहां भी महाड़ी को दरोगो ॥११९३॥

पोतो ।सवर्सिंघजी को जँवाहरसिंघ नांमी ।
पारीकां पिरोहित श्रीनरायण साच धामीं ॥११९४॥
दीवाणीं अदालति साह सुषजी कांम जोगो ।
बकसी लोग मुनसी राय लिषवामें अमोगो ॥११९५॥
जैपुर रामलालो षूंम मैलूषान दल्लो ।
पालट साब भादुर का उकीलां बोचि मल्लो ॥११९६॥
माधोसिंघ जी का राज कारिज नैं सुधारै ।
सारा चोर धाडती निकाल्या देस बारै ॥११९७॥
भैंरूसिंघजी कै भूप माधोसिंघ वालो ।
मुकनूं श्रीलछा को राज सीकरि कै रुषालो ॥११९८॥
जैंकी सावधांनी साब लागां जांणि लीनीं ।
जैपुर की अजंटी सूं लिषावटि भेजि दीनीं ॥११९९॥
ठाकुर मुकनसिंघजी सैर जैपुर नें चलाया ।
पोकरराम सगनो लाडषांनी साथि आया ॥१२००॥
मैलूषांनदल्ले रामलालै जैन पाई ।
तांनूं हीं उकीलां राम राजा नैं कहाई ॥१२०१॥
मेजर साब बेलण म्हैरबानी सें बुलाया ।
पालट साब भादुर छांवणीं सूं फेरि आया ॥१२०२॥
जोरै लाडषांनी स्यांम जाया जाब पायो ।
उरको षास माधव रावराजा नैं लिषायो ॥१२०३॥
देसां देस पूगो तापषांनां की अवाजां ।
डेरां रावराजा का पधार्या रांम राजा ॥१२०४॥

दूजै दीह मोतीमाल हाथी भेज दीनां।
राजी ह्वै जरी का पाट अंबर फेरि दीनां ॥१२०५॥
सारां साब लोगां म्हैरबानी फेरि कीनीं।
डेरां आंणि राजा सूं रजा भी मांग दीनीं ॥१२०६॥
माधोसिंघ देवाचंद सेवा सैं सवायो।
सीकरिनाथ सागै रावराजा सो लषायो ॥१२०७॥
तोपां की अवाजां दोष दोष्यां कै बधास्यो।
सीकरि रावराजा सैर जैपुर सों पधास्यो ॥१२०८॥
पालट साब भादुर सैर सीकरि फेरि आया।
पीड्यां का प्रवाड़ां ग्रंथ भासा का मंगाया ॥१२०९॥
बोल्या साब भादुर एक फेस्यों भी बणावो।
पीड्यां का प्रवाड़ां बार ताईं सो सुंणावो ॥१२१०॥
चारण जाति कविया कूम गोपा नैं कहाई।
बेगा ग्रंथ पीड्यां का बणावो आज ताईं ॥१२११॥
बाढू घाटि आंका दोष मोरा सा मिलाया।
छंदोभंग छंदां का प्रबंध रीति गाया ॥१२१२॥
सेषा बंस पीढ्यां का प्रवाड़ां को बणायो।
माधोसिंघजी नैं मुकनूं सिंघजी नैं सुणायो ॥१२१३॥

॥ दोहा ॥

ईस दनीस गनीस गिर, सोम धराधर सेस।
राज करहु जैसे रिधु, माधवसिंघ नरेस ॥१२१४॥

इति श्रीसिषरवंसोत्पत्ति कवियागोपाल कृत पीडी वार्तिक समाप्ती

माधोसिंघजी मुनसिंघजी का अलंकारादिक कवित्त गुन वर्णन यथा

॥ दोहा ॥

सोभित उपमा सर्व ही, लंकारन कै सीस।
सब छत्रिन पै छत्र सो, माधवसिंघ नरीस ॥१२१५॥

॥ कवित्त ॥

सागर लौं धीर गुन आगर गणेस भूप,
रूप के उजागर मनोज मन मोहियत।
सत्रुन को काल पारिजात कविराजन को,
विक्रम लौं दीनन के दुःख को बिछोहियत ॥
नीति परिपूरन प्रकास भुवमंडल को,
परब धराकौ कांमधेनि करि दोहियत।
छत्र सब छत्रिन को आतप निवारिवेकौं,
करण सो दानी भूप माधोसिंघ सोहियत ॥१२१६॥

टीका—सागर उपमान, लौं वाचक, धीरता धर्म, उपमेय लुप्त। गुन धर्म, गणेश उपमान, भूप उपमेय, वाचक लुप्त। रूप गुन, मनोज उपमान, वाचक उपमेय लुप्त। काल उपमान, वाचक धर्म, उपमेय लुप्त। पारिजात केवल उपमान कह्यो। विक्रम उपमान, लौं वाचक, दुःख को बिछोहियत धर्म, उपमेय लुप्त। नीति धर्म, उपमान उपमेय वाचक तीनूँ लुप्त। प्रकाश केवल धर्म कह्यो। उपमान उपमेय वाचक को लोप यातैं त्रिलुप्ता। दोहिबो धर्म, उपमान पृथ्वी उपमेय माधोसिंघ

ओ, लों वाचक ए कह्या नहीं यातैं त्रिलुप्ता। छत्र उपमान, आतप निवारणूँ धर्म, उपमेय वाचक लुप्त। कर्न उपमान १, सो वाचक २, दांनी धर्म ३, माधोसिंघजी उपमेय ४, च्यार्यों कहे यातैं पूरन जानिए। या कवित्त की टीका करी सो ही सब की जाणिये। सब की किये ग्रंथ बहुत बधे यातैं सुगम कहेंगे।

॥ कवित्त ॥

नांम तेरो जसो एक, माधो वृजचन्द को है,
माधो वृजचन्द्र जैसो तेरो नांम जान्यो है।
तेरे समांन नांम अवनि पर भांन को है,
भांन के समांन तेज तेरो पहिचान्यो है।
सोभित है तेरे समांन एक रतनाकर,
तोको रतनाकर समांन मन मांन्यो है।
दांनी एक द्वापर में कर्न हो तिहारे सम,
करण समांन दांनो तोही को बषान्यो है॥१२१७॥

टीका—परस्पर उपमा लागी यातैं उपमान उपमेय॥

अनन्वय यथा॥

॥ कवित॥

तेरे जैसो सूर बीर तू ही नृप माधवेश,
तेरे जैसी तेग पानि तू ही परसत है।
तेरे जैसो मांनी एक तोही को बिरंचि कीनूँ,
तेरा सो उदार मन तेरो परसत है॥

तेरो सो बिलंद भाग तेरो ही बषान्यों जात,

तेरे जैसो तेज मुष तेरे बरसत है।

हेरि हेरि थाके आन उपमा न आवत है,

तेरे जैसो दानी भूप तू ही दरसत है॥

टीका—जाकी उपमा जाही कों लागै सो अनन्वय।

(रूपक यथा)

॥ कवित्त ॥

फैलि रह्यो एक सो प्रकास भुवमंडल में,

कंज कविराजन कै अनंद घनेरो है।

कहत गुपाल दांन याको सठोर ताप,

विप्रन के मंदिर बचाय ताप तेरो है॥

केते जग मांनत न मांनत है वाहि केते,

तेरो सब ही के सीस आतप घनेरो है।

भांन को उजेरो दिन मांन में पिछाण्यों जात,

माधो भांन तेरो निशि वासर उजेरो है॥

टीका—या कवित्त में माधा भांन रूपक तेरो शब्द करित। निशि वासर उजेरो अधिक, एक सो प्रकास यहाँ सम, विप्रन के मंदिर बचाया ताप न्यून, वा सूर्ज को केते नहीं नमैं माधोसिंघ सूर्ज को सब नमें या अधिक, अधिक-सम-न्यून ऐसो आनिए।

(विषम यथा)

॥ कवित्त ॥

छुति के बिछोननि पै तर ए तरकि जात,
धरकि जात सीनां करे री काम केली है।
भूषन के भार कुच भार कच भारन तैं,
नेक न सम्हार तन कोमल नवेली है॥
राषत निद्राधारी तुरावटी उसीर नवकी ?
मुकर अपास कुमलात बर बेली है।
असी सुमा करि नाहे माधव के सत्रुन की,
झारन पहारन में भ्रमत अकेली है॥

टीका—अरि स्त्री कोमल, झार पहार कठोर लायक पदार्थ नहीं यातैं विषम। (असंगति यथा)

हेम कटि कांची पद नूंपर बल पयानि,
श्रवण मुरासा माल सीनां मधिकनकी।
दौरि दौरि गात कों दुरात न बीथिन में,
निबिडित माल तम पूर अधिकन की॥
घेरि लई मंडली चकोर मोर कीरकन की,
दीन भई तनक सम्हार नांहि तन की।
तेरी अरि नारिन कों माधव पहार मांझ,
दुषित निहारि रोवै नारि बधिकन की॥

टीका-दुष पावनूं अरि स्त्रीन को रोवनूं वधिक स्त्रीन को यातैं असंगति। ध्वंनि में काव्यार्थापत्ति अलंकार भो है। बधिक

स्त्रीन का हिया कठोर होत है करुणा करि वे भी रोवै तो और मनुषन की कहा बात ध्वनि मे जानिये । (उल्लेख यथा)

॥ कवित्त ॥

मुकनां मही पै आज कीरति तिहारी देषि,
सागर मुराल वंस जांनि छीर धरिता ।
चंद्रमा चकोर चंचरीकनि चमेली जानी,
जानि दीपमालिका दिगीस रोर हरिता ॥
लोक जानो भोर हरि गिरजा हिमालै जानि,
जानि रुतिराज को समाज ध्यांन धरिता ।
रंक जांनि सर्व समुदांकै जानि कलानिधि,
कोक जांनी कोमदी समुद्र जानि सरिता ॥

टीका—एक वस्तु कीत बहुतन को बहुत रीति दीषी । यातें उल्लेख (व्याजस्तुति यथा)

॥ कवित्त ॥

केतन को देत भूमि केतन की छीन लेत,
केतन को घेरि देश बाहिर निकारो हो ।
कोई धन लेन काज दावन पकरि लेत,
ताहू को नैंक ही में अवगन बिसारो हो ॥
काहू की सोभा अवनि में सहि सकत हो न,
देस परदेसनि में आप नीव धारो हो ।
दारिद कै दारदी कै मुकनां बिछोहा देत,
कर्न भोज बिक्रमही की कीरति बिगारो हा ॥

टीका—साबक कवित्त में निंदा करि ध्वनि में अस्तुति भई अहो मुकनसिंघ कोई की धरती षोसो हो, कोई को घो हो सत्रुन की षोसो हो कविन को घो हो इहां अस्तुति। दारद कै दारिद्री कै बिछोहा किया यहाँ भी निंदा में स्तुति करना। भोज विक्रम की कीरति बिगारो हो यहां भी निंदा में अस्तुति उनकी कीर्ति मंद भई इत्यादि कवित्त में व्याजस्तुति जानिए।

(व्यतिरेक यथा)

कवित्त

जैसो भान तेज तैसो तेरो तेज माधवेस,
वाको दिन ही में तेज तेरो दिन रात है।
वाकै एक बाज सपतास सो भी वृद्ध भयो,
तरुन तिहारे बाज बालि सरसात है॥
वाकै एक अरन समीप सो भी पंग जानूं,
सुभट अनेक तेरे पासि दरसात है।
वाको देषि एक दिन सीसको नवावत हैं,
तोकों देषि सारे दीन सीसको नवात हैं॥

टीका—उपमान तें उपमेय अधिक यातैं व्यतिरेक (सार यथा)

कवित्त।

तामस तैं व्याल व्याल हू तैं बिकराल ज्वाल,
ज्वाल हू तैं बाडव प्रति ज्वाला घनेरी है।
वाडव तैं काल दण्डकाल दण्ड हू तैं काल,
काल हू तैं रोष भरी कालिका करेरी है॥

कालिका तैं बीज बीज हू तैं त्रपुरारि षीज,
षीज त्रपुरारि तैं मयूष रविकेरी है।
रवि की मयूष हू तैं वज्र मघवान को है,
वज्र तैं कराल माधवेस तेग तेरी है ॥

टीका—अधिक तैं अधिक कहे यातैं सार जानिए।
(उत्प्रेक्षा यथा)

कवित्त।

तेरी बीरताई सुनि पाई नृप माधवेस,
यातैं अरि नारि गिरदारिन दुराई है।
बन में बिहारी हारि मन यं बिसूरत है,
पाप श्रम भूष प्यास नींद नियराई है ॥
गात भरा स्यांम नैंन अधर सुपेत भरा,
कौन हेत पापनि अमोघ अरुनाई है।
एक भाय जाचक समांन गिर सेवत हैं,
मानूं जाचि पाहन तैं पावक लगाई है।

टीका—चरन ललाई विषै पावक को संभावना करी संभावना डोल करनूं उत्प्रेक्षा। मानूं किधों असे बाचक उत्प्रेक्षा के ही जानिए। (भ्रांति यथा)

कवित्त।

तेरी अरि नारिन कों हेरि नृप माधवेस
दोरिकै दवाई बन जन्तुस्तु सुष पैनी कों।

काक गहि कंठ सुनि कोकिला समान बैन,
बाज गहि लीनी है निहारि मृगनैनी को ॥
चंचरीक चंचल सरोज मुष आनि गहे,
बंचर उरोज गहि लीनें फल षैनीं को।
कीर गहि नासिका समीर गहि काकोदर,
पांयनि चकोर गहि मोर गहि बैनीं को ॥

टीका—इत्यादि बन के जन्तुन क भ्रांति भई यातैं भ्रांति।

(विभावना यथा)

कवित्त।

ऐसो बलवान भाग तेरो नृप माधवेस,
कितने भराये बिनु आनि दंड भरिगे।
केते बिजया के बिनु षाये बाबरे से भये,
कितनें निकारे बिनु देस तैं निकरिगे ॥
केते जल बोरे बिनु आप ही तै बूडि गए,
कितने जराए बिनु आगि में प्रजरिगे।
कितनेंक मंडल कों लीनें बित छीने बिनु,
कितनें तिहारे अरि मारे बिनु मरिगे ॥

टीका—कारन बिना ही कारज भयो यातैं विभावना।

(विरोधाभास यथा)

॥ कवित्त ॥

तिमर निहारि प्रति वासुर प्रभाकर लों,
अमर अलोप होत ऐसी पनयारि है।

जो लग न जाँहि ढिग तो लग तिहारो जोर,
सरन गए तैं तोहि तुरत निकारि है॥
अब न रहेगो नीच नीकैहुक जाँनि लई,
तेरे प्रजारिबे को सीतल निहारि है।
अब लों दरिद्र ! तैं घनेरे दुःष दीनें मोहि,
तोहि गज वाज देकै माधवेस मारि है॥

टीका—काहू कबेसुर की उक्ति दारिद्र सैं तेरे प्रजारिबे कों "सीतल निहारि है गज बाज देकै मारि है" इत्यादि कवित्त में बिरोधी पद मिलै यातैं विरोधाभास जानिए।

(विकल्प यथा)

॥ कवित्त ॥

कितने गज बाज गांम धाम आराम दीनैं,
सुजस अपार छितिमंडल पैं छाय हैं।
केते कविराजन कों दरक दुसाल दीनैं,
केते कबिराजन के आसा फिरि पाय हैं॥
कोई कबि बोलै एम अबकै हमारि बेर,
उन पै किरोरि बात जाँचिबे कों जाय है।
कै तो या दरिद्र मोहि दौरिकै दबाय लै है,
कै नरिंद्र माधो याँ दरिद्रकों दबाय है॥

टीका— क यहै कै वहै ऐसे पद आवे यातैं विकल्प जानिए।

(विशेष यथा)

॥ कबित्त ॥

कोमदी कनैर केवरे में बक हीरे मांझ,
मुक्ताचर मुकता समुद्र छीर धारी हैं।
देवतरु आरसी हिमालै मंदाकनी हू में,
चामर चमेली चंद्र चंद्रिका निहारी हैं॥
सारद के आसन में सक्र के सिंगासन में,
नागरि के हास राम नीति निरधारी हैं।
अंब हू में निबु हू में कमल कंद बहू में,
मेरे जानि माधव ए कीरति तिहारी हैं॥

टीका—एक वस्तु कीर्ति ताको अनेक ठोर बर्नन कियो यातैं विशेष अलंकार जानिए। (विशेषोक्ति यथा)

॥ कवित्त ॥

बाम तजे धाम तजे अवनि आराम तजे,
गाम तजि दौरि दौरि बिपुन बसात हैं।
धीर न धरात गिर सरिता उलंघि जात,
गात भरा षीन फल फूल चुनि षात हैं॥
फिरत बिहाल फेरि सागर उलंघि जात,
चौंकी चौंकी उठत चितात भहिरात हैं।
माधवेस तेरे अरि देस तजि दूरि गए,
तिनके हिए तैं तो भी त्रास नहीं जात हैं॥

टीका—भय मिटबे के हेतु दूरि गए तो भी भय नहीं मिट्यो यातैं विशेषोक्ति। (विचित्र यथा)

॥ कवित्त ॥

हीरन के हार हेम तार हय पाटंबर,
बहुत प्रकार धन धाम उधमत हैं।
देत गज राज गजराज बहु पायबे को,
अवनि दिए तें राज अवनी जपत हैं॥
दीनन कों देत सुष आप सुष पायबे कों,
लोक जानें याको धन बायदे गमत है।
एता देत लेत काज मुकनूँ लछाको नंद,
कछिन कों ऊँचो होन कारिज नमत है॥

टीका—धन वास्तै धन देत है राज वास्तै जमीं देत है ऊँचो होबा वास्तै नमे है उलटो यत्न कियो यातैं विचित्रता जानिए। अलंकार तो परिवृत्ति भी है कछु देकै कछु लेना पलटा होत है यहाँ उलटो यत्न कियो यातें विचित्र जानिए। (अधिक अलंकार यथा)

॥ कवित्त ॥

प्रसस्वोस्यो नगर पुंज फैल्यो देस देसन में,
बिथुस्यो बिदेसनि दिगंत दरसायो हैं।
मंडल अषंड नव षंड सात दीपनी में,
सागर के वारापार पारहू न पायो हैं॥
माधोसिंघ सेषावत मुकट महीपनि कै,
एक यह रावरो अचंभो मोहि आयो है।

सुजस न मायो है पचास कोटि अवनी प,

तन में तिहारो कैसे मेरे मन मायो है ॥

टीका—आधार तैं आधेय बहुत बतायो यातैं अधिक अलंकार जानिए। (परिवृत्ति यथा)

॥ कवित्त ॥

केते कवि लालची लबार मति हीन बकैं,

ताकी सुनि अरुचि न आवत है चित्त के।

कुटिल कुबुद्धि केते कूर बिनुं काज बोलै,

ताहू सैं बुलाय बोल बोलत हो हित्त के ॥

रावरे समांन मुकनेस बावरे है कौन,

ऐसे बिवहार होत देषे हु न नित्त के।

देत कबि अंक ताको दुरद निसंक देत,

देत हो हजारूं बित पलटै कवित्त के ॥

टीका—कछु देकै कछु लेना पलटा करै कबित्त वित्त को पलटा कियो यातैं परिवृत्ति। जानिए अलंकार सो व्याजस्तुति भी है। रावरे समान बावरे कोन यहाँ निन्दा करी अस्तुति भई। ध्वनि में यहां पलटा है आंक को दुरद का पलटा बित्त को कबित्त को पलटा यातैं परिवृत्ति ही जानिए। निदर्शना यथा।

॥ कवित्त ॥

सावधांनी विधि की उदार मन संकर को,

समर अडोल मेरु द्रढता चरन को।

सत्रुन पै ताप चाप अँचन धनंजय को,
असि असवार होत तेज लै रतन को।
रोष बलिराम को गंभीर धीर सागर को,
धारण कियो है बल धरनी धरन को।
सुष को समाज मघवान मुकनेस आज,
कर में तिहारे दांन करनूं करन को॥

टीका— उपमान को धर्म उपमेय में ठहरायो यातैं निदर्शना।
(सहोक्ति यथा)

॥ कवित्त ॥

माधवेस आज तुम जटित जवाहर को,
रीझि कै कवितन पै हित करि दीनूं है।
सउच्यो सुमेर औ कुमेर हू की मति बोरि,
फेरि मघवान हेरि मौनव्रत लीनूँ है॥
भाग गयो आथमि छिपाकर हूँ छीन भयो,
दीन भयो दीप लषि कोतक नवीनूं है।
भूषन कविन्द्रन के कीरति तिहारी भूप,
दोनूं एक साथि ही प्रकाश भूमि कीनूं है॥

टीका— कबिन को दीने जे भूषन औ कीरति दोनों को प्रकाश साथि भयो कारन कारज साथि उपजे यातैं सहोक्ति जानिए। (अत्यंतातिशयोक्ति यथा)

॥ कवित्त ॥

उज्जल अमंद मुकनेस लछसाह नंद,
आनंद को कंद कविराजन कों उग्यो है।
मारुत के बेग लों दिगंत दीप दीपनि में,
पारद समांन छितिमंडल पै छुग्यो है॥
सूंम अरविंदन के मंद करिबे के काज,
पूरन कला को चंद चांदनी सी चुग्यो है।
तोपैं जाचिबे कों कवि आए ते न पूगे तो पैं,
पहिले तिहारो जस सिंध पार पूग्यो है॥

टीका—मुकनसिंघजी नैं जांचिबे कों कवि आये सो तो मुकनसिंघ जी कनैं पूगे ही नहीं अरु जस पहिले सिंधु पार पूग्यो पूर्वापर क्रम नहीं यातैं अत्यंतातिशयोक्ति अलंकार जानिए। (उल्लास यथा)

कवित्त।

केते सिर धूंनत हैं कीरति कहानी सुनि,
केते सूंम पांनि के बलूला पनि पारिगे।
केते नैंक बोलत हैं केते चुप ठांनि बैठे,
केते वांन पांनहू की सुधि कों बिसारिगे॥
केते राज काज के समाज सुध भूलि गए,
केते मन मारिकैं बिराग उर धारिगे।
माधव नरेन्द्र तेरे दान के प्रवाह देषि,
कितने राठोर गोर हाडा हिय हारिगे॥

टीका—माधोसिंघजी के दान गुन तैं हाडा, राठोर, गोड़न के हिय में हारिबो दोष भयो। और के गुन तैं और को दोष होय तहाँ उल्लास जानिए। (भ्रांत्यपन्हुति यथा)

कबित्त

माधवेस तेरी अरि नारि बन वीथिन में,
घेरि प्यास हू की इयैं निवांनि पैं आय हैं।
नीर में निहारत ही पोंछत कपोलन कों,
फेरि बन पातन कों फेरि उपराय हैं॥
नषनि कचूरि धूरि लावैं न मृगानि हू की,
सलिल बहात नैंक मेचक न जाय हैं।
कोतुक निहारि ताहि भीलन की नारि कहै,
कजरा न जांनिए सयांनी मुख छाय हैं॥

टीका—अरि नारिन को भ्रम भीलनी के कहे तें मिट्यो यातैं भ्रांत्यपन्हुति जानिए। अलंकार तो या में ब्याजनिंदा भी है। हे सयांनी यह कजरा नहीं है। सयांनी की ठोर विप्रलंभन करिके मूर्ख बताई। (तद्गुण यथा)

कबित्त

तेरी अरि अंगना अकेली नृप माधवेस,
त्रासि मांनि हिय में अयास तजि जात हैं।
झारन पहारन में बधिक बिरांन कीनी,
आंन आंन लीने छीन भूषन सब गात हैं॥

हेर तज रूर मति कूरि है किरातन की,
हीरन के हार स्वेद कन से लषात हैं।
अधर समीप अरुनाई भ्रम तोरि तोरि,
बेसर के मोती गुंजा जांनि कै बगात हैं ॥

टीका—अलंकार तो भ्रांति भी है। हीरा देषि स्वेद कन की भ्रांति भई पैं अधर की संगति पाय मुक्ता अरुन भये यांतैं तद्-गुन जानिए। (पूर्वरूपगुन यथा)

कवित्त।

केते करि सीष जात केते कवि फेरि आत,
विरद बिसाल बोलि केते बिरदात हैं।
केते जर कंमर दुसाल माल मोतिन की,
कुलिस प्रबाल लाल हेम हय पात हैं ॥
करके कठोर नर दांन को प्रवाह देषि,
रीझ करवे कूं बेनी चित्त को चलात हैं।
माधोसिंघ तो पैं आनि सूँम भी उदार होत,
दूरि जात पाछो फिर सूंम हो जात हैं ॥

टीका—दातार की संगति पाय सूंम भी दातार भयो दातार से दूरि उठि गयो फिरि पाछो सूंम भयो ऐसे पूर्व रूप गुन अलंकार जानिए। (विनोक्ति यथा)

कवित्त।

सोहैं देश कोस गढ़ तोपन की पांति सोहैं,
दास औ षवास पास सोहैं मन भावनें।

गज सोहैं बाज सोहैं सुभट समाज सोहैं,
कीरति करपा सोहैं गांम गज पावनें ॥
संपति समाज राज रीति सावधांनी सोहैं,
गायनि गुनिजन के छंद मृदु गावनें।
माधव को राज सुरराज के समांन आज,
एक ही नकार बिना सकल सुहावनें ॥

टीका—एक नकार अक्षर बिना सब ही राज शोभायमांन भयो यातैं विनोक्ति जानिए। (काव्यार्थापत्ति यथा)

कवित्त।

माधोसिंघ तेरे सम और नृप कौन सोहै,
देषत दिमाग हूं को देवराज दहिये।
और नरनाहन की संपति सराह कौन,
संपति निहारि राजराज मौन गहिये ॥
कर्न हू की कीरति कों बांनी कबि गारि दयो,
रावरे समांन और सोभा कौन लहिये।
तेरे तेज आगै तेज भानु को हू मंद भयो,
बापरे कसान हूं की कहा बात कहिये ॥

टीका—अहो राजन! तेरे तेज आगैं भांन को तेज मंद भया तो क्रसांन जो अग्नि ताको तो कहा बात? मुष्य में गोन को वर्णन कियो यातें काव्यार्थापत्ति जानिये।

प्रत्यनीक यथा—

कवित्त।

केरो जुद्ध कीनें श्रोन धारन तें भूमि भीनें,
पायकैं पराजैं प्रान काल जाल मढ़िगे।
भूलि गए मांन कों परी हैं भीर प्रानन पैं,
मंद भई जठुर बिसाल सोक बढ़िगे॥
होयकै उदास तजि विविध बिलास श्रास,
श्रासि मांनि हिय में श्रयासन तें कढ़िगे।
माधवेस तोसैं श्ररि हारि ताकों बैर धारि,
तैनैं तप कीनें ते पहारन पैं चढ़िगे॥

टीका—श्रहो भूप! तेरे शत्रु तोसैं तो जीतै नहीं तू बलवान है तेरे पच्छिक पहार तामें तैं तप कियो तापैं दोरि कै चढ़ै। शत्रु के पक्षवाले को दुःख देनूं यातैं प्रत्यनीक जानिए।

(प्रहर्षण यथा)

कवित्त।

चाहि करि आवैं सो की पावत हजार सोही,
चाहत हजार पावैं लाषन समाज हैं।
श्रंबर की चाहि जाकों देत जर कंबर है,
चाहत हैं बाज ताकों देत गजराज हैं॥
एक सुष चाहे जाकों देत है अनेक सुष,
चाहैं धांम जाकों धांम देत जस काज हैं।
चाहत सवाय रीझ देत कविराजन कों,
ऐसे नृप आज माधवेस महाराज हैं॥

टीका—कबेसुर मन की चाहतैं अधिक पायो यातैं प्रहर्षण अलंकार जानिए। (चित्र यथा)

कवित्त।

तेरी बिषबाहिनी दुरंगन को घेरि राषैं,
सुभट समूह लैंन वंष उर धारे हैं।
सोर प्रजरात घनघोर दहुं ओरन तैं,
मार मार बोलत निसंक ह्वै बकारे हैं॥
होय मतिवारे अंक अक्रूँ (जूं) सनमांनत है,
फूटत षंभारन तैं षून बिसतारे हैं।
पूछैं अरि अंगना तिहारी नृप माधवेस,
कोन ए किवार पिय वारन बिदारे हैं॥

टीका—ऐसे अरि स्त्री पूछत हैं हे पिय किवार कोन वारन बिदारें हैं कै वारन बिदारें हैं? वारन नांम वारना का, वारन नांम हाथी का। एक वाक्य में प्रति उत्तर भयो यातैं चित्र अलंकार जानिए। (समुच्चय यथा)

कवित्त

बैरिन की बैर भय तेरो नांम माधवेस,
दोरत अकेली बनवीथिन दुराती हैं।
फेन मुष नैंन भरि ऊरध उसास लेत,
चौंकत चितोन चकि भूलि भहिराती हैं॥
गात पियरात दुष मगन प्रलाप स्वेद,
भ्रमत बिहाल बिनु बोध बिललाती हैं।

आलस अयांनों चुप ठांनत सयांनो होत,
कंठ घहिरांनी मग थाकि थहिराती हैं ॥

टीका-अहो भूप ! तेरो भय मांनि तेरी अरि स्त्रीन के स्तंभ, कंप, स्वेद, बैबर्ण्य, रोमांच, स्वरभंग, अश्रु, प्रलाप, मुषफेन इत्यादि भाव एक साथि वर्तैं यातैं समुच्चय जानिए। (व्याघात यथा)

कवित्त

सीतल समीर भई व्याल फूंतकारन सी,
तनकों लपाई हैं जुन्हाई कालजुर सी।
विपुन अराम भए भाषसी उसीर धांम,
फूल भए सूल से सुगंध सार सर सी ॥
कोकिल की कूँच मीच अंतक बसंत भयो,
मलय कपूर धूरि ग्रीषम की झर सी।
माधव तिहारे अरि उद्यम विदेस गए,
ताकी तिय बोलत मयंक आगि बरसी ॥

टीका—या कवित्त में शीतल समीरादि वस्तु सुषदायक हैं सो दुःखदायक भई और कारज होने की वस्तु सें और कारज भयो यातैं व्याघात जानिए। (दीपक यथा)

कवित्त

सूमन के पान हीर पाहन कठोर होत,
सज्जन सुजांन संत कोमल सचेत हैं।

क्रूर चोर कांमी खल चपल अधीर होत,
सागर उदार बीर धीरज समेत हैं ॥
उर्ग चबार नीच अवगुन बिसारै नांहि,
गंग भ्रङ्ग मलय समांन करि देति हैं।
चिंतामनि पारिजात पारिस मुकनसिंघ,
दीनन के दारिद को दूरि करि देत हैं ॥

टीका—सूंम हीरा पाषांन बन्यो तासैं एक पद कठोर लाग्यो, सज्जन सुजांन संत कोमल तासैं एक पद सचेत लाग्यो। कांमी षल तासैं एक पद अधीर लाग्यो। सागर उदार बीर तासैं धीरज पद लाग्यो। उर्ग जो साप चबार चुगल व नीच कर्मी तासैं अवगुन नहीं बिसारनूं एक पद लाग्यो। गंग भृंग मलय तासैं समांन पद लाग्यो। चिंतामनि पारिजात पारिस मुकनसिंघ वर्णनीय है तासैं दारिद को दूरि करनूं एक पद लाग्यो यातैं दीपक जानिए। (श्लेष यथा)

कवित्त।

सुमन तिहारे ओगि ल्याए हम बेचबेकों,
माधवेस कीमति को कम न करोहगे।
जेवर हमारे पासि बहुत अनूप भूप,
जिनके प्रकास तैं उदार मन मोहगे ॥
गाहक निगाह तैं घनेरे मोल खोहगे तो,
छोगा ह्वै छतीसन के सीसनी पैं सोहगे।

लीजिए तिहारि सोष हम तो कहत नांहिं,
मेरो वित्त ल्योहगे तो मोकों वित्त द्योहगे ॥

टीका—सुब्रन सोना सुब्रन अक्षर, जेवर गहिना जेवर अलंकार, प्रकास मोल, दोनां में एक अर्थ लाग्यो यातैं श्लेष। कबिसुर कवित्त बेचैं हैं फिर नटै हैं हम तो कहैं नहीं तुम ल्योही पै तुमारी सोभा है। यहां निषेधाभास यातैं आक्षेप अलंकार। कवित्त को पलटा कियो यातैं परिवृत्ति जानिए।
(कारनमाला यथा)

कवित्त

माधवेस कीनूं तप यातैं यह राज पायो,
राज पायबे तैं सब नीति बरताई है।
नीति बरताय कूर कंटक निकार दियो,
कंटक निकारबे तैं रैति सुष पाई है ॥
रैति सुष पायबे तैं पुत्र को प्रवाह बढ्यो,
पुत्र को प्रवाह बढि साष उपजाई है।
साष उपजायबे तैं द्रव्य को भंडार भर्यो,
द्रव्य के लुटायबे तैं कीति छिति छाई है ॥

टीका—प्रथम कारन तैं कारज उपजैं फिर कारज ही कारण हो तो जाय तहाँ कारनमाला जानिए। (संभावना यथा)

॥ कवित्त ॥

सुजस तिहारो जो न होतो देस देसन में,
तो नरेस उजल मयंक मांन लहितो।

भांन जो न होतो तो तिहारो तेज भांन होतो,
  चंद्र जो न होतो तो तूं प्रभुता निबहतो ॥
कर्न जो न होतो दांन सुवरन को कर्नहार.
  तो गुपाल कोन के समांन तोहि कहितो ।
सचिव तिहारो मुकनेस जा कुमेर होतो,
  तो दरिद्र भूमि छाड़ि औरें लोक रहतो ॥

॥ कवित्त ॥

माधवेस तो समांन दांनी हरचंद होतो,
  विक्रम नरेस तासें कमती बषांनिए ।
तेरे समांन दांन द्वापर में करन देतो,
  दांन करिबे को एतो गरब न आनिए ॥
भांनुकुलभांन तोहि कहत गुपाल दांन
  देत बलिदांन वकी उपमां अपानिए ।
लंगर लछार परदारन सें प्रीति ठांनी,
  भोज तो तिहारे आगे रंक सो बषानिए ॥

टीका – इत्यादि कवित्तमें अधिन । नूंसिमऐसें जानिएक
(उन्मीलित यथा)

॥ कवित्त ॥

माधव नरेन्द्रजी तैं केते गज बाज दीनें,
  दीनीं पवसाक तैं तमांम जरतारी की ।

जिनकी प्रभा की जोति सांनी जाय सागर में,
नीर छीर पवत मुराल गिरधारी की ॥
उज्जल समांन दोउ छुवत हिमालै जांनि,
पायनि पिछांनि छिति पारद पषारी की।
कहत गुपाल सांझ मिलिगी जुन्हाई मांझ,
भांन के उदै पिछांनि कीरति तिहारी की ॥

टीका-इत्यादि कवित्त में जुन्हाई सुपेत कीरति सुपेत दोनूं मिलाई सो प्रभाती जुन्हाई मिटि गई कीरति बनी रही दिन में कीरति की जांनि परी यातैं उन्मीलित जानिए। (लेश यथा)

कवित्त।

कोऊ कवि ऐसे बरजोरी गजराज लेत,
कोऊ वित्त कारिज बिष बानी कहत हैं।
कोऊ कवि मांगत हैं भूषन जवाहर के,
लेहूँ यह स्याति बोलि दांवन गहत हैं ॥
कोऊ कवि रूस तरिसात रूस रात जात,
करकैं बिवाद अनहोवत चहत हैं।
कुटिल कुजीव कवि कोऊ कटु बैंन बोलैं,
दांनी नृप माधवेस सब की सहत हैं ॥

टीका—राजा में दांन दैनूं गुन तासैं बिषबानी कटु बचन सहनूं दोष भयो यातैं लेस जानिए। (अत्युक्ति अलंकार यथा)

कवित्त ।

आघ भयो अंतको हिमंत को निदाघ भयो,
कंत को वियोग सुष संपति विडरिगे ।
ऊरधनु सासन तैं पवन प्रचंड वेग,
डोलत अडोल गिर पाहन बिथुरिगे ॥
अवनि अराम पुर बास भोत पोबन से,
बिरह कसांन बनवाटिका प्रजरिगे ।
माधवेस तेरे अरि नारिन के नैन धार,
सूके सर ऊसर समस्त नीर भरिगे ॥

टीका—अद्भुत झूँठी बात कही अरि स्त्रीन के नैन धार जलैं सूके सर ऊसर भरे सो मिथ्या है, अत्युक्ति में मिथ्या होत है कवि कल्पित झूंठ बोलना ध्वनि में राजा बलिष्ठ जानिए मिथ्या वर्णन कियो यातैं अत्युक्ति जानिए । (प्रस्तुतांकुर यथा)

कवित्त ।

सरित बिसूके सरऊ समस्त सूकै,
दीरघ समुद्र भो निकांम षार भरकैं ।
कहत गुपाल दांन मेघ झर लायो नांहि,
ग्रीषम तपायो तन लायो प्यास मरकैं ॥
आयो तकि तोहि बन हेरि चहुँ ओरन को,
बासुर बितायो नीठि तेरी आस करकैं ।
तेरो तोय मधर अथाह पैं न पूगें कर,
ऊंजर कहाँ लों तन उद्र नीर छिरकैं ॥

टीका—यहाँ हाथो को बचन रूप से प्रस्तुति तामें काहू कबि की उक्ति राजा से अस्तुति फुरै हैं यातैं प्रस्तुतांकुर अलंकार जानिए। याकों अन्योक्ति भी कहै हैं और सैं कहैं प्रसंग और पैं लगैं।

दोहा।

गुन्निसै छब्बीस कै, कृष्ण पक्ष मघो मास।
भांन बार की सप्तमी, प्राची भांन प्रकास॥
सिषरोत्पति पीढ़ी सबै, दांनवीर जुत जांनि।
कवि चारण गोपाल कृत, पूरन ग्रंथ प्रमांनि॥

इति श्री कविया गोपालकृत पीढ़ी वार्तिक सिषर वंसोत्पत्ति ग्रंथ समाप्ति॥

संवत् १९५९ इदं पुस्तकं भूंभनूं नाम्नि ग्रामे जोशी त्यवटंक धर कन्हैयालाल शर्म्मा न्यायशालाधिपस्य नारायणोत्तर पद श्री हरिशर्म्मणः कृपयाऽलेखि। तत्तु प्रत्यहं शुभं प्रयच्छतु वाचकाना मित्यलम्।

पृष्ठ	छंद संख्या	अशुद्ध	शुद्ध
२२	२३२	रीऊके	रीझकै
२४	२४३	दहि	दीह
२९	२८६	बंछी	बंदी
”	२९३	ँसों	हंसों
३१	३०८	आया	आयो
”	३११	कुलं	कुल
३२	३२४	बस	बंस
३६	३६४	घाडी	घोड़ी
”	३६६	बासते	वासते
३९	३९७	स्याला	स्यालो
४१	४१९	हास्या	हास्यो
४३	४३३	आरा	उतारा
”	४३८	ता	तो
४४	४५२	घाडां	घोडां
४७	४८२	काव्यो	काढ्यो
४८	४८७	यकायन	यकांवन
५१	५२०	चलेयगो	चल्योगो
५२	५३३	फोर्जा	फोजां
५५	५६६	फिरावान	फिरावन
६४	६६५	चुकोवै	चुकावै
६९	७१२	षास्या	षोस्यां

पृष्ठ	छंद संख्या	अशुद्ध	शुद्ध
"	७१५	बाथ	बोथ
७२	७४४	छ	छै
८७	९००	गलडागं	तल डांणा
८६	८९६	गाडू	गाडर
९३	९७०	फाज	फोज
९५	९८४	वार	सवार
९९	१०२८	बेट	बेटै
१०३	१०७४	ै	नैं
१०६	११०४	तालव	तलाव
११०	११४६	माटा	मोटा
१०८	११३०	अलूसू	अलूणूं
१२६	छंद पहला	निंबुहू में	निंबुहू में
१२७	छंद दूसरा	प्रसस्त्रोस्यो	प्रसस्यो
१३०	छंद पहला	ह्िय	हिय
१४२	पहला दोहा	गुन्निसै	गुन्नीसै
"	"	मन्नी मास	मधुमास
"	अंतिम से पहली पंक्ति	श्रा	श्री

नोट १—पृष्ठ ११, छंद १०० के आगे जो छंदार्ध है अर्थात्–"माथा सैत्तमोत्यां राव सेषाने बधायो"—यह तो मुद्रित पुस्तक में है, परंतु हस्तलिखित प्रति में ऐसा पाठ है:—"मोत्यां सैत मोथ्यां राव सेषा ने

बघायो"। दोनों ही पाठ अस्पष्ट मालूम देते हैं। और इस आधे छंद के अगाड़ी का आधा नहीं है। जैसे अगाड़ी ३९८ का आधा छंद तो है आधा नहीं है। इस १०० के आगे वाले छंदार्ध की संख्या नहीं दी गई है, यदि दी जाय और इसको १०१ समझें तो ग्रंथ में एक छंद की संख्या बढ़ेगी।

नोट २—पृ० ९७ छंद १०१४ के आगे निम्नलिखित छंद पढ़िए—

"दोमूं दोय टक्कर लै पेतसूं मुरडिगा।
देवीसिंघ मुरतज्जाषांन फेरि अडिया ॥ १ ॥
चौथे दिन कागद भडेच ने षिनायो।
देवीसिंघ नावतो सम्हाला फेरि आयो ॥ २ ॥
कागद ने बांचतां भडेच जेज कोनी।
कूंचां दरकूंच फेरि दिल्ली जाय लीनी ॥ ३ ॥
ऐसी भांति मुरतज्जाषांन ने भजायो।
मामलो चुकाबा फेरि दिल्ली सौं न आयो ॥४॥

दोहा।

मुरतज्जे कुंजर मसत कीधो पून प्रकास।
देवै थापट सिंह दी तद भागो पढि त्रास ॥ ५ ॥

गीतका दोहा।

मुरतज्जाषांन तलडांण झरतो मसत,
झाट पग दुहातल सीस झाड़ै।
कोम क्रूर्मसिंह देवेस निमतो कियो;
पडै बधवाव तद चीस पाडै" ॥ ६ ॥

ये छंद छपने से रह गए। इन छंदों के बढ़ने से ग्रंथ संख्या १२१४ + १ + ६ = १२२१ (बारह सौ इक्कीस) होती है। आगे अलंकार छंद इनसे पृथक् ४६ हैं। सब मिलाकर १२६७ छंद हैं।

नोट ३—छपाई में बहुत सी जगह पर शब्दों के आद्य अन्त्य अक्षरों को वा शब्दों ही को आपस में मिला दिया गया है। इनको ठीक लिखना वृथा विस्तार समझा जाकर छोड़ दिया है कि पढ़नेवाले अर्थ पर ध्यान देकर पाठ ठीक पढ़ लेंगे।

—:o:—